ISSN : 2436-5017

जापान से निकलने वाली हिंदी साहित्य की प्रथम त्रैमासिक ई-पत्रिका

विशेष आकर्षण
खेल परिशिष्ट

हिंदी की गूँज

वर्ष 2, अंक -7 (जनवरी-मार्च 2022)

हिंदी कल्चर सेंटर, जापान की पहल

हिन्दी की गूँज

संरक्षक

रमा शर्मा जापान

इंद्रजीत शर्मा (अमेरिका)

प्रधान संपादक

रमा शर्मा (जापान)

संपादक

विनोद पाण्डेय

सह संपादक

उपासना सियाग

प्रबंध सम्पादक

कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी (लंदन)

वरिष्ठ परामर्श दाता

डॉ हरीश नवल जी(प्रसिद्ध व्यंग्यकार)

विदेश प्रतिनिधि

कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी(लंदन)
श्वेता सिंह उमा (रशिया)

भारतीय प्रतिनिधि

पूनम माटिया (नई दिल्ली)
डॉ मोनिका देवी (यू पी)
डॉ दिप्ती गौर (मध्य प्रदेश)

सहयोगी प्रतिनिधि

आलोक रंजन पांडेय (लोक बात टी वी)
डॉ पुष्पा रानी(कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी)
डॉ परम प्रकाश (बोध गया यूनिवर्सिटी)

ज्योतिषाचार्य

डॉ विनय भारद्वाज
बोध गया विश्वविद्यालय

तकनीकी सहयोग

जे पी द्विवेदी
गाजियाबाद

संपादकीय कार्यालय

त्सुकुबा सिटी, टोक्यो ,जापान

व्हट्सअप नंबर -00818038529320
00818042417303

ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

Twitter

@hindikigoonj

यू ट्यूब चैनल-

https://youtube.com/channel/UC2XvCU6zq0FKYqVsQsSONkA

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक !

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं ।संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं ।प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका ISSN (जापान) नंबर के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।
विशेषांक ISBN (जापान) के साथ प्रकाशित होंगे

हिन्दी की गूँज

अनुक्रम

संपादकीय

- रमा शर्मा/५

अपनी बात-विनोद पाण्डेय/६

आलेख /निबंध /शोध लेख

स्वीडन में खेल-सुरेश पांडे /२८-२९
बदलाव की गति ---उन्नति अथवा अवनति-पूनम माटिया/२९-३०
खेलः जीवन का उत्तम शिक्षक-सोनिका कुलश्रेष्ठ/३०-३१
टोक्यो ओलंपिक एवं पैराओलंपिक
खेल २०२१-लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव/३१-३२
सिक्किम की जैविक खेती-प्रज्ञा शुक्ल/३६-३७
खेलों का महत्व-सुनीता अग्रवाल/४२
अनुवाद के बहाने-दिव्या माथुर/४२
प्रकृति के यौवन की ऋतुः वसंत ऋतु-डॉ लता अग्रवाल 'तुलजा'/४३-४४
बच्चों में अच्छे संस्कार कैसे डालें-तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'/४४-४५
बौद्ध कालीन भाषिक परिवेश एवं भाषागत विशेषताएं-डॉ जयशंकर शुक्ल/४६-४७
यशोधरा में नारी जीवन-डॉ अम्बे कुमारी/५३-५४

गीत /गजल /कविता

गजल-कपिल कुमार /७
पराजित हो नहीं सकती कभी भी नारियाँ- डॉ ममता बनर्जी 'मंजरी'/७
खेल-सपना सी पी साहू 'स्वप्निल'/८
मेरी कविता-केशव मोहन पाण्डेय/८
हिन्दी- बिरेन्द्र सिंह/९
कृष्ण लीला-शालिनी शर्मा/१२
अपना त्योहार-वंदना यादव /१३
गीत-डॉ चेतन आनंद /१३
कंचो के फब्बारे- अनुपम/१४
तब सर्वत्र हमारा तेज विखरा- डॉ राकेश कुमार आर्य/१५
नेताजी स्टार हो गए- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/१५
सावित्री बाई फुले-मास्टर भूताराम जाखल/१६
हिन्दी की गूंज-रेनू माथुर/१७
हिन्दी भारत की गंगा-समीर उपाध्याय/१७
जिंदगी-डॉ राजपाल (प्राचार्य)/२१
अमन के वास्ते खेलो-डॉ रामवृक्ष सिंह/२४
खेल है जिंदगी-डॉ राकेश छोकर/२४
जीतेगा आत्मविश्वाश-यश देव वशिष्ठ/२५
खेल संस्कृति-डॉ दीप्ति गौड़ 'दीप'/२५
चानू की चांदी-सुश्री इन्दु सिंह 'इंदुश्री'/२५
खेल-संतोष चौबे/२६
खेलेंगे जी जान से-चंचल हरेन्द्र वशिष्ठ/२७
झूलन निशित गोस्वामी-डॉ शिप्रा शिल्पी सक्सेना/२७

काव्य गोष्ठी समाचार /२२-२३

गीत /गजल /कविता

दो मुक्तक-बलराम निगम/२९
स्टेडियम का ड्रेसिंग रूम-सुमीता/३३
खेल-इंदु बरौत/३४
स्वर्णिमा-हिमा- नीलम वर्मा/३४
अनजान राहें- ध्रुवि भट्ट/३८
औरत हूँ-डॉ गीता पांडे/३८
गजल-सुरेन्द्र शर्मा/३९
विद्युत और उपयोग-मोहन द्विवेदी/३९
मेरे आराध्य श्री राम जी - डॉ जयप्रकाश मिश्र/४०
मेरी माँ महान है-कामना मिश्र/४०
यादों की अनमोल पिटारी-श्याम सुंदर श्रीवास्तव 'कोमल'/४१
सुनील छेत्री- डॉ निर्मला शर्मा/४१
एक स्वतन्त्रता सेनानी की व्यथा कथा का वर्णन-डॉ वीणा मित्तल/५०
गजल-आशा पाण्डेय ओझा/५०
गीत-सन्नी भारद्वाज/५५
मै अब तक पास न हो पाया- विनोद पाण्डेय/५६
प्रेम पुजारी- डॉ विजेंद्र पाल शर्मा/५६
तुम मुझसे बात करते रहना-हरप्रीत सिंह 'पुरी'/५७
लोग सियासत के -प्रशांत उपाध्याय/५७

लघुकथा /कहानी /रम्य रचना

कैनवास-डॉ क्षमा सिसोदिया /१६
लखनऊ में एक मौत-दिलीप कुमार/१८-२१
खो खो खो-रोचिका अरुण शर्मा /३५
बंधन से आजाद-डॉ राजीव पाण्डेय/४८-४९
बिटिया पुछे एक सवाल-डॉ सुमन अग्रवाल/५१
अनुकूल संदेश-विपिन भट्ट/५१
प्रतीक्षा-डॉ उषा अग्रवाल/५२

पुस्तक चर्चा/समीक्षा

पूर्वोत्तर के हिन्दी रचनाकारों के संघर्ष और सजगता से साक्षातकार है पंकज मिश्र अटल की पुस्तक- अरविंद पथिक /१२

व्यंग्य

एक हाफलाइनर- आपकी नजर- डॉ हरीश नवल /९
चरण स्पर्श - डॉ हरीश नवल /९
हमारे जमाने के पिताजी-अरविंद पथिक/१०-११

अंक के चित्रकार / ५५

हिंदी को लेकर जापान में जब कार्य प्रारम्भ किया तो उस वक्त मन में यह विचार था कि जापान और भारत की साझा संस्कृति पर भी खूब कार्य करुँगी । हिंदी की गूँज को जब जापान से प्रकाशित प्रथम हिंदी की पत्रिका का श्रेय मिला तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरा प्रयास सार्थक हो रहा है इसे और मजबूती से आगे बढ़ाना है । जापान में खेलों का बड़ा महत्त्व है और जब ओलपिक की शुरुआत हुई तभी मैं चाह रही थी कि खेल साहित्य पर पत्रिका का अंक समर्पित हो लेकिन तमाम प्रयास के बावजूद उस वक्त संभव नहीं हो सका । इस वर्ष जब जनवरी से मार्च के अंक पर काम शुरू हुआ तो खेल पर प्राप्त रचनाओं का संकलन शुरू किया और इसे खेल परिशिष्ट का नाम दिया गया । चूँकि पत्रिका में हिंदी और साहित्य को प्राथमिकता देना था इसलिए सारी की रचनाओं का खेल से सम्बंधित होना संभव नहीं है । मैं खेल परिशिष्ट के लिए सभी रचनाकारों का आभारी हूँ जिन्होंने खेल पर रचनाएँ भेज कर पत्रिका अपनी उपस्थिति दर्ज की ।

पिछले दो महीने में मेरा दो बार भारत में आना हुआ और यहाँ कुछ दिन रहने के दौरान बहुत चीजों का खट्टा-मीठा अनुभव रहा । एक अनुभव जिस पर मैं कुछ कहना चाहती हूँ वो यह कि भारत के बुजुर्गों की दशा बहुत सोचनीय होती जा रही है । कोरोना काल में यह चीजें स्पस्ट रूप से सामने आयी जब बुजुर्ग दम्पति अपने बच्चों से दूर रहते हुए रोगग्रस्त हुए तो उनको अस्पताल ले जाने वाला भी कोई नहीं मिला । सौभाग्यशाली थे वो बुजुर्ग जो समय पर किसी पड़ोसी या रिश्तेदार की मदद से अस्पताल जा सके । कोरोना से अलग भी रोजमर्रा की स्थिति में बुजुर्ग अकेलेपन के शिकार हो रहे हैं । इसका एक कारण यह है कि वो बच्चों के साथ रह नहीं पाते जबकि आर्थिक जरूरतों के लिए काफी हद तक वो बच्चों पर ही निर्भर रहते हैं । ऐसी स्थिति से बचने के लिए अब आने वाली पीढ़ी को ध्यान रखना तो जरुरी ही है ले. किन साथ ही साथ बेहतर होता यदि सरकार भी इस गंभीर समस्या पर कुछ सकारात्मक प्रयास करती । विदेशों में बुजुर्ग अकेले भले रहते हों लेकिन किसी भी मुश्किल में सामना करने हेतु आर्थिक समस्याएँ कम ही आड़े आती हैं ।

अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्षों में अपने बच्चों के लिए ही समर्पित रहने वाले बुजुर्ग बुढ़ापे में अवसाद के शिकार हो रहे हैं ,भारत में पिछले कई वर्षों से अकेले रह रहे दम्पतियों के सुसाइड की खबरे भी आती रहती हैं । ऐसा क्यों हो रहा है ? नयी पीढ़ी के लोग जो अधिक भौतिक सुख की लालसा में अपने माँ-बाप को अपने साथ नहीं रख पाते वो भी दोषी हैं । यदि किसी कारण साथ रखना संभव नहीं तो उन्हें भावनात्मक और आर्थिक समर्थन देना अति आवश्यक है लेकिन ऐसा पूरी तरह दिखाई नहीं पड़ता है । जहाँ आर्थिक स्थिति ठीक होती हैं वहाँ भावनात्मक समर्थन नहीं दिखाई देता और जहाँ भावनात्मक समर्पण हैं वहां आर्थिक स्थिति कमजोर दिखाई पड़ती है । जबकि बुजुर्ग को दोनों चीजों की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि बुढ़ापे में शरीर रोगग्रस्त होता है और मनःस्थिति भी प्रायः अलग होती है ।

इस दुःखद सामाजिक स्थिति से पार पाना जल्द तो संभव नहीं है लेकिन आज की नई पीढ़ी जो आगे चलकर इस विकास समय का सामना करने वाली है वो कुछ योजना तय कर उसके अनुसार कार्य कर सकती है ।सबसे पहले एक अच्छी बचत और कुछ समय रोज स्वास्थ के लिए देना आवश्यक है ताकि आने वाले समय में शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मजबूत रहे और आय का श्रोत न सही किन्तु इतना बचत अवश्य हो कि बीमारी की स्थिति में किसी का मुँह न देखना पड़े । अपनों बच्चों से बराबर भावनात्मक लगाव रखना भी आवश्यक है । वो आपके पास रहें या दूर उनसे बात करना ,उनके प्रति अपने अधिकार और कर्तव्यों का पालन करते रहना भी जुड़ाव के लिए अति आवश्यक है । और सबसे अंत में देश की सरकार भी इस पर कुछ चिंता तो आने वाले समय में बुजुर्गों की स्थिति में सकारात्मक बदलाव होगा और वो अकेले या कमजोर महसूस करने की स्थिति में परिस्थितियों से लड़ने के लिए ऊर्जा स्वयं प्राप्त कर लेंगे । मनःस्थिति में सकारात्मक बदलाव होने से उनका जीवन स्वस्थ और सुखमय होगा,ऐसा मेरा मानना है ।

रमा शर्मा
मुख्य संपादक एवम संरक्षक

अपनी बात

विनोद पांडेय
गाजियाबाद

यूँ तो भारत में चुनाव का मौसम साल भर गरम रहता है लेकिन मामला तब ज्यादा गरम हो जाता है जब चुनाव यूपी-बिहार का हो । यूपी चुनाव जैसे ही नजदीक आया हम सभी ने देखा कि पाँच साल तक सत्तारूढ़ पार्टी के साथ मलाई खाने वाले नेता टिकट कटने की डर से दूसरी उस बड़ी पार्टी में जाने लगे जिसके जीतने की उम्मीद उन्हें दिखाई पड़ती है ।

टिकट कटने का डर मैंने इसलिए कहा कि पाँच साल तक वो कभी उस सत्तारूढ़ पार्टी को छोड़ कर जाने का मन नहीं बना पाते और न ही उस पार्टी के किसी अनुचित लगने वाले कार्यों का विरोध कर पाते । कारण साफ था कि पाँच साल तक तो इनके हाथों में लड्डू रहता था अगर यहीं लड्डू इन्हें आगे भी मिलता दिखाई देता तो ये क्यों छोड़ कर जाते ? इसलिए मेरे ही नहीं बहुत लोगों के मत के अनुसार ये टिकट कटने के भय के कारण ही पार्टी छोड़ कर जाते हैं अथवा इनकी कोई और खास डिमांड पूरी होती दिखाई नहीं देती है । बाकी पार्टी बदलने के पीछे इनके जितने भी तर्क हो वो सब बेमानी है ।

एक बढ़िया उदाहरण देना चाहता हूँ हमारे आईटी फिल्ड में ऐसा अक्सर देखा जाता है कि फलां कर्मचारी नौकरी छोड़ कर दूसरी कंपनी ज्वाइन कर लेता है,जिसको कंपनी स्विचिंग कहते हैं । कहते हैं कि सैलरी और इज्जत ऐसा करने पर ही बढ़ती है । आजकल महत्वाकांक्षी नेतागण पार्टी बदलकर यही कंपनी स्विच करने का काम कर रहे हैं । आज न ही पार्टी सेवा केंद्र रही और न ही नेता जनसेवक । सबको सिर्फ और सिर्फ अपना मुनाफा चाहिए । जैसे कर्मचारियों का मूल एजेंडा पैसा और पद में बढ़ोत्तरी होता है लेकिन वो साफ-साफ बोलेंगे नहीं द्य वो कहेंगे कि इसलिए कंपनी बदल रहे हैं कि अब काम करने का माहौल अच्छा नहीं है या अब सीखने को कुछ नया नहीं है ।

आप देखेंगे तो लगभग हर जगह माहौल तो कई साल से एक ही तरह का है ,लेकिन फिर भी वो कर्मचारी पहले खूब मन लगाकर काम करता है । खूब बोनस और इंसेंटिव उड़ाता है फिर एक दिन अचानक से कहता है कि अब यहाँ काम करने लायक माहौल नहीं रह गया । पता है क्यों ? क्योंकि अब उसको कहीं और से पॉजिटिव सिग्नल मिल रहा है । सब जानते हैं कि उसे दूसरी कंपनी द्वारा मिलने वाला फायदा ,पोस्ट और बढ़ी हुई सैलरी दिखाई दे रही है और अब वो बहाना ढूढ़ रहा है कि वर्तमान बॉस और एचआर जॉब छोड़ने का क्या संतुलित कारण बताया जाय । तो यहीं निकलकर आता है कि माहौल अब ठीक नहीं है ,हमें अपना काम करने नहीं दिया जाता , आपस में पॉलिटिक्स बहुत है इत्यादि इत्यादि ।

ऐसे ही ये नेता भी सिर्फ फायदे के लिए पार्टी में रहते हैं और फायदे के लिए बदलते हैं । इनको दूसरी पार्टी क्या-क्या फायदा दिला रही है वही असली कारण है पार्टी बदलने का, बाकी ये कोई भी कारण दें तो समझो वोट का मामला है ।गहरी राजनीति है । आज अधिकतर नेता यहीं कहते मिलेंगे कि पार्टी हम इसलिए छोड़ रहें हैं कि इस पार्टी में दलित,शोषित,वंचित और गरीब लोगों की उपेक्षा की जाती है । यह जबरदस्त बहाना इसलिए जोड़ते हैं कि उनका वोटबैंक खराब न हो । कुछ खुलकर जातियों का नाम भी गिनवाना शुरू कर देते हैं ,सब केवल माहौल बनाने के लिए या अपने बहाने के लिए कहते हैं । उपेक्षा की अनदेखी का आरोप लगाने वाले नेता ये नहीं बताएँगे कि वो खुद पार्टी बदल-बदल कर आनंद लेते रहे लेकिन दलित,शोषित,वंचित और गरीब लोगों के लिए कुछ नहीं किये । बस वोट बैंक बनाये रखें । इन दलबदलुओं का हर बार आरोप एक जैसा ही दिखेगा ,उसी पार्टी पर आरोप लगा कर भागते हैं जिसके साथ पाँच साल पहले बाजे-गाजे के साथ जुड़े थे और सत्ता में रहकर पाँच साल आनंद लिए थे ।

पीड़ित ,शोषित ,वंचित की अनदेखी वाली अगर सही है तो आप पहले उस पार्टी के साथ क्यों जुड़े ? और पाँच साल तक आपका खून क्यों नहीं खौला ? दरअसल ये सब लालची लोग ये तो नहीं कह सकते कि दूसरी पार्टी बढ़िया प्रलोभन मिल रहा है , लाभ अब उधर ज्यादा है । जनता बदलाव चाहती है तो थोड़ा जोर उधर लगा कर ,अब उसी पार्टी के साथ मलाई खाया जाए ।ऐसे लोगों लिए सबसे आसान भावनात्मक टारगेट दलित,वंचित और शोषित ही लगते हैं तो बस मुँह खोला नहीं बोल दिया ।ज्यादातर ऐसे दलबदलुओं के कामों को बारीकी से देखकर आप पाएंगे कि इन्होने अपनी लम्बी राजनीति पारी में किसी के लिए कुछ नहीं किया या बस दिखावे के लिए थोड़ा बहुत कर दिया । आखिर जब उनके हाथ में बहुत कुछ रहता था तब वो उस समाज का विकास क्यों नहीं करते ? उस समय तो ये लोग फर्जी भावनात्मकता दिखा कर के अपने बेटे ,बेटी ,बहु,नाती -पोतों को राजनीति में खूब अच्छे से सेट करने में लगे होते हैं ।गरीब की झोपड़ी ,झोपड़ी ही रही और ऐसे नेताओं के मकान,होटल,मॉल, स्कूल और हॉस्पिटल सब हो गए स दलित और वंचित अपनी मजदूरी से भले साइकिल छोड़ बाईक से चलने लगे लेकिन ऐसे लोग साइकिल से चलकर राजनीति की कृपा से चॉपर में उड़ने लगे स किसका ज़्यादा विकास हुआ ?

ये लोग किसी पार्टी में जाकर कुछ नया नहीं करने वाले हैं, इनको कुछ करना ही नहीं बस अपना उल्लू सीधा करना है ।इनको सवर्णों ,दलितों ,शोषितों ,पिछड़ों के विकास से कोई मतलब नहीं । इनको बस अपने और अपने परिवार के विकास से मतलब है ।ऐसे नेता दलितों और शोषितों का भला तो कर ही नहीं सकते क्योंकि इनकी खुद की दाल रोटी ही शोषितों,वंचितों और गरीबों की वोटों से चल रही है ,अगर उनका विकास इन्होने कर दिया तो कल इनके बेटे और बेटी किसकी दुहाई देकर कुर्सी पर बने रहेंगे । दु:ख तो इस बात का है कि जनता को यह सब दिखाई नहीं देता या देखना नहीं चाहती वर्ना ऐसे दलबदलू लोगों से सवाल कर उनको राजनीति से बाहर खदेड़ना सबसे सही काम है ।

■■

गजल

राज सब खोले होले - होले है
उसकी कातिल निगाह बोले है

माशा अल्लाह देखना उसका
नजरों नजरों में सब को तोले है

मुस्कुराने की उफ अदा तेरी
अब तो गूंगा जुबान खोले है

संदली वो हवा का झोंका सा
खुशबुओं सी हवा में घोले है

उसने फेंका है जाल इक फिर से
फिर से भंवरा चमन में डोले है

■■

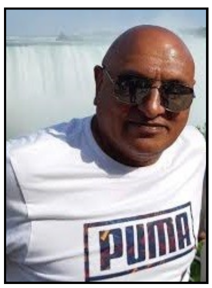

कपिल कुमार
बेल्जियम

पराजित हो नहीं सकती कभी भी नारियाँ

पराजित हो नहीं सकती,कभी भी नारियाँ जग में।
चले तूफान या आँधी,डटी रहती सदा मग में।
नया इतिहास रच कर के,दिखाती है जमाने को।
मिलाकर कांध पुरुषों से, निकलती है कमाने को।
निरंतर पार करती हैं,कँटीली राह पग-पग में।।
पराजित हो नहीं सकती,कभी भी नारियाँ जग में।

उड़ानें हौसलों से भर,गगन से बात करती हैं।
कदम आगे बढ़ाकर के,चुनौती माथ धरती हैं।
कभी दुर्गा,कभी काली,कभी कुंती कभी तारा।
कभी मुमताज बेगम तो,कभी बनतीं जहाँआरा।।
सबल नारी जहां की बन,बढ़ाती पग सतत डग में।
पराजित हो नहीं सकती,कभी भी नारियाँ जग में।

उगाकर घास पत्थर पे,सतत जग को दिखाती है।
गगन के चाँद तारों को,जमी पे तोड़ लाती है।
नहीं मंजूर उनको है,कहे कोई उन्हें अबला।
प्रमाणित कर चुकी जग में,कि होती नारियाँ सबला।
सदा हिम्मत जुटाकर के,जलाती रोशनी मग में।
पराजित हो नहीं सकती,कभी भी नारियाँ जग में।

सहारा नारियाँ होती,कभी जब आपदा आए।
बनी छतरी तनी रहती,गगन पर मेह जब छाए।
निभाकर के विविध नाता,जगत में नाम करती है।
बहन-बेटी-वधू-माता,अनेकों रूप धर ती हैं।
करुण-वात्सल्य रसधारा,बहाती है सदा रग में।
पराजित हो नहीं सकती,कभी भी नारियाँ जग में।।

■■

-डॉ. ममता बनर्जी "मंजरी"
गिरिडीह (झारखण्ड)

अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

स्व.चन्द्रप्रभा शर्मा
(२३ दिसंबर १९४६ - ४ जनवरी २०२२)

कुछ रिश्ते भगवान हमें दे कर भेजता है और कुछ इस दुनिया में आ कर जुड़ते हैं। सास बहू का रिश्ता तो यहीं जुड़ता है, हम पति का चुनाव करते हैं सास का नहीं । सास तो रिश्ते का नाम है पर असल में तो ये रिश्ता माँ बेटी का ही होता है। मुझे मेरी दूसरी माँ के रूप लिये मेरी सास मिली। उनसे मुझे प्यार ही नहीं डाँट भी मिली ताकि जीवन को सही मायने में समझ सकूँ और हर रिश्ते को सही अर्थों में निभा सकूँ ।पिछले दिनों जिंदगी ने कुछ ऐसा झटका दिया कि इस रिश्ते की लड़ी ही टूट गई और मम्मी जी हम सब को बिलखता छोड़ किसी अलग दुनिया में जा बसीं। उनकी तस्वीर ही रह गई हाथों में। जिंदगी में चलने का तरीका सलीका बहुत कुछ सिखाया मम्मी जी ने ।सास नहीं, मेरी माँ थी वो !

एक रिश्ते की पहचान थी वो । जापान में रहते हुए भी कभी उनसे दूर नहीं रही ,मेरी हर परेशानी ,हर चिंता,हर दुविधा में वो मेरे साथ रहतीं थीं । उनका स्नेह और आशीर्वाद मेरी सबसे बड़ी शक्ति थी जो अचानक से क्षीण होती जा रही है । मेरी माँ ,आप बहुत याद आएँगी ,हर पल याद आएँगी । ईश्वर के निर्णय के आगे हम सब विवश हैं लेकिन मुझे पूरा विश्वास हैं आप कहीं भी रहेंगी ,आपका आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहेगा ।**नम आँसूओं से श्रद्धांजलि । नमन !!**

रमा शर्मा,जापान

खेल

खेल, खेल, तरह-तरह के होते है खेल,
खेलो तो होगा स्वस्थ तन-मन का मेल,
जीवन की दौड़ती सरपट-सरपट रेल,
खेलो से होता मनोरंजन,खुशी का मेल।

बाहरी कभी अंदर बैठकर खेलों खेल,
चिंता, तनाव को कमतर करते खेल,
स्फूर्ति, कुशाग्रता का बैठता तालमेल,
खेलों से होता अनुशासन,धैर्य का मेल।

चरित्रनिर्माण कर विनम्र बनाते खेल,
रोगों व घबराहट से बचाते हमें खेल,
नियम, समयबद्धता का यह तालमेल,
सक्रिय, समूह में रहना सिखाते खेल।

व्यक्तित्व विकास,नेतृत्व सिखाते खेल,
गुणवान बना, वित्तीय दृढ़ता देते खेल,
शारीरिक, मानसिक सुदृढ़ता का मेल,
कौशल विकास, उन्नति का होता मेल।

जीते तो वाहवाही दिलवाते है खेल,
हारने से नए सबक सिखाते है खेल,
सम्मान व पहचान दिलवाते है खेल,
जीवन हार-जीत, धूप-छाँव का मेल।

स्पर्धा के इर्द-गिर्द घूमती खेलो की रेल,
राष्ट्रप्रेम की भावना बलवती करते खेल,

सपना सी.पी.साहू "स्वप्निल"
इंदौर (म.प्र.)

मेरी कविता

लाख चाहने पर भी
घर नहीं ला पाता
खुशियाँ एक छटाक भी जब
मरहम बनकर सहलाती है
कविता तब
मेरे घाव को।

चलते चलते जीवन-पथ पर
छला जाता हूँ जो कभी
किसी साथी से कही
देती है नव-गति हमेशा
कविता ही तो
मेरे पाँव को।

देखते देखते सूने द्वार को
नहीं बुलावा आता माँ का
कभी किसी भी हाल में अब
तब कर देती आयास ही छाया
ममता-सिक्त आँचल का अपने
कविता मेरे भाल पर।

ढोते ढोते रिश्ते-नातों को
बंजर होने लगती भावना
संबंधों की सजग धरा पर
असहज हो जाता मेरा मन
उगते बीहड़ नागफनी का
बहुत डराते हैं आँखों को
तब भी तो नहीं देते तर्जनी
कभी किसी भी बहाने अब
तब देती है सम्बल कविता
पिता अचानक आपके जैसे।

सदा संगिनी यह कविता है
मेरा बचपन
मेरा बेटा
बेटी की किलकारी कविता
सारा कुनबा
गाँव-शहर सब
मेरी कविता धरा मात्र है
बंधु-बांधव सबको बनाती
ललक है रखती कहते रहने की
शेष आस अच्छा कहने की
और पलटकर देख के जाना
कविता
प्रियतमा के विदा का क्षण है।

केशव मोहन पाण्डेय
नई दिल्ली

एक हाफलाइनर : आपकी नजर

रामलीला के दिनों में सबसे अधिक चर्चा होती है रावण के कद की ।रामलीला कमेटियाँ अपने अपने रावण के विषय में प्रचार करती हैं... कि इस बार उनका रावण कितने फुट का है ..कोई बीस, कोई चालीस या पचास और कोई बड़ी कमेटी सौ फुट के रावण का भी प्रचार जोर शोर से करती है ..राम का कद कितना होगा ,यह कोई कमेटी नहीं बताती । दशहरा के दिन जब "रावण दहन" होता है...अद्भुत दृश्य होता है....... मंच पर राम धनुष बाण थामे बेचैनी से मुख्य द्वार की ओर टकटकी लगाए होते हैं जहाँ से "वी आई पी " को पधारना होता है ...जब "वी आई पी" मंच पर आते हैं... राम शीश नवा कर अपना धनुष बाण उन्हें सौंप देते हैं..... वी आई पी तालियों की गड़गड़ाहट में रावण पर अग्निबाण छोड़ते हैं... रावण धू धू कर जलने लगता है,राम वी आई पी से हाथ मिलाकर सट कर कैमरा को देखते हुए फोटो खिंचवाते हैं..... रावण जलता है पर मरता नहीं.....जब तक राम अपना धनुष तथाकथित वी आईपियों को सौंपते रहेंगे,रावण जलेगा जरूर पर मरेगा नहीं

रही बात कद की...हजारों लाखों फुट का भी रावण हो जाए ,उसका कद राम से सदा छोटा ही होगा ।

डॉ हरीश नवल
दिल्ली

चरण स्पर्श

सदियों पहले जाने किसने आदर दिखाने के लिए पैर छूने का रिवाज बनाया ,जिसे सांस्कृतिक शब्दों में "चरण स्पर्श" कहते हैं । यह मानव के आचरण का द्योतक है । इसमें एक योग जैसी क्रिया होती है ,जिसके अनुसार जो व्यक्ति जिसको आदर देना चाहता है ,उसके पैरों को झुककर छूता है । आजकल पैर तो कम ,जूते चप्पल अधिक देखें जाते हैं । अतः चरण स्पर्श के स्थान पर जूते या चप्पलों का स्पर्श अधिक होता है ,जिसे सांस्कृतिक शब्दों में "पदत्राण-स्पर्श" कहा जाता है लेकिन सवाल यह उठता है कि आजकल पदत्राण भी कहाँ हो पाता है ,आदर देने वाला आदर लेने वाले के घुटनों से नीचे नहीं पहुँचता । इस क्रिया को सांस्कृतिक शब्दों में "घुटना-स्पर्श" कहा जा सकता है । बहुधा नौजवान घुटने तक भी अपने कर-कमल को नहीं पहुँचाते ,वे नाम मात्र झुककर अपनी बाहें सीधा करके आदर देने की रस्म पूरी करते हैं । इस क्रिया में उनका हाथ आदरेय की कमर के सामानांतर लगभग एक फुट की दूरी पर रहता है । इसे सांस्कृतिक शब्दों में "चरण स्पर्शाभिनय" का नाम दिया जा सकता है ।

डॉ हरीश नवल
दिल्ली

हिन्दी

हिन्दी में हम पढ़ें-लिखें , बोलें हिन्दी भाषा,
एक देश,कानून एक, एक भाषा की आशा।
आओ मिलकर लिखें,हिन्दी की नयी कहानी,
जय जय हिन्दी,जय हिन्द, जय हिन्दुस्तानी।

अंग्रेजों से खूब लड़ी,हिन्दी भाषी लक्ष्मी बाई,
शत्रु भागे हिन्द छोड़,देख सर पर सामत आई।
हर भाषा से रखे मित्रता,हिन्दी नहीं अभिमानी,
जय जय हिन्दी, जय हिन्द, जय हिन्दुस्तानी।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख,ईसाई बोले हिन्दी बोली,
हिन्द के लिए शहीदों ने सीने पर खायी गोली।
भाषा से घृणा नहीं, प्यार हिन्दी से है निभानी,
जर जय हिन्दी, जय हिन्द, जय हिन्दुस्तानी।

सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलयुग हिन्दी चारों युग में,
युगों-युगों से हिन्दी ऋषि-मुनियों के गुरुकुल में।
हिन्दी में सुनते बच्चे दादी से नित्य नयी कहानी,
जय जय हिन्दी, जय हिन्द, जय हिन्दुस्तानी।

संस्कृत,हिन्दी की जननी , ऊर्दू है प्यारी बहना,
प्यार का रिश्ता है तीनों में हिन्दी माने कहना।
गले मिली दोनों बहना,माँ को है तिलक लगानी,
जय जय हिन्दी, जय हिन्द, जय हिन्दुस्तानी।

हर भाषा से प्यार हमें पर ,सबसे प्यारी हिन्दी,
पढ़ना-लिखना बहुत सरल,हर भाषा से संधि।
मातृभाषा ,राजभाष,बने राष्ट्रभाषा हिन्दी रानी,
जय जय हिन्दी ,जय हिन्द ,जय हिन्दुस्तानी।

बिरेन्द्र सिंह (राज)
नोएडा
गौतम बुद्ध नगर ,उत्तर प्रदेश

हमारे जमाने के पिताजी

जब मैं 'हमारा जमाना' या 'हमारे जमाने' शब्दों का इस्तेमाल करता हूँ ,तो यह प्रश्न उठना बहुत स्वाभाविक है, कि ये 'हमारा जमाना' है कौन सी बला ? 'हमारा जमाना' गुजर चुका है या फिर खुद के अभी तक जवान होने के गुमान की तरह 'हमारा जमाना' भी बदस्तूर और बाकायदा जवान है .

जब मैं इस बारे में और सोच-विचार करने लगता हूँ तो मुझे मशहूर और मरहूम अभिनेता फीरोज खान साहब का एक फिल्मी संवाद याद आने लगता है ----''..अभी हम जिंदा हैं ". गोया जिंदा और जिंदादिल लोगों का जमाना कभी जाता नहीं, इसलिए मेरा यह कहना कि 'हमारे जमाने के पिताजी' स्वतः ही सवालों के घेरे में आ जाता है .परन्तु जब मैं अपनी ही तरह जवानी के रास्ते पर हांफते-हारते यारों-दोस्तों , नाते-रिश्तेदारों और सहकर्मियों को ठंडी आह भरकर ' हमारे जमाने' की दुहाई देते देखता हूँ, तो भरे मन से ही सही ,यकीन करने पर मजबूर हो जाता हूँ कि जब 'इनका जमाना' गुजरे जमाने की चीज हो गया है, तो हमारा भी गुजर ही गया होगा.

जब मैं आजकल पिता ,पापा या डैडी को देखता हूँ तो पाता हूँ कि हमारे जमाने के मुकाबले आजकल के पिताजी ,पापा या डैडी के रूतबे में खासी गिरावट आ गयी है .और जब मैं इस गिरावट के कारणों की पड़ताल करता हूँ तो पाता हूँ कि हमारे जमाने के पिताजी रुतबे और रूआब के मामले में अगर मुगले आजम थे तो आज के पिता की हैसियत अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर जैसी हो गयी है .

घर की सरकार में राष्ट्रपति की स्थिति में स्वयं को रखकर जो पिता खुश हैं उनकी जान बची हुयी है वर्ना जो अपनी चलाना चाहते हैं उनकी सत्ता को उनके बच्चे एक झटके में ऐसे उखाड़ फेंकते हैं जैसे दुनिया के अधिकांश देशों से वहां की जनता ने राजशाही को उखाड़कर फेंक दिया है. समझदार पिता अन्तर्राष्ट्रीय मसलो जैसे 'भारत की विदेश नीति' , 'शीत युद्ध की नई आहट' आदि पर मसलों पर अपनी राय मान लिए जाने से ही खुश हो जाते हैं .जबकि घर की समस्त आय को व्यय करने जैसे नितांत महत्वहीन मुद्दों पर बच्चों और बच्चों की मम्मी के निर्णय में टांग अड़ाकर वे अपने रुतबे को खतरे में डालने का जोखिम नहीं उठाते .

अब से तीस पैतीस बरस पहले तक पिता का जो रूतबा था, उसकी कल्पना पिता को दोस्त और यार मानने वाले आजकल के बेटे-बेटियां कर ही नहीं सकते. उस जमाने में कितना भी उदार और सहिष्णु पिता क्यों ना रहा हो परन्तु पिता-पुत्र संवाद हमेशा ही तल्खी और तुर्सी भरे ही रहते थे . पिता का जलबो-जलाल हमारे जमाने तक मुगले आजम जैसा ही था .खनकती हुयी दमदार आवाज में हर पिता उस जमाने में शहंशाह अकबर की तरह ही अपने विद्रोही बेटे सलीम को उसकी हैसियत और औकात बताने को हमेशा तैयार रहता था . यह कहना मुश्किल है कि.हिंदी फिल्मों को देखकर हमारे जमाने के पिताओं ने अपना आतंक कायम रखना सीखा था या फिर पिताओं को देखकर ही हमारे जमाने में हिंदी फिल्मो में पिता का चरित्र लिखा जाता था .

पर एक बात तय है कि हमारे जमाने में अधिकांश भारतीय परिवारों में पिता का मुगले आजम वाला जलवा कायम था . मुगले आजम के सलीम की तर्ज पर हमारे जमाने के बेटे भी गाहे -बगाहे बगावत का झंडा उठाने से पीछे नहीं हटते थे .पर मुगलिया दौर की तरह ही अंततः हमारे जमाने के सलीम की नियति भी मुगले आजम के आगे सिर झुकाना ही होता था . कई बार तब बड़ी अजीबो दृगरीब स्थिति उत्पन्न हो जाती थी जब हम अपने किसी मित्र के समक्ष उसके पिता की उदारता और सह्रदयता की प्रशंसा कर रहे होते थे और पिता के रूतबे की आंच में झुलसा मित्र हमारी तारीफ से भीतर तक जलता -सुलगता राख होता रहता था .उस जमाने में मेरे साथ भी एक ऐसा ही वाकया पेश आया .

हमारे एक मित्र थे शुक्ला जी .शुक्ला जी ने अपने गाँव में किसी खास मौके पर हमारी पूरी मित्रमंडली को आमंत्रित किया .गाँव में शुक्ला जी के पिताजी की उदारता और सह्रदयता, हम अपने-अपने पिता से सताए हुए लालों को सुखद आश्चर्य से भर रही थी . शुक्ला जी के पिताजी की मधुर वाणी हमें कर्णप्रिय कम हमारी शुक्ला जी के भाग्य से ईर्ष्या करने का कारण अधिक बनती जा रही थी ,हमारी हर जरूरत के प्रति शुक्ला जी के पिताजी की अतिरिक्त सजगता, बेटे के मित्रों से उनका मधुर मित्रवत व्यवहार हमे आशंकित कर रहा था .

हम यकीन ही नहीं कर पा रहे थे कि इतने दयालु और शहद से मीठे पिता यहीं इसी धरती पर पाए जाते हैं . हमने उन्हें बहाने से छू छू कर भी देखा कि वे कही एलियन तो नहीं .जब हर तरह से यकीन हो गया कि शुक्ल जी के पिताजी भी हमारी तरह ही इस म्रत्यु लोक के वासी हैं और मंगल गृह से नहीं मंगाए गये हैं ,तब इस विकट शंका का समूल समाधान करने की गरज से हमारी मित्रमंडली के सबसे धीर -गम्भीर सदस्य गुप्ताजी ने शुक्ला जी से ही पूंछ लेने का मन बनाया .

प्रश्न की भूमिका बनाते हुए गुप्ता जी ने कहा- " वाह पिताजी हों तो शुक्ला जी के पिताजी जैसे हों वर्ना ना हों .मैं तो घर पहुँचते ही माताजी से आग्रह करूँगा कि वे मुझे शुक्ला जी के पिताजी को अपना पिता बनाने की अनुमति प्रदान कर दे ."

पिताजी की प्रशंसा से इतनी देर से जल फुंक रहे शुक्ला जी से अब और नहीं रहा गया .और वे बोल ही पड़े --" गुप्ता जी आप पापा को अपना पिताजी बनाना चाह रहे हो तो आज ही बना लो .और जब इन्हें बाप बना लोगे तब पता चलेगा कैसे हिटलर बाप से पाला पड़ा है .?" शुक्ला जी के रोष से भीतर ही भीतर हमे अपार संतोष की अनुभूति हुयी .हम जान गये कि परमात्मा ने पिता प्रदान करते समय कोई भेदभाव नहीं बरता था.शुक्ला जी के भाग्य में पिता अंकित करते समय भी विधाता ने वही कलम इस्तेमाल की थी जिसका प्रयोग उसने हमारे लिए पिता का नाम लिखते समय

किया था .ये तो हमे बहुत बाद में अनुभव हुआ कि हमारे जमाने के सारे पिता रूतबा जताने और उसे बनाये रखने के मामले में एक जैसे होते थे .

हमारे जमाने में लगभग हर घर में पिता के घर के भीतर प्रवेश करते ही घर में अघोषित कर्फ़्यू लग जाता था .हमारे बीच संवाद का सेतु माँ ही होती थी .वह हमारी जरूरत के हर प्रस्ताव को पिताजी तक पहुँचाने का जरिया होती थी ..हमारे उचित-अनुचित प्रस्तावों को कब और कैसे पिताजी के समक्ष रखना है यह कार्य अन्तराष्ट्रीय राजनय से कम कौशल की मांग नहीं करता था .पर माँ जानती थी कि कब नर्म पड़ना और कब गर्म, कब उखड़ना है और कब संभलना .माँ ही हमारी 'स्पोक्स पर्सन' होती थी .

पिताजी के ना कहने के बाद उनसे कुछ भी निकलवाना परमाणु विस्फोट के बाद देश पर लगे प्रतिबंधों के बीच अन्तराष्ट्रीय सहायता पा लेने जैसे कठिन कार्य की तरह ही मुश्किल होता था परन्तु माँ अपनी कूटनीति से हमारे लिए पिताजी से कुछ न कुछ सुविधायें , पैसे और अनुमतियाँ झटक ही लेती थीं .

. मेरे पिताजी उस जमाने के पिताओं का संपूर्ण प्रतिनिधित्व करते थे .वे हमारे पहले गुरु भी थे .गाँव के स्कूल में पाकड़ के पेड़ के नीचे टाट पट्टी पर बैठकर हमने शिक्षा ज्यादा प्राप्त की या लोट ज्यादा लगाई (पिताजी के हाथों पिटते हुए) यह मैं आज तक तय नहीं कर पाया .आज भी जब मैं दर्पण में अपने लंबे कानों को निहारता हूँ तो मुझे विश्वास हो जाता है कि गणेश जी के बड़े बड़े कान हाथी का सिर लगा होने के कारण बड़े नहीं हैं .अपितु भगवान शंकर ने बाल गणेश को पढाते समय यत्न पूर्वक इन कानों को वैसे ही बड़ा किया है जैसे मेरे पिताजी किया था .

हमारे पिताजी कवि थे और मुझे भी उनकी ही तरह कविता करने का वरदान (ऐसा मैं मानता हूँ)प्राप्त है .हमारे जमाने में मोबाईल कम ही आये थे और टेलीफोन के लिए पड़ोसी के नम्बर जिसे हम पी पी नम्बर बोलते थे पर निर्भर करते थे .इसलिए जब मैं कालेज की पढाई के लिए गाँव से शहर आया तो हम पिता पुत्र के बीच संवाद का माध्यम अंतर्देशीय पत्र बना .अक्सर महीने में एक दो बार पिताजी के निर्देश पत्र के माध्यम से आते और मैं पोस्टकार्ड द्वारा उनके अमल किये जाने की सूचना बिना नागा भेजता रहता .एक बार पिताजी ने अपने कवित्व पूर्ण पत्र में संस्क्रत के श्लोक के साथ नैतिकता के आदर्शों से ओतप्रोत पत्र भेजा जिसे पढ़कर मेरे भीतर का कवि भी जाग गया .मैंने कविता की जिस भी विधा मेरा मतलब दोहा ,चौपाई या फिर मुक्तक छंद का इस्तेमाल किया हो पर उसके प्रत्युत्तर में पिताजी का वार्निंग लेटर जैसा पत्र प्राप्त हुआ .पत्र का निहितार्थ यह था कि जब कविता लिखने की तमीज नहीं है तो शब्दों पर रहम कर जो भी लिखना हो, सीधे सीधे लिखा करो .

ऐसा नहीं था कि पिताजी की हिदायतों और चेतावनियों को सिर्फ मैंने ही झेला था मुझसे पहले मेरे बड़े भाई साहब भी ऐसे ही एक हादसे का शिकार हो चुके थे . उन दिनों हमारे बड़े भाई साहब ने इंटरमीडिएट की परीक्षा पास कर ग्रेजुएशन करने के लिए शहर के कालेज में दाखिला लिया था .उस जमाने में पिताजी ने जो धनराशि अपने मासिक बजट में से भाई साहब के लिए स्वीकृत की थी उसे मुकाबले मनरेगा में मजदूर को मिलने वाली राशि बहुत आकर्षक लग सकती है .

मुझे याद है कि भाई साहब ने एक बार अपनी जेब की खस्ता हालत और जरूरतों का वास्ता देते हुए रामचरित मानस के पात्रों के माध्यम से उद्धरण देते हुए ,एक काव्यमय पत्र पिताजी को लिखा था .भाई साहब ने जो पत्र लिखा उसका लब्बो लुआब यह था कि शिक्षा ग्रहण करने के नाम पर आपने मुझे ये जो शहरी वनवास दिया है, उससे जूझने की सामर्थ्य उनमे नहीं है .जरूरतों के राक्षसों से लड़ने के लिए धन की दैवीय सहायता अविलम्ब भेजिए .पिताजी ने धन तो खैर क्या भेजा उस मार्मिक काव्यात्मक अपील का मर्मान्तक प्रत्युत्तर अवश्य लौटती डाक से भेज दिया जिसकी दो पंक्तियाँ मुझे आज भी याद हैं .पंक्तियाँ यूँ थीं ---

अर्थ से असमर्थ हूँ मैं ,तुम मूर्खता के धाम भी हो
यदि नहीं दशरथ हूँ मैं ,तो नहीं तुम राम भी हो

एक बार हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि भवानी प्रसाद मिश्र की एक कविता पढ़ी .जिसमे कवि ने पहले तो पिताजी के आतंक और रूतबे का ही जिक्र किया था परन्तु अंत में कवियों वाली चतुरता दिखाते हुए लिखा -

पिताजी भोले -बहादुर, गीत मन,नवनीत सा उर .

यह पंक्तियाँ पढ़कर मेरा मन किया कि कहीं भवानी दादा से मुलाकात हो जाये तो यह जरूर पूंछू कि दादा ऐसा भी क्या पिताजी से डरना जो आपने इतना नवनीत लेपन कर डाला .

आज जब मैं अपने बच्चों को देखता हूँ तो अक्सर अपनी तुलना अपने स्वर्गीय पिताजी से करने लगता हूँ .मैं पिताजी के आतंक और रूतबे की छाया मात्र भी नही हूँ .बच्चे तो क्या चूहे से डरने वाली मेरी श्रीमती जी भी मुझे शेरनी नजर आती हैं .बच्चों को अपनी फरमाइश हम तक पहुँचाने के लिए किसी मध्यस्थ की जरूरत तो तब हो जब उनकी पहुँच हमारे बटुए तक ना हो . हाँ !उन्होंने इतना लिहाज अवश्य बना रखा है कि बटुए के पूरा खाली होने से पूर्व बता देते हैं कि फलां चीज लाने के लिए उन्होंने बटुए मे से आखिरी पांच का सिक्का भी निकाल लिया है .बच्चों की इस सदाशयता के लिए मन ही मन हजार तरह से उस परम पिता परमात्मा का आभार ज्ञापित करते हुए अक्सर हम अपने पिताजी के रुतबे और आतंक का स्मरण कर ठंडी आह भरकर रह जाते हैं .

अरविन्द पथिक
बड़ागांव ,शाहजहाँपुर

पूर्वोत्तर के हिंदी रचनाकारों के संघर्ष और सजगता से साक्षात्कार है पंकज मिश्र अटल की पुस्तक

पूर्वोत्तर शेष भारत के लिए पहेली जैसा है .पूर्वोत्तर के साहित्य ,संस्कृति ,खान-पान और जनमानस के बारे में स्पष्ट सोच और प्रामाणिक जानकारी का अभाव है .सही अर्थों में पूर्वोत्तर को जानना है तो पर्यटक की नजर से नहीं ,वहां के साहित्य और साहित्यकार की द्रष्टि से देखना होगा .इस तरह का सफल प्रयास किया है .पूर्वोत्तर में लम्बे समय से रह रहे ,१९६७ में शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश में जन्मे लेखक -कवि पंकज मिश्र 'अटल' ने .प्रचार और शोरगुल से दूर पंकज मिश्र अटल लम्बे समय से रचनाकर्म में रत हैं .मेरा उनसे परिचय तबका है जब मैं छात्र ही था और पंकज जी का प्रथम कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका था .विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में पंकज मिश्र 'अटल' के लेख और कविताएँ प्रकाशित होते रहे हैं .उनके तीन कविता संग्रह 'चेहरों के पार भी' ,'नए समर के लिए' ,'बोलना सख्त मना है' प्रकाशित हो चुके हैं .वर्ष २०२० में आपकी पूर्वोत्तर के हिंदी रचनाधर्मियो पर केन्द्रित पुस्तक 'साक्षात्कार:संभावना और यथार्थ' बोधि प्रकाशन से प्रकाशित हुआ .

'साक्षात्कार :संभावना और यथार्थ' में पूर्वोत्तर के उन्नीस हिंदी रचनाकारों के लम्बे और सारगर्भित साक्षात्कार संकलित हैं .इन पुस्तक का महत्व हम तब तक नहीं समझ सकते जब तक इन्हें प्राप्त करने के लिए लेखक के श्रम और सजगता को न समझें .पुस्तक की भूमिका में ही ले खक ने लिखा है-

पूर्वोत्तर में बहुत अधिक बोलियाँ और भाषाएँ हैं .हर बोली और भाषा का अपना अपना साहित्य है ---पूर्वोत्तर इतना अद्भुत है कि इसको समझने का जितना प्रयास करेंगे ये आपको उतना ही उलझाता जायेगा .,मगर इस पूर्वोत्तर में जितना रचेंगे ,बसेंगे ये उतनी ही सहजता से मन में समाहित होता जायेगा और स्वयं अपनी ओर खींच लेगा ---.

जिन लेखकों रचनाकारों के साथ किये साक्षात्कार इस पुस्तक में संकलित हैं उनमें -अरुणाचल प्रदेश की डॉ जमुना बीनी तादर ,सिल्चर आसाम के गुलशन राय मोंगा ,गुवाहाटी आसाम के डह देवें चन्द्र दास 'सुदामा',जोरहाट आसाम की रूनू बरुवा 'रागिनी तेजस्वी' सिलचर के ही मदन सिंघल ,,आसाम की ही कुंतला दत्त और किशोर कुमार जैन ,जीना बरुवा ,सौमित्र्म , हरकीरत हीर ,डॉ प्रवीन कोच ,डॉ नवकांत शर्मा ,एमी मेहजाफी हुसैन 'आयशा 'कोहिमा नागालैंड के डॉ बी पी फिलिप जुविचु,इम्फाल मणिपुर के राधा गोविन्द थोडं 'कविराज' शिलांग मेघालय की डॉ आनीता पंडा ,आइजोल मिजोरम के डॉ वानमल रेमरू अता राल्ते ,गंगटोक सिक्किम के अर्जुन चामलिंग 'यावा' ,त्रिपुरा के रमेंद्र कुमार पाल शामिल हैं .

वर्ष २०१५ से २०२० तक अत्यंत परिश्रम और शोध के पश्चात इन साक्षात्कारों को वर्ष २०२० में बोही प्रकाशन से पुस्तकाकार स्वरूप में हिंदी पाठकों के समक्ष लाना पंकज मिश्र 'अटल'के हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति अटल प्रेम का परिचायक तो है ही साथ ही साथ उन्होंने अपनी कर्मभूमि बारपेटा आसाम में रहते हुए सम्पूर्ण पूर्वोत्तर के हिंदी रचनाधर्मियों के रचनाकर्म और रचना प्रक्रिया को विस्तृत साक्षात्कारों के माध्यम से सामने लाने का जो महत प्रयास किया है वह स्तुत्य भी है .

मेरा विश्वास है कि पूर्वोत्तर की वरिष्ठ रचनाकार 'हर बच्चे को हक' कविता संग्रह 'की रचयिता 'बनानी माली 'को समर्पित पंकज मिश्र 'अटल' का यह साक्षात्कार संकलन उन्हें हिंदी साहित्य में उनका उचित स्थान दिलाने में सहायक होगा .तीन सौ पांच पृष्ठों की यह पुस्तक जितने श्रम और लगन से लिखी और प्रकाशित की गयी है उसे देखते हुए इसका मूल्य ४९९/-रूपये उचित ही है .पूर्वोत्तर के हिंदी साहित्य के अध्येताओं और शोधोत्सुक छात्रों के लिए यह सन्दर्भ ग्रन्थ का कार्य करेगी .

लेखक -पंकज मिश्र 'अटल',
समीक्षक -अरविंद पथिक
मूल्य-४९९/-
प्रकाशक -बोधि प्रकाशन

कृष्ण लीला

यमुना तट पे कृष्ण कन्हैया,
नृत्य करत है बंसी बजैया।

संग विराजत राधा गोरी,
छवि मनोहर,हैं नवल किशोरी।

लीलाधर की लीला न्यारी,
हिय से हारी राधा प्यारी।

मंद मंद मुस्कान अधर पर,
कृष्ण नाम लिखा हृदय पर।

बिसरत सुध बुध सब राधा की,
जब अधर धरत मुरली कान्हा की।

ग्वाल,बाल,गोपी सम्मोहित,
अवनी,व्योम,विहंग सब मोहित।

गऊन संग विचरण करत,
पशु पक्षी संग संग चलत।

मधुर तान जब कर्ण सुनत,
घर से गोपियाँ निकल पड़त।

है दिव्य कांति मधुबन को आस,
करें सर्वेश्वर कृष्ण महारास।

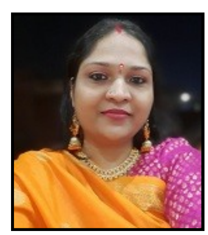

शालिनी शर्मा 'स्वर्णिम'
इटावा, उत्तर प्रदेश, भारत

अपना त्यौहार

आया पंच श्रंखला का त्योहार
आओ जाने इसका सार
पहला दिन धनतेरस का
यम कुबेर धन्वंतरि कास
धनवंतरी के पूजन से
स्वास्थ्य लाभ भी पाया जाता
यम का दीप जलाया जातास
दूसरा दिन नरक चतुर्दशी
या रूप चौदस का
कहते हैं अत्याचारी
नरकासुर का वध
होने के कारणस
१६१०० कन्याओं ने
दीपों की बारात सजाईस
तीसरा दिन है दीपावली
श्री राम के स्वागत में
अयोध्या में खुशी के
दीप जले जगमग जगमग।
घर-घर प्यार के दीप जले
लक्ष्मी गणेश का पूजन करके
आतिशबाजी और
जागरण होता
चौथा दिन गोवर्धन पूजा कास
श्री कृष्णा ने गोकुल की
रक्षा के खातिर
गोवर्धन उंगली पर
उठा लिया था
इंद्र का अहंकार टूटा
शुरू हुई गोवर्धन पूजास
पांचवा दिन भाई दूज का
बहने यम देव की
पूजा करतीस
भाई को तिलक लगाकर
लंबी उम्र की कामना करतींस
और चित्र गुप्त की पूजा होती
लेखन वाणी विद्या का
मांगते हैं वरदानस
हर्षोल्लास से त्यौहार मनाते
मिलती हैं खुशियां अपार।

वंदना यादव
चित्रकूट-उत्तर प्रदेश

गीत

चल-चल उदास मौसम,
तू पास अब न आना।
मुश्किल से गुल खिले हैं,
इनको न फिर सताना।।

चुपचाप सो रही हैं रो-रोके सर्द रातें,
करने शुरू हुए हैं, दिन भी खुशी की बातें,
आँचल हवा का फिर से थामा है खुशबुओं ने,
तम के खिलाफ चुप्पी, तोड़ी है जुगनुओं ने,

लौटी हैं रौनकें फिर,
मत अब नजर लगाना।
चल-चल उदास मौसम,
तू पास अब न आना।।

नींदें नई-नई हैं, सपने नए-नए हैं,
आशा के पंख लेकर, मन-खग निकल गए हैं,
अवसादग्रस्त मुखड़े जो आँसुओं ने धोये,
सुन-सुनके लोरियाँ वे सुन ले अभी हैं सोये,

भयभीत करके इनको,
अब तू न फिर जगाना।
चल-चल उदास मौसम,
तू पास अब न आना।।

रफ्तार फिर मिली है, पतवार फिर मिली है,
मन के सितार को नव झंकार फिर मिली है,
मरहम नया मिला है, मौसम नया मिला है,
अपने भविष्य का फिर, हमदम नया मिला है,

सूरज नया हमें फिर,
पूरब से है उगाना।
चल-चल उदास मौसम,
तू पास अब न आना।।

- डॉ. चेतन आनंद

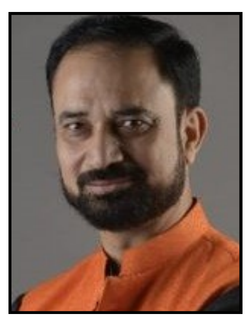

कंचों के फव्वारे

सोनारपुरा की गलियों की टहनियों पर
कई दुकानों सरीखी
वह छोटी सी दुकानय
खुदरा खिलौनों की कहलोनी
तब से खुली
जब इकन्नियाँ चलती थी सिर ताने

बाबा वे मुसलमान
जिनकी पक गई दाढ़ी की फसल
कुछ काली क्यारियाँ छोड़ती हुई
जिनसे होकर स्मृतियाँ
चश्मे की मैली पुरानी कमानी
दोनों हाथों
दोनों कानों से हटाकर
श्वेत शुभ्र आँखों पर पंख पसारती हैं

कितने वर्ष
सचमुच! कितने वर्ष मुद्रित होते गए
अनायास योग मुद्राओं में
आँखें धवल धुली जागतिक
वह टहनियों के दोकने पर दुकान तिकोनी
जिसमें दो जनों के बैठने भर जगह
दूसरे आसन बैठी बाबा की बाल सखी
योगमाया- भैरवी
दाएँ हाथ में स्थिर या डोलता बेना
पृष्ठभित्ति पर चित्रलिखित तिलंगियाँ
पंख संगोरती
ओरियानी से झूलती मंझों की लार्चिछयाँ, लटाइयाँ
झोले के घोंसले से मुँह ऊपर भरे
शीत ऋतु की प्रतीक्षा में सोए स्वप्नमुख लट्टू
निगूँज
मीठी गोलियों के डिब्बों पर
सिगरेटों के पैकेट
जिनके नामों की चूरन-पुड़िया बननी बंद
हो जाती हैं उनके लिए
उस दिन मैंने नहीं लिए धूम्र छल्ले
छः पँचपइसी सिक्कों के बदले कंचे लिए
साथ ढेर-ढेर बचपन घलुए में।

कंचे
खनकती यादों सरीखे
ऊपरीली जेब में खनकती कविताओं की तरह
जगर-मगर आँखों हँसती
गुड़ी-मुड़ी पास-पास बैठी
जाड़े की धूप, गर्मी की छाँह सेंकती

कंचे
कि शिशु विश्व
अंगुलियों से दगते
टकराते-टनकते-चनकते हुए
बाललीला संपदा के रत्न

उनमें वह एक सबसे छोटी गोली
नाम जिसका छुन्नी
शिशु-स्वाभिमान का प्रतीक
कई-कई रंगों में पाई जाती
तेज और दूर भागने वाली
बीन की चतुर्भुज आकृति के
अनेक भुज कोणों पर सजे
कंचों के घने घेराव के बीच
केंद्रस्थल सम्राट बीन से टकरा
अन्यों से अस्पर्श दूर भागती
समतल खेतों की रानी
मार-पी में सयानी

उसका प्रतिद्वंद्वी
वह कत्थई या नीला
या और भी किसी रंग का बड़ा भंडोला
गोली कि छोटा सा गोला
टीपुका का हीरो-सेसर
टपकता सधे निशाने पर
मारकर थथम जाने वाला

वे छोटे-छोटे सिक्के
हासिल होते बाबा की जेब या माँ के
आँचल की खूँट से
खूँटा तुड़ाकर हरे मैदानों की ओर
उछलते बछड़ों की तरह हम
दौड़ते उन बाल-प्रसिद्ध दुकानों की ओर
नन्हीं बंद हथेलियों में सिक्के
पलक मुँदे कमल के पराग-तल की तरह
ध्यान की नन्हीं मुष्ठि-मुद्राओं में
उस याम प्राण की तरह
कि कुबेर का सिंहासन
नन्हीं खिलंदड़ी मुट्ठी में कैद
मोलने को नक्षत्र मंडल
सारी राह अँगुलियाँ गलबहियाँ ना खोलतीं
स्कूल से घर आती
या किसी सखी के घर जाती
पँचबहनों सी
जब कभी आँखें रंग जाती शतरंगों में
अँगुलियों की दरारों से
खिसक लेते सिक्के
या मुट्ठियाँ खोल, उछल जाते घास में
उन्हें ढूँढ़ना कितना कठिन
कितनी मिन्नतों भरा- कितना प्रार्थनापूर्ण
तितलियों के लिए भी
उतना नहीं करना होता था प्राणायाम
कि जैसे इल्लियाँ हों सिक्के नहीं
शतरंगे कंचों के पूर्व रूप।

गलियों की
टहनियों के दोकने पर वह दुकान
दो दरवाजों वाली- आँखें वे चार
चश्मे के गोल भँवरों के भीतर
झलमल कुइयों सी स्वच्छ गहरी
जिनके भीतर कंचो के फव्वारे।

---- **अनुपम**

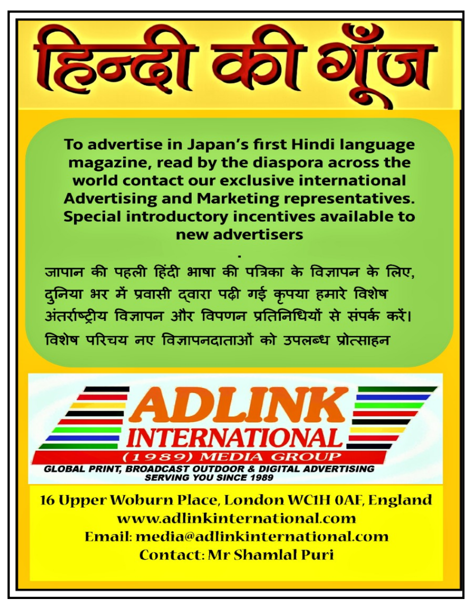

तब सर्वत्र हमारा तेज बिखरा

उल्लसित हृदय से मेरा मस्तक झुके निज देश को।
मैं पान करता हूं – जहां वेद के शाश्वत उपदेश को।
है ज्ञान, गमन और प्राप्ति आर्य धर्म की शुद्ध परंपरा,
धर्म ग्रंथ जिसका वेद है और ज्ञान भी सोने सा खरा।।

आर्यावर्त मेरा देश है और भाषा भी इसकी आर्य।
मेरे देश के जन आर्य हैं और संस्कृति इसकी आर्य।।
आर्यत्व हमारा प्राण है इस पर भी सोचो तुम जरा,
धर्म ग्रंथ जिसका वेद है और ज्ञान भी सोने सा खरा।।

विस्मृत किया निज स्वरूप हमने हिंदू कहे जाने लगे।
मूल को ही भूल बैठे, अपना विनाश स्वयं करने लगे।।
कहा 'इंडिया' अंग्रेज ने , बढ़ा देश को गंभीर खतरा,
धर्म ग्रंथ जिसका वेद है और ज्ञान भी सोने सा खरा।।

तब लगे पढ़ाने पाठ हमको मैक्समूलर सम विद्वान भी।
कर्नल टहड जैसे लोग हमारा लिखने लगे इतिहास भी ।।
गुलामी ने जकड़ा स्वदेश को दु:खी हो उठी पावन धरा,
धर्म ग्रंथ जिसका वेद है और ज्ञान भी सोने सा खरा।।

मूर्ख अविवेकी – विद्वान बनकर हमको लगे थे हांकने।
जो स्वयं सभ्यता शून्य थे वह हमको पढ़ा रहे पाठ थे।।
रक्षक ही भक्षक बन गए पापों से कांपती थी वसुंधरा ,
धर्म ग्रंथ जिसका वेद है और ज्ञान भी सोने सा खरा।।

जब निशा गहराती पाप की तब होता है भोर पुण्य का।
पापों का होता अंत और विनाश होता कष्ट – क्लेश का।।
स्वाधीनता की प्राप्त हमने तब सर्वत्र हमारा तेज बिखरा,
धर्म ग्रंथ जिसका वेद है और ज्ञान भी सोने सा खरा।।

डॉ राकेश कुमार आर्य

नेताजी स्टार हो गये

जिस दिन तड़ीपार हो गये
नेताजी स्टार हो गये।

जितने मर्डर उतने लूट
तिहाड़ो में मिलती छूट
पर्चा भर स्वीकार हो गये।
नेताजी स्टार हो गये।

निकल पड़े पहन के सूट
दारोगा जी करते सैल्यूट
चुनाव जीत सरकार हो गये।
नेताजी स्टार हो गये।

कानून बना उनका झूठ
निरीहों को रहे हैं कूट
बहुमत के दरकार हो गये।
नेताजी स्टार हो गये।

बुआ बबुआ भइया जूट
पी रहे सब कड़वा घूट
बाबाजी दमदार हो गये।
नेताजी स्टार हो गये।

जिस दिन तड़ीपार हो गये
नेताजी स्टार हो गये।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
वेब सम्पादक
हिन्दी की गूँज

कैनवास

"दादा जी, उठो चलो मेरे साथ खेलने।"
"अरे बेटा इस उम्र में अब मैं तेरे साथ कौन सा खेल खेलूंगा... ?"
"दादा जी,अब तो आपको रोज मेरे साथ खेलना पड़ेगा।"
"अरे, कैसी बात करता है तू !!?"
"जी दादा ,अब मेरी संस्था 'वृद्ध-दिवस' कुछ अलग अंदाज में ही मनाने जा रही है।"

'वृद्ध दिवस' के उपलक्ष्य में वयोवृद्ध का सम्मान तो होगा ही,साथ ही बुजुर्ग लोग गीत,गजल गाकर, चेयररेस, मिमीक्री आदि खेल कर अपने बचपन और अपनी युवावस्था को याद करेंगे
और अपने दिल को नटखट बच्चा बनाएंगे, अब तो दादी भी आपके साथ खेलेंगी।
"क्या...!! ?"
झुर्रियों के बीच धंसी हुई आँखों को फाड़ते हुए आश्चर्यचकित हो 'विक्रम सिंह जी'बोले -
"मजाक करने के लिए आज मैं ही तेरे को मिला हूँ,
तू यहाँ से जाता है,कि नही।"
"दादा जी, मैं मजाक नही,बल्कि सच कह रहा हूँ।
अब हमारी संस्था 'बुजुर्ग दंपतियों' की ढलती शाम में भी उनके जीवन के खट्टे-मीठे एहसासों को ताजा करेगी।"

"१अक्टूबर को 'वृद्ध- दिवस' है, तो प्रशासन द्वारा भी इसे रोचक तरीके से मनाने की तैयारी की जा रही है,कि इस दिन को और किस तरह से बेहतर करके वृद्धजनों को समर्पित कर उनकी खुशियों को और बढ़ाया जाए।"

वृद्धजनों के बीच विभिन्न खेल व स्पर्धाएं आयोजित की जाएंगी और फिर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा,लेकिन जो नब्बे-सौ वर्ष के हो चुके हैं,उन्हें सिर्फ सम्मानित किया जाएगा।"
"पहले यह पहल हमारा शहर करेगा,फिर धीरे-धीरे दूसरे शहरों में भी ऐसा होने लगेगा।"
"दादा जी,अब तो चलो मेरे साथ खेलने।"

पोते की कही हुई बातों का जादू थके हुए वृद्ध मस्तिष्क पर कुछ इस कदर हुआ,कि वयोवृद्ध 'विक्रम सिंह' जी अपनी लाठी उठा पार्क की तरफ चल दिए, जिससे बुझती हुई साँझ के कैनवास पर जीवन का एक स्वस्थ,सुखद चित्र उभरने लगा।

डॉ. क्षमा सिसोदिया

सावित्री बाई फुले

ज्ञान की वो मशाल आपने थी जलाई,
वंचितों के घर पर नई रोशनी थी छाई,

जो थे जुल्मों से पीड़ित,हकों से थे वंचित,
उन्हीं को दे शिक्षा जागृति की अलख जगाई।

नारी थी बेहद तंग सामाजिक व्यवस्थाओं से
उन्हीं नारी वर्ग को पढ़ा मुक्ति की राह दिखाई।

ज्योति'बा' संग सामाजिक कुरीतियों पर कर प्रहार,
अंधश्रद्धा,पाखंड की तर्कसंगत बैंड थी बजाई।

ज्ञान की थी वो साक्षात देवी सुन ऐ मास्टर,
खोल विद्यालय वंचितों की हकदाता कहलाई।

मास्टर भूताराम जाखल
सांचौर,जालौर,राजस्थान

हिंदी की गूंज

सृष्टि की उत्पत्ति करने को जब
गूंजा शंख ध्वनि सहित शब्द ॐ
आधार बना ब्रह्मा,विष्णु,महेश का
यह शुभ चिन्ह और चमत्कारी ॐ

देवों की भाषा संस्कृत समझाने
जन्मी लिए अलंकारों संग हिंदी
सभी वेदों, ग्रंथों, पुराणों ,सनातन
धर्म को सरल बनाने भाषा हिन्दी

बुरे कर्मों को बदल देती है
पुण्य कर्मों में भाषा हिन्दी
जब राम नाम का जप निरन्तर
करवाती रहती जिव्हा से हिंदी

सब को प्यारी कृष्ण की बंसी
हिंदी में धुन बजाती राधे राधे
भक्तों के पुकारने पर शीघ्र ही
दौड़े आते हैं कृष्ण संग राधे

निरन्तर जप हिंदी शब्द ॐ का उच्चारण
जो करता ध्यान लगाकर अन्तर हृदय से
स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन से होकर शुद्ध
जुड़ जाता परम परमात्मा और ब्रह्मांड से

जैसे माँ के मस्तक पर है चमकती व
सुशोभित है लाल- लाल गोल बिंदी
वैसे देश की सभी भाषाओ से चुनी गई है
राष्ट्र की शोभा बढ़ाती हमारी भाषा हिन्दी

मातृभूमि को गर्वित कर गूंज उठा था
संयुक्त राष्ट्र महासभा, लंदन में
जो स्वामी विवेकानन्द जैसे तेजस्वी लोहपुरुष
ने दिया था स्वाभिमान से भाषण हिंदी में

कठिन से कठिन शब्दों के सरल
रूप में अपनाई जाती है हिंदी
सातों भावों को दर्शाने, समझाने
से दिलों को छू जाती हमारी हिंदी

सुन्दर, मनोरम , मीठी, सरल
ओजस्वी प्यारी अनूठी हिंदी
सहज, सुगम विश्व के वातावरण में
गूंजती, रिझाती, इतराती, इठलाती हिंदी

रेनू माथुर
जोधपुर - ३४२००१ / राजस्थान

हिन्दी भारत की गंगा

हिन्दी भारत की गंगा है भाई
डूबकी लगाकर देखो रे लोल।

जन्मोंजन्म के पापों से भाई
मुक्ति पाकर देखो रे लोल।

दुर्लभ जीवन मिला है भाई
आचमन करके देखो रे लोल।

लहर उसकी फैली है भाई
पूरे विश्व में देखो रे लोल।

विश्वभाषा बनी है भाई
मान सम्मान उसे दे दो रे लोल।

पहचान उसने बनाई है भाई
अपनी मधुरता से रे लोल।

जहां जहां वो फैली है भाई
आभामंडल रचाती रे लोल।

हिन्दुस्तान के हम हैं भाई
गले लगाकर देखो रे लोल।

हिन्द की धरोहर है भाई
उसे संवारकर देखो रे लोल।

नारा लगाना आज है भाई
हिन्दी की जयकार रे लोल।

जय जयकार जय जयकार
हिन्दी की जय-जयकार।
जय जयकार जय जयकार
हिन्दी की जय-जयकार।।

(रे लोल-गुजरात की गरबा शैली का शब्द)

समीर उपाध्याय
सुरेन्द्रनगर
गुजरात भारत

लखनऊ में एक मौत

''माघ का महीना। समूचे उत्तर भारत में प्राणलेवा शीतलहरी, कहर बरपा रही थी। चरिंद-परिंद सभी की जिन्दगियां कुदरत के इस कहर से बेहाल थीं। लगता था कि लखनऊ शहर की रूमानियत और हलचल को गोमती से उठा कोहरा धीरे-धीरे लील रहा था। कई दिनों से सूर्य के दर्शन नहीं हुये थे, सो वक्त का अंदाजा लगाना मुश्किल हो रहा था। क्योंकि धुंध और कोहरा ही चहुं ओर फैला था। गालिबन बाद दोपहर का वक्त रहा होगा। हालांकि अंधेरा अभी हुआ न था मगर फिर भी लोगों ने बिजली-बत्ती से घरों को रोशन कर दिया था। हाड़ कंपा देने वाली ठंड और बोझिल इंतजार ने उन तीनों का मन खट्टा कर दिया था। मूने, पंइया और बरसाती बड़ी बेचैनी से जोखन की प्रतीक्षा कर रहे थे। जो केलो की अन्त्येष्टि का सामान लेकर आने वाला था। वैसे वे सब साथ के ही पियक्कड़ थे, मगर केलो, जोखन का खास हमप्याला था।

केलो काफी दिनों से जोखन को उधार दारू पिला रहा था। गाहे-ब-गाहे केलो नगदी से भी जोखन की मदद किया करता था। मगर नगदी के मुकाबले दारू की उधारी बहुत ज्यादा थी। ज्यादातर उधारियाँ जुबानी जमानत की ही थी जो केलो ने कल्लो मौसी को दी थी कि जोखन अगर दारू के कर्जे न चुका पाया, तो उसके कर्जे केलो चुकायेगा। केलो खुद को पहाड़ी राजपूत बताता था। जो जम. ानत के लिए अपनी मूंछो को ही पर्याप्त बताता था। तब कच्ची शराब बनाने और बेचने वाली कल्लो मौसी उसकी बड़ी-बड़ी और बेतरतीब मूंछो को ममतामयी दृष्टि से देखा करती थी, मगर अगले ही क्षण अपनी विधवा बहू कबरी पर केलो की आसक्ति को सोचकर क्रुद्ध भाव भंगिमायें बना लिया करती थी। मगर तब मन ही मन उसे इस बात की तसल्ली भी हुआ करती थी कि उसके न रह जाने पर कबरी को भूखों न मरना पडेगा, भई...... केलो है ना।

मगर केलो ही न रहा। आज उसी दारू की भट्ठी के नजदीक औंधी पड़ी केलो की लाश के समीप कल्लो मौसी अकारण ही अपने आंखो से बहते झर-झर आंसुओं को रोक नहीं पा रही थी। ये गम उधारी के डूब जाने के सबब था या सहारे के खोने की चिंता के जानिब, किसे पता? मौसी कभी केलो की लाश को देखती तो कभी कबरी को। कबरी, न तो केलो की लाश की तरफ देखती थी और न ही मौसी से नजरें मिलाने का साहस कर पा रही थी। वो सिर झुकाये, सिरके को हिला-डुला कर तल्लीनता से मिलाने का असफल प्रयत्न कर रही थी ताकि अगले दिन अच्छी, कच्ची शराब बन सके। हाथ काम पर था, नजरें नीची थी, दिल में रंज था कि कहीं दुख फट न पडे। विलाप की चहुंओर चुगली हो सकती थी, सफाइयां देनी पड़ सकती थी कि किसी गैर मर्द के निधन पर वैधव्य का विलाप क्यों? वो भी कबरी द्वारा।

जिसे उसका पति कोढ़िन समझता रहा था और सफेदा (ल्यूकोडर्मा) के दाग के कारण पहले उसे चितकबरी कहा करता था जो कि पुकारने की सुविधा हेतु कबरी बन गया। वैसे उसका नाम लक्ष्मी था। उसका पति लल्लन गुजर गया था। करीब अठारह वर्ष पहले, मगर कबरी नाम उसका तभी से पड़ा था। अब तक खुद वो अपना नाम ल क्ष्मी भूल चुकी थी। फिर ये दुख उस केलो की खातिर क्यों था, जिसने कि एक गैर-जिम्मेदार जीवन जिया था। खाये-पिये, मस्त...........? कबरी को चाहने और उसके असरहीन विरोध के बावजूद उसे छूने से इसलिये घबराता था क्योंकि वो सफेदा को कोढ़ ही समझता था, जो कि कबरी को छूने से उसे भी हो सकता था। आखिर वो केलो भी तो इस दारू की ठेकी का एक सामान्य ग्राहक था।

इस दारू की ठेकी पर हर किस्म के पियक्कड़ आते थे। शरीफ, बदमाश, चोर-दगाबाज से लेकर पंडा-पुजारी तक इस सस्ती दारू के तलबगार थे। कुछ यहीं पीते थे कुछ बंधवाकर ले जाते थे। गोमती तट पर बसी इन अनियोजित झुग्गियों में दारू बनाकर बेचना सरकार की नजरों में भले ही अवैध हो, मगर इस समाज में इसे एक कुटीर उद्योग माना जाता था जो कि श्रम एवं पूंजी से संचालित होता था एवं जहां गुणवत्ता की गारण्टी देनी पड़ती थी। अचानक कबरी उठी, मौसी की मनोदशा को भांपते हुये और बगैर उससे कुछ कहे वो घाट की तरफ चल दी। वहां उन तीनों ठिठुरती प्राणियों से उसने संयत स्वर में कहा -

''लाश कब तक रोके रहोगे, टेम हो रहा है। मौसी बिगड़ रही है''।

प्रयक्षतः स्वर से रूखाई एवं उकताहट का इम्कान होता था मगर हकीकतन ये एक टीस भरा विलाप था ''जा तन लोग, वा तन जाने''। वे तीनों अवधी में प्रचलित क्लासिक गालियां जोखन के लिये बकते हुये भट्टी पर पहुंचे। वे मौसी की शक्ल देखकर ही उसकी नाराजगी जान चुके थे। उन्होंने दो अद्धे (शराब की आधी भरी बोतल) लिये। जिन्हें देते हुये मौसी बड़बड़ाई। मौसी की नाराजगी को कम करने के लिये दुख की इस घड़ी में भी पंइया खींसे निपोर कर बोला-

''माघ की ठंडी है। कलेजा तक ठिठुरा जाता है। मुर्दा पहुंचाने जा रहे हैं। हमें खुद मुर्दा नहीं होना है। लाओ एक-एक गिलास लगा लें। सब इस शीतलहरी से बचे रहेंगे''।

मौसी टली नहीं। वो कुढ़ती, बड़बड़ाती और गरियाती रही। मगर कबरी जान चुकी थी कि बात चली है तो पिये बगैर ये लोग यहां से न हिलेंगे। और अगर ये लोग छिटक गये तो फिर इतने आदमियों को जोड़ना मुहाल हो जायेगा। तो फिर लाश की दुर्गति हो सकती है। जो उसे कतई गवारा न थी। वो मौसी की रजामंदी की परवाह किये बिना झट से गिलास ले आई। इस बार पीने के साथ खाने के लिये चना या चटनी की फरमाइश न हुई। बेशक उनमें स्वार्थ था मगर मौके की नजाकत भांपते हुये मानवीय संवेदना उनमें भी जागी। अब तक पराया समझकर केलो की लाश को हिकारत से देखने वाले उसके साथियों ने शराब पीते ही उसे अपनेपन से देखना शुरू कर दिया। ये वही शराब है, जिस पर इल्जाम है कि ये इंसान को जानवर बना देती है। मगर यहां पशुता की स्वार्थ सिद्धि तजकर, शराब पाते ही उन

पियक्कड़ों में मनुष्यत्व की संवेदनायें जागृत हो गयी थीं। उन सभी ने थोड़ी-थोड़ी ही पी थी सो नशे का सवाल ही पैदा नहीं होता था। उनकी आंखों से आंसुओ की बूंदे शराब पीने के बाद ही टपकी थीं। ऐसे गमजदा हुये कि मानो पियक्कड़ केलो नहीं, बल्कि उनका कोई सगा, संबंधी गुजर गया हो। जोखन अब तक न आया था। सो इंतजार बेमानी था। जोखन को श्राप देते हुये मूने ने कोई गंदी सी गाली दी, जिसका बरसाती ने समर्थन किया। पंइया ने बात आगे बढ़ाते हुये केलो के मानवता के महान गुणों का वर्णन करने की शुरूआत की ताकि उसकी मृत्यु महत्वपूर्ण बन सके।

तब तक मौसी ने उन सभी को डपटा –

''टेम देखो टेम। बतकही बात में''।

मौसी बखूबी जानती थी कि भले ही विद्युत शवदाह गृह में केलो की कर्माही होनी थी, खर्चा तो लगेगा ही। सो पहले से बुलाये गये टेम्पो चालक को मौसी ने सौ का तुड़ा-मुड़ा नोट देते हुये आंखो के इशारे से तत्काल प्रस्थान का आदेश दिया। मौसी ने कबरी को देखा तो कबरी सहम गयी। विधि विरूद्ध होने के बावजूद कबरी घर के अंदर से एक लोटे में गंगा जल ले आयी। भट्ठी से सटे पडे केलो के हाथों को हटाकर भट्ठी से मृत शरीर की स्पर्शता समाप्त की और केलो के मुंह में गंगाजल डाल दिया। टेम्पो चालक और उन तीनों ने मिलकर जब केलो की अर्थी उठायी तो मौसी फफक-फफककर रो पड़ी।

रोते-रोते उन्होंने कबरी से कहा-

''दुल्हिन ठाकुर के पांव छू लेव। बहुत मरजादी पुरूष रहे, बड़ा पुण्य मिलेगा। राम इन्हैं सरग में जगह देय''।

कबरी को दुख जरूर था। मगर स्त्रीत्व के भी अपने तर्क थे। लाज की बंदिशें थीं। सो चार बाहरी पुरूषों के समक्ष किसी गैर मर्द के पांव छूना कबरी को गवारा न हुआ। क्योंकि बात का बतंगड बन सकता था। नियति अपना दांव चल चुकी थी सो बतंगड़ को बात भी न बनने दिया गया। वैसे केलो के घरजमाई बनने में देर ही कितनी थी। प्रभावहीन विरोध के साथ मौन स्वीकृतियां भी थीं। केलो और कबरी उम्र के उस पड़ाव पर थे, जहां शारीरिक आकर्षण गौण हो चले थे। उन्हें एक दूसरे के साथ का पूरा आसरा था, भले ही वे रहते दूर-दूर थे। मौसी भी एक हद तक निश्चिन्त हो चली थीं कि उनके बाद कबरी को भीख मांगकर गुजारा नहीं करना पडेगा क्योंकि पचास वर्ष के बाद की असहाय स्त्री इस बस्ती में किसी काम की न रह जाती थी।

टेम्पो वाले की चीख ने उन दोनों महिलाओं की तन्द्रा भंग की और वे वर्तमान में लौट आयी, टेम्पो जा चुका था। बर्फीली हवाओं से बचने के लिये किवाड़ बन्द कर लिये गये। जहां केलो का मृत शरीर पड़ा था उस स्थान को लीप कर नहाने का हुक्म कबरी को मौसी ने दिया। लीपने से पूर्व उस स्थान की मिट्टी को कबरी ने अपने मुंह और मांग पर रगड़ लिया फिर लीपा। बन्द किवाड़ों के पीछे विलाप पर पर्दा न था। वैधव्य के आंसुओं से उसका चेहरा तर था। वो नहाने गयी तो पानी से धुलने के बजाय झाड़-पोंछकर चेहरे और मांग की मिट्टी को एक कपड़े में बांध लिया। इस मिट्टी की पोटली को संभालकर उन आभूषणों के साथ संदूक में रख दिया, जो उसने लल्लन की विधवा होने के बाद आज तक नहीं पहने थे। आभूषण और मिट्टी की पोटलियां उसके जीवन में आये दो पुरूषों की निशानियां थीं। अबला नारी फूट-फूट कर रोने लगी तो मौसी ने उसे ढाढ़स बंधाया। दोनों बड़ी देर तक आलिंगन बद्ध होकर फूट-फूटकर, बिलख-बिलखकर और हिचकियां लेते हुये रोती रहीं। वे जानती थीं कि इन आंसुओं का बहना मुफीद है, जिन्दा रहने के लिये।

उधर वे तीनों गरियाते-श्रापते ,कोसते भैंसाकुण्ड पहुँचे, जिनका केन्द्र बिन्दु जोखन ही था। रास्ते में टेम्पों पर लटककर बैठा होने के कारण ठोकर लगने से बरसाती के पांव में चोट भी लग गयी थी। सो वो रास्ते भर कलपता-कराहता रहा और केलो को बद्दुआयें भी देता रहा। भैंसाकुण्ड पर भी बहुत भीड़ थी। श्मशान में इतनी बड़ी भीड़ कौतूहल का सबब थी। तमाम आला अफसरान और पुलिस की गारद भी मौजूद थी, लिखा-पढ़ी चल रही थी। बयान न सिर्फ लिये जा रहे थे बल्कि लिखे और रिकार्ड भी किया जा रहे थे। खबरनवीस, टी०वी० चौनलों के नुमाइंदे, गमजदा परिवार वाले मातम पुर्सी के तमाशबीनों की खासी तादाद मौजूद थी।

दरयाफ्त की गयी कि गुलजारे-श्मशान की वजह क्या है? पता चला कि गोमती नदी के निचले इलाके की कच्ची बस्ती में जहरीली शराब पीने से गुजरी रात कई लोग गुजर गये और अभी भी तमाम लोगों के मरने की उम्मीद है। तमाम लाशें आ चुकी थीं, पता नहीं अभी कितनी और आयेंगी। देर-सबेर हो सकती है इस मुकाम पर फिर पुलिस जहच हो गयी तो लेने के देने। हम चारों अंदर हो सकते हैं। फिर केलो का पोस्टमार्टम, लाश लावारिस हो जायेगी। क्योंकि सगे वालों की तलाश होगी। मगर इतनी जांच-पड़ताल क्यों? अरे सबकी मौत का मुआवजा जो बँटना है भाई। कहीं गलत आदमी को चेक न मिल जाये तो लेने के देने पड़ जाये। मगर इस सबसे बड़ा खतरा पुलिस की पूछ-तांछ का था, जिससे हर शख्स हर्गिज-हर्गिज बचना चाहता था।

उन्होंने विद्युत चालित शवगृह से पिंड छुड़ाया और वहाँ से चलने को हुये तब तक दूसरे टेम्पों से जोखन उतरता दिखा। वो अंत्येष्टि का सामान्य लिये हुये था। वह कुछ पूछता इससे पहले ही जोखन को खींचकर वे पांचों केलो के मृत शरीर के साथ पुनः टेम्पों में सवार हुये और उन्होंने गोमती के निचले इलाके में बसी एक दूसरी बदनाम बस्ती बसारत पुरवा की तरफ कूच कर दिया। जोखू ने रास्ते में वापसी का सबब पूछा तो उसके तीनों पियक्कड़ मित्रों ने इन्तजार कराने की एवज में उसी अवधी में प्रचलित सारी अति वर्जित गालियाँ दे डाली। इतंजार का डाह निष्पादित करने के पश्चात उन्होंने बताया कि पुलिस के लफडे से बचने के लिये वे लोग वहाँ से उल्टे पाँव भागे है। बरसाती ने पुनः अपनी चोट के लिये केलो और जोखन को बारी-बारी से कोसा।

अब तक माघ की सर्दी जानलेवा दुश्मन की शक्ल में –

हाजिर हो चुकी थी। ठंड नसों में उतरती महसूस हो रही थी। कोहरा गोमती नदी के अस्तित्व को झुठला रहा था। धुंए और फाहों की गझिनता इतनी थी कि हाथ को हाथ तक न सूझता था। इसी सर्दी से जूझते हुये उन चारों ने लाश नीचे उतारी, टेम्पो वाला इस बार की किसी अनहोनी की आशंका से बढ़ा हुआ किराया मांगे बिना नौ दो ग्यारह हो गया। मौसम की मार और अनहोनियों से जूझते हुये उन चारों को इम्कान होने लगा था कि आज केलो का दाह संस्कार होना मुश्किल है। मगर कभी-कभार दूसरों की मुसीबतें किसी-किसी के लिये राहत भी बन जाती हैं। सर्दी ने ल खनऊ में तमाम जाने ली थीं, सो तीन-चार वहां भी जलने की कतार में थीं। उन्होंने पंडित से बात की। हामी हो गयी। सबकी जेबें टटोली गयीं। सारे खर्चों और वापसी के किराये के अनुमान के बावजूद उनकी जेब में डेढ दो सौ रूपये बच रहे थे। उन सबों को किसी प्रकार की जल्दी न थी। मगर बाकी के लोगों के परिवार वाले ठंड से कांप रहे थे। वे जल्दी-जल्दी को रट लगाये थे और ज्यादा पैसे देने का प्रलोभन भी दे रहे थे। मगर प्रकृति की मार के कारण उस शीतलहर में लाशें बहुत वेग से न जल पा रही थी।

वहाँ मौजूद सभी लोगों के चेहरों पर बेचैनी, अकुलाहट एवं झुंझलाहट थी। इधर ये चारों सर्द हवाओं की मार से पस्त थे। समय था, पैसा बच रहा था, सर्दी थी ही, तो क्या रोड़ा था। रखवाली, किसकी रखवाली? मुर्दा लेकर कौन भागेगा? फिर भी पंडित को मुर्दे की खैरियत तकाकर वे चारों किसी पास की दारू की ठेकी की तलाश में निकल पडे। उन्हें आधे घण्टे में वापसी की ताकीद की गयी थी, जो कबूल थी। उन्हें कौन सा ठेकी पर धूनी रमानी थी। चलते-चलते वे हनुमान सेतु तक आ गये। सेतु तक आ गये थे, तो लगे हाथ हनुमान जी को उन्होंने प्रणाम किया और मंदिर के पिछवाडेसे ही सटी बांस की फट्टी से बनी पुलिया पर से उतरकर वे ठेकी पर पहुँच गये। वहां उन्होंने उन सारे पैसों की शराब पी, जो कर्माही के बाद बचने थे। सर्दी की सुरसुराहट से जूझते हुये उन्होंने अद्धो के कई दौर चलाये सो उन्हें घंटो लग गये।

इस बेतरतीब बैठक में उन्होंने केलो के सद्गुणों को याद किया, अवगुणों के जिक्र से परहेज किया और एक अच्छे साथी को खोने के गम में फूट-फूट कर रोये भी, भले ही नशे के आवेग में। जब तक उन्हें अपनी वापसी के सबब याद आते। पौने छः बज चुके थे, जबकि पंडित ने उन्हें हर हाल में सवा पांच तक लौट आने की ताकीद की थी। केलो का जिक्र आते ही वे यों फिक्रमन्द हो गये, मानो केलो मुर्दा न होकर मरीज हो, जिसकी हालत गुजरते वक्त के साथ बिगड़ती चली जा रही हो। देरी की वजह से हल्कान मुर्दे के खैरख्वाह खुद को और एक दूसरे को कोसते हुये वहां से भागे।

नशा काफूर हो चुका था। जिम्मेदारियों ने उन्हें बेचैन कर दिया था। एक दूसरे के आगे पीछे चलते हुये वे केलो के जिस्म के पास पहुँचे तो उन्हें तसल्ली हुई कि मुर्दा सही-सलामत था, तो उनके चेहरों पर जिन्दगी की अलामतें लौट आयीं थी। उनकी फिक्र बिला वजह न थी। क्योंकि मूने और बरसाती ने एक बार मुर्दा चुराया था और उसे बेच भी दिया था तीन हजार में। किसी मेडिकल-वेडिकल के लाइन के आदमी को। वे लोग केलो को चुराकर क्या कर सकते थे-क्या पता? इसीलिये इन चारों का मुर्दे के लिए डर लाजिमी था। तहजीब और नफासत के शहर लखनऊ में जिन्दा मुर्दा कोई सलामत न था। आनन-फानन में अन्त्येष्टि की तैयारी हो गयी।

छह बज चुके थे। सारी तैयारियां होने के बाद पंडित कल्लू शुक्ल को मंत्रोच्चार हेतु बुलाया गया। मगर पंडित जी के प्रस्ताव ने तो उन चारों को बेचैन कर दिया। ठंड और देरी का चक्रवृद्धि व्याज लगाते हुये उन्होंने अपने मेहनताने की रकम को तीन गुना कर दिया था। पंडितजी को पता था कि इतनी देर हो जाने के कारण कोई दूसरा पंडित उन्हें नहीं मिलेगा, फिर पंडितजी को खुन्नस भी हो गयी थी कि इन मुओं के पास दारू में उड़ाने के पैसे हैं तो फिर अन्त्येष्टि सस्ते में वे क्यों करें। मगर मोल-भाव करते-करते ड्योढ़ी रकम पर मामला तय हो गया। फिर जब रकम जोड़ी गयी तो वो उतनी ही थी जितनी कि पीने के बाद बची थी। कल्लू शुक्ला टस से मस न हुये। मुर्दे की र खवाली, जानलेवा शीतलहरी और इतने इन्तजार के बाद, श्मशान में उध ाारी नहीं चलेगी। पंडितजी ने अपना अनुभव बताया कि श्मशान और जुए की उधारी कभी किसी ने लौटकर नहीं चुकायी है। सो उधारी कबूल न हुई। गिड़गिड़ाना, कसम, आश्वासन से पंडितजी का रोज का वास्ता था इस श्मशान में। सो वे न पसीजे। सर्दी बढ़ रही थी। पूरी रकम शुक्लाजी के सामने थी। उन्हें रस महसूस न हुआ। क्रुद्ध दृष्टि से पहले उन्होंने पहले रकम को देखा, फिर उन चारों को। उन्होंने 'राम-राम' कहा और वो चलते बने।

वे चारों किंकर्तव्यविमूढ़ थे। अंधेरा और सर्दी बढ़ रही थी। घाट सूने हो रहे थे। उनकी संवेदनायें जेब के अर्थशास्त्र से हार चुकी थी। अन्तिम विकल्प यानी मंत्र किसे आते थे, मगर ईश्वर में आस्था तो थी, उसी को सर्वोपरि मानकर तौर तरीकों के लिये माफी मांगी गयी। चिता को तीन बार वे तीनों घूमें। बरसाती दूर ही खड़ा रहा। मूने चिता को तीन बार घूम कर बोला-

''हे ब्रह्मा जी, केलो स्वर्ग आ रहा है''।

''ऐसा ही जोखन ने किया, तीन बार घूम कर हाथ जोड़कर बोला-

''हे बिष्णु महराज, केलो को स्वर्ग में ले लेना''।

''हे शंकरजी, केलो की स्वर्ग यात्रा आसान करना''।

तीनों हाथ जोड़कर खडे हो गये तो बरसाती हाथ उठाकर बोला-

'केलो, इस दुनिया में एक अच्छा आदमी था वो मरकर भी खुश रहेगा'' और फिर केलो की चिता जला दी गयी।

चिता जलते ही वे आहलादित हो गये। उनके चेहरों पर उल्. लास था। अन्त्येष्टि की चिन्ता काफूर हो चुकी थी। चिता से निकलती लपटों और उसमें जलते केलो के जिस्म से वे केलो को साक्षात स्वर्ग जाता देख रहे थे। मूने बोला-

''केलो एक धांसू आदमी था। भगवान इसे स्वर्ग ही भेजना। मेरे हिस्से का पुण्य भी इसे ही दे देना, अगर कम पडे तो''।

पंइया भी धीरे से बोला -

''केलो ने कभी किसी का दिल नहीं दुखाया। जानकीनाथ इसकी सब भूल-चूक माफ करना और इसे स्वर्ग में ही लेना''।

बरसाती मुस्कराते हुये बोला-

''या अल्लाह, फिर गड़बड़ा गया। हे केलो के भगवान,, केलो को स्वर्ग ही भेजना। उसके जाने से किसी का रास्ता जो साफ हो गया, क्यों बे जोखना''।

जोखन ने कबरी को लेकर कहे गये बरसाती के कुटिल व्यंग्य पर एक गंदी सी गाली दी, फिर ठंडी आह भरते हुये बोला -

''हाँ भगवान, केलो भाई को स्वर्ग ही भेजना। मुझे बहुत उधार दारू पिलाई उसने। बड़ा मरदराज आदमी था। कबरी को उसने नहीं छोड़ा, जबकि जानता था कि उसे सफेदा है। भगवान, स्वर्ग ही देना''।

मूने ने पूछा-

''का फर्क है कोढ़ और सफेदा में। केलो भाई को जाने से तो कबरी रांड़ हो जायेगी''।

जोखन ने मूने को गरियाते हुये कहा-

''उपरवाला केलो भाई की आत्मा को शान्ति दे। मगर कबरी कहां भला केलो से अहिबाती (सुहागन) थी। क्यों मियां''?

बरसाती की तरफ देखते हुये जोखन ने अपनी बात पूरी की। बरसाती गुर्राते हुए बोला -

''अब चुप भी करो रांड़ के जनों। ये श्मशान है, दिल्लगी का अड्डा नहीं। कबरी की बात छोड़, केलो भाई की बात करो''।

अपने-अपने हाथ जोड़कर अपने-अपने इष्ट देवों को उन्होंने केलो को समर्पित किया। बरसाती ने पहले दुआ के लिये हाथ उठाये थे, मगर तड़ाक से प्रार्थना हेतु हाथ जोड़ दिये अन्य तीनों की भांति। मिनट भर बाद ही, अपने-अपने भगवानों को उन्होंने केलो की मृत्यु के बाद की औपचारिकताओं हेतु तका किया। फौरन उन्होंने श्मशान के सेवक को बुलाकर कहा कि वो देर-सबेर केलो की अस्थियां गोमती में प्रवाहित कर दें। उन्होंने अपने सम्मिलित रकम का आधा हिस्सा उस सेवक को दे दिया। हालहकि उस सेवक में विसर्जन का ये काम महज एक अद्धे में कर देने का वादा किया। मगर वे चारों जानते थे कि दारू की एवज में दिये गये वचन बहुत ही पक्के होते हैं।

फिर वे हजरात इस रकम को बचाना बेमानी और फिजूल समझते थे। मूने ने समझाया कि सब नदियाँ आपस में बहनें होती हैं। अस्थियां चाहे गंगा में डालो या गोमती में। बात एक ही होती है। तीनों ने उनकी बात का समर्थन किया और सेवक ने सहमति दे दी। पैसे फिर भी बच रहे थे। दुःख था, सर्दी थी। जिम्मेदारी उतारने की संतुष्टि भी थी फिर इन्तजार किसका था? कुछ घंटे बाद वे लुढ़कते सुबकते मौसी के ठेकी पर हाजिर थे। ठेकी आज सिर्फ उन चारों हेतु ही खुली थी।

मौसी ने बताया कि देर से नहाने के कारण कबरी को बुखार चढ़ गया है मगर उन चारों का खाना उसने फिर भी बना दिया था। वे चारों अद्धे की बोतलों में पानी मिला-मिलाकर उसे पूरा करके पी रहे थे और केलो की यादों को ताजा कर रहे थे। उनकी बतकही से मौसी कुढ़ रही थी, कि बिना ब्राह्मण के की गयी अन्त्येष्टि केलो के स्वर्ग जाने में बाधक थी। सो उन लोगों ने अनर्थ कर डाला। मगर वे चारो आश्वस्त थे कि उन्होंने केलो की कर्माही पूरे मन से की है। भगवान ने उनकी प्रार्थना अवश्य सुनी होगी। केलो जरूर स्वर्ग जायेगा। मौसी लगातार बड़बड़ाये जा रही थी। दूसरे कमरे में पड़ी कबरी सिसक रही थी और वे चारों पीते-पीते फफक कर रो पडते थे। कुहरा बढ़ता जा रहा था। रात गहराती जा रही थी।

दिलीप कुमार

ज़िन्दगी

सफ़र मे ं धूप तो होगी जो चल सको तो चलो
सभी हैं भीड़ मे ं तुम भी निकल सको तो चलो
इधर उधर कई मंज़िल है चल सको तो चलो
बने बनाए है साँचे जो ढल सको तो चलो
किसी के वास्ते राहे ं कहाँ बदलती है
तुम अपने आप ख़ुद ही बदल सको तो चलो
यहाँ किसी को कोई रास्ता नही देता
गिराके अगर तुम संभल सको तो चलो
यही है ज़िन्दगी कुछ ख़्वाब चन्द उम्मीदे ं
इन्ही खिलौनों से तुम भी बहल सको तो चलो
हर इक सफ़र को है महफ़ूस रास्तों की तलाश
हिफ़ाज़तों की रिवायत बदल सकों तो चलो
कहीं नहीं कोई सूरज, धुआँ धुआँ है फ़िज़ा
ख़ुद अपने आप से बाहर निकल सको तो चलो

डॉ. राजपाल (प्राचार्य)
बी.आर.चौधरी टी.टी. कॉलेज,
गोलूवाला, हनुमानगढ़ (राज.)

कविता प्रतियोगिता

परिणाम की घोषणा के साथ गोष्ठी का सकुशल समापन

पूरी दुनिया के खिलाड़ी बड़ी शिद्दत के साथ सालों-साल अदम्य त्याग, मेहनत और समर्पण से ओलंपिक की तैयारियाँ करते हैं! क्या किसी व्यवधान को हम इतनी अहमियत दे दें कि वह इनके सालों की मेहनत पर पानी फेर दे?

ऐसे ही किसी विचार की विजय थी कि जब २०२१ में कोविड चरम पर था तो जापान सरकार ने अपने जीवट का परिचय देते हुए ओलंपिक करवाने के निर्णय लिया।

विनाश में सृजन, यूँ तो उद्यमी जापानियों के लिए कोई नई बात नहीं थी, परन्तु कोविड की अनिश्चितता से आशंकित भीतरी और बाहरी कई व्यवधान आए!

परन्तु जैसा दिनकर कहते हैं:

'नख-दंत देख मत हृदय हार, गृह-भेद देख मत हो अधीरय
अन्तर की अतुल उमंग देख, देखे, अपनी जंजीर वीर!'

इन्हीं सरगर्मियों के बीच यहाँ जापान के पड़ोस में सिंगापुर में एक दिन मैंने खेल पर हिन्दी कविताएँ ढूँढनी चाहीं। परन्तु कुछ खास हाथ नहीं लगा। मैं दुखी तो हुई पर निराश नहीं! कविताई के कोर टीम से बात की! हम कविताई के दीवाने कब हार मानने वाले थे, हमने सोचा चलिए पूरे विश्व से ही लिखवाईं जाएँ हिन्दी में खेल कविताएँ!

और फिर जापान से कवयित्री एवं संपादक रमा शर्मा जी, भारत के थल सेना से लेफ्टिनेंट कर्नल गौतम राजऋषि, अमरीका से प्रख्यात हिन्दी कर्मी और कवि अनूप भार्गव जी और दिल्ली से उद्घोषिका एवं कवयित्री अलका सिन्हा जी, और सिंगापुर से मैं यानि कविताई की संस्थापक शार्दुला नोगजा ने मिल कर इस परियोजना पर काम करना शुरु किया!

कविताई से अनु बंसल जी ने शानदार पोस्टर बनाए। देश-विदेश से लोगों ने १०० के करीब खेल कविताएँ भेजीं। निर्णायक मंडल को कविताएँ बिना लेखक के नाम के प्रेषित की गईं जिससे विजेताओं का निष्पक्ष चुनाव हो! कुल चौदह विजेता चुने गए। उनकी कविताएँ इस अंक में सम्मिलित हैं।कुछ बहुत बढ़िया, कुछ साधारण खेल कविताओं का नया भंडार बना। सबसे बड़ी बात कि खेल कविताओं की तरफ हिन्दी वालों का ध्यान गया!

सात अगस्त को एक वृहद कार्यक्रम में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष अनिल जोशी जी और विश्वरंग के स्वप्नदृष्टा संतोष चौबे जी की अध्यक्षता में सभी विजेताओं ने कविता पाठ किया! आयोजन में सिंगापुर से ओलंपिक तैराक ब्रायन टे का वक्तव्य बहुत सराहा गया। साथ ही 'कविताई सिंगापुर' से जुड़े गीतकार और गायक शलभ का गीत 'ए बन्दे' ने पूरे आयोजन की आत्मा को जैसे प्रस्तुत कर दिया।

पूरा आयोजन इतना संतुष्टिदायक रहा कि हमने तय किया कि हम ऐसे ही हिन्दी जगत की खलाएँ ढूँढ कर उन्हें अपने श्रम से भरते रहेंगे! यह हुई हमारी यकीन की लम्बी और ऊँची छलाँग!

आप इस खेल विशेषांक से जुड़ें और हिन्दी में लीक से हट कर काम करने वालों के सहयात्री बनें! शुक्रिया!

- **शार्दुला नोगजा**
- संस्थापक कविताई सिंगापुर

"तो क्या कि कम हैं तालियाँ, तो क्या कि रिक्त दीर्घा
ये जीत ही तो प्रेरणा, तू सब को जीत कर दिखा"

"हौसलों की कुछ उड़ाने आस के आकाश में,
कीर्तिमानों की तरावट तिश्नगी में खेल की"

"इसीलिए बस क्रीड़ांगन में
निश्चित नियमों के बंधन में
खेल सदा अच्छा होता है
खेलें, मन बच्चा होता है "

'' अब सिर्फ अर्जुन नहीं होंगे आगे।
सुभद्रा सिर्फ चक्रव्यूह भेदन की,
कहानियाँ नहीं सुनेगी।
बल्कि भेदती चली जाएगी,
कुरीतियों के साथ,
दूषित मानसिकताओं को भी।
तीर,
प्रत्यंचा पर चढ़ चुका है,
निशाना कई आंखों पर है।
जो आंकती हैं कमजोर,
जो कहती हैं,
तुम्हारे बस का कुछ नहीं।''

ऐसी कविताएँ गूँज उठी थी शनिवार, ६ अगस्त को विश्व खेल कविताई कार्यक्रम में। कार्यक्रम शुरु होने के समय ही जेवलिन थ्रो में सूबेदार नीरज चोपड़ा के स्वर्ण पदक ने पूरा माहौल रोशन कर दिया। हमारे मुख्य अतिथि हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष अनिल जोशी जी, विश्वरंग के स्वप्नदृष्टा संतोष चौबे जी की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम सफलता के चरम पर पहुँचा। कविताई की संस्थापक और इस कार्यक्रम की संयोजिका शार्दुला नोगजा ने कार्यक्रम का आत्मीय संच. ालन किया। हमारे निर्णायक मंडल से अलका सिन्हा जी ने खूबसूरत वक्तव्य दिया जिसमें कहा कि एक सूत्र वाक्य समस्त जीवन को दीपित कर सकता है।उन्होंने खेल पर सुन्दर कविता भी सुनाई। कर्नल गौतम राजऋषि जो हमारे प्रखर निर्णायक थे उन्होंने स्वर्ण पदक के संदर्भ में 'आर्मी फहर ओलंपिक' की बात बताई और वाहिद साहब की "फेंक जहाँ तक भाला जाए" को स्वर दिया। अनूप भार्गव जी कविताई के हर आयोजन में निर्णायक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मेरी इस जिद पर बहुत हँसते हैं कि कविता बिना नाम के ही मिलेगी।. उन्होंने विष्णु खरे जी की 'कवर ड्राइव' कविता को स्वर दिया।रेखा राजवंशी जी ने अपनी बाल कविता सुनाई। राकेश खण्डेलवाल जी के अद्भुत खेल गीत के लिए एक अलग कार्यक्रम करने की दरकार की गई।

कार्यक्रम का आगाज हुआ सिंगापुर से लेखक, संगीतकार और गायक शलभ के गीत से-' रुक जा रे बन्दे' गीत बहुत से music streaming platforms पर लोकप्रिय रहा और कल भी बहुत सराहा गया। कार्यक्रम के सितारे थे सिंगापुर के ओलंपिक तैराक ब्रायन टे, जिन्होंने बहुत ही विनय पूर्वक अपने तैराकी के बारे में बात की और श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए। जापान से सहआयोजिका रमा शर्मा जी ने जापान से ओलंपिक के बारे में बताया और कविता प्रकाशन की योजना बताई।

इस आयोजन में हमें ४४ कविताएँ मिली जिसमें से १३ कविताएँ चयनित हुईं। चयनित कविगण ने खूबसूरती से कविता पाठ किया। गाजियाबाद से लोकप्रिय लेखक प्रताप नारायण सिंह जी, सिंगापुर से श्वेता जावाली जी और अमित फाटक जी, भोपाल से अमित खरे जी, अमरीका से शशि पाधा जी, सागर से अनुज उपाध्याय जी , दिल्ली से चंचल एवं यशदेव विशिष्ट जी , यू के से दिव्या जी की बाल कविता कविताई की तकनीकी सलाहकार और कवयित्री शीतल जैन ने सुनाई। लंदन से शिखा वार्ष्णेय जी , भारत से स्वरांगी साने जी, बुशरा तब्बसुम जी, कविता काव्या जी। यूके से ऋचा जिंदल जी की कविता हम किसी अगले आयोजन में सुनेंगे।
अपने मुख्य भाषण में अनिल जोशी जी ने प्रभाष जोशी जी को याद किया, जीवन में खेल का महत्व, खेल पर गद्य को उद्धृत किया। उन्होंने कविताई के लीक से हट कर काम करने की प्रशंसा की।
संतोष चौबे जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विष्णु खरे जी को याद किया, और रेखांकित किया कि कैसे हर विषय पर कविता लिखी जा सकती है। उन्होंने टेबल टेनिस पर कविता सुनाई और अगला आयोजन बाल कविता पर करने को कहा।

पूरे प्रोग्राम की तकनीकी संचालन के लिए कविताई की साहित्यिक सलाहकार श्रद्धा जैन और शीतल जैन का हार्दिक शुक्रिया । पूरे कार्यक्रम के पोस्टर बैकग्राउंड बनाने के लिए हमारी कला सलाहकार अनु बंसल के आभारी हैं। शार्दुला नोगजा ने समापन में पैराओलंपिक के महत्व की बात की। सभी सुधि श्रोताओं को धन्यवाद किया! आप कविताई के फेसबुक पेज पर यह फेसबुक लाइव देखा जा सकता है।

अमन के वास्ते खेलो

अमन के वास्ते खेलो, चमन के वास्ते खेलो।
चलो ऐ दोस्त थोड़ा-सा, वतन के वास्ते खेलो।।

जवाँ है प्यार का जज्बा, भुजाओं में अभी बल है।
निगाहों में तो जन्नत है, भले नीचे धरातल है।
हमें आगे निकलना है सितारों से भी ओ यारो।
चलो आओ इसी भोली लगन के वास्ते खेलो।।

इन्हीं बाँहों ने तोड़ा है पहाड़ों की शिलाओं को।
इन्हीं कदमों ने रौंदा है जहाँ की आपदाओं को।।
इन्हीं सीनों में धड़के हैं कभी दिल आरज़ूओं से।
उसी इक पाक हसरत की छुअन के वास्ते खेलो।।

कभी हमको विजय मिलती, कभी मिलती पराजय है
है सच्चा खेल का जज्बा, फतह जिसकी सदा तय है
जमाना सब हमारा है, जमाने के हैं हम यारो
चलो इस प्यार की उजली किरन के वास्ते खेलो।।

सुना करते हैं सदियों से कि सेहत इक नियामत है।
हैं जब तक खेल दुनिया में समझना सब सलामत है।
हमें इन्सान की हस्ती बचानी है अगर यारो।
चलो बीमार होते तन औ मन के वास्ते खेलो।।

डॉ. रामवृक्ष सिंह,
भारत

खेल हैं जिंदगी

खेल हैं जिंदगी
आओ.. भाव प्रीतम पाओ
तेरा मेरा दांव लगे जहां
जीत का लहरे परचम
हार मुहं दिखाये यहां
फिर न्यौता मिले
शौर्य दिखाओ जहां
पग पग निहारे जग
किस्मत नहीं
कर्मण्येवाधिकारस्ये का खेल यहां
अर्जुन बनिये या एकलव्य
परीक्षा की घड़ियां
करती इंतजार जहां
साहस, पराक्रम, हौसलों से
रची जिसने कहानियां
याद करती दुनिया उसे यहां
नीरसता के भाव करे घाव
सयंम सहजता का ले सानिध्य
वरण विजय का पाओ
खुद्दारी से खड़ा हो वजूद
पर खुद से पहले
राष्ट्र को हार विजय श्री पहनाओ
खेल नहीं संकीर्णताओं का ठौर
मत वह दहलीजों तक सिमटे
वसुधैव कुटुंबकम की यह परिणीति
सरहदों को शांति सौहार्द के पैबंद बांधो
जियो चाह वाह से
आह से हो चितपट
मानवता की राह
ध्वज पताका पहराओं
खेल है जिंदगी
आओ भाव प्रीतम पाओ।

डॉ राकेश छोकर
सहारनपुर, उ.प्र. भारत।

जीतेगा आत्मविश्वास

जापान में हो रहे टोक्यो ओलंपिक इस बार हैं खास
ओलंपिक खेलों का रहा है अब तक शानदार इतिहास

खेलों से होता स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क का विकास
खेलों से ही बहुत सी बीमारियाँ कभी न आतीं पास

कोरोना महामारी ने दुनिया भर को किया जब उदास
ऐसे दौर में भी खिलाड़ियों ने नहीं खोया आत्मविश्वास

कोविड प्रोटोकाल को ध्यान में रख नियमित किया अभ्यास
मेहनत और दृढ़संकल्प से निरंतर करते रहे प्रयास

विषय परिस्थातियाँ थीं फिर भी हुए कभी नहीं निराश
बेहतर प्रदर्शन करने का बनाकर रखा मन में विश्वास

जापान और सभी देशों के सहयोग से बनी रही ये आस
हौंसलों से ही छू सकते हैं हम बुलंदियों का आकाश

खेलों के प्रति लगन,समर्पण और संकल्पित अहसास
जीत सुनिश्चित होती है तभी जब मन में हो विश्वास

ऐसे लक्ष्यभेदी खिलाड़ी कभी भी होते नहीं निराश
रखते ये अर्जुन दृष्टि,साधते हैं निशाना अलग ही खास

खेलों में नाम कमाने वालों का बना है एक इतिहास
इस कठिन समय में हम रखें बस हिम्मत और विश्वास

आओ अपने कौशल से टोक्यो ओलंपिक को बनाएँ खास
हौसलों के परों से छू लें हम सफलता का उन्नत आकाश।

यश देव वशिष्ट
आर के पुरम,नई दिल्ली
भारत

खेल संस्कृति

शिक्षा के साथ
महत्वपूर्ण खेल,
होगा विकास।

देश-विदेश
समीप आते सब,
खेल संस्कृति।

स्वस्थ शरीर,
होगा स्वस्थ मस्तिष्क
लाभ खेल से।

कूदो रस्सी
चाहे जलेबी रेस,
प्राचीन खेल।

परिश्रम से
जीतना ओलंपिक,
गोल्ड मेडल।

देश की शान
पी टी उषा सानिया,
नारी महान।

डॉ. दीप्ति गौड़ "दीप"
शिक्षाविद् एवम् कवयित्री

चानू की चांदी

नन्हीं बालिका ने पढ़ी
वेटलिफ्टर कुंजरानी की कहानी
ठान लिया भारोत्तोलन में ही
अपनी जगह बनानी
लक्ष्य असाध्य और राह कठिन
उस पर आर्थिक मजबूरी
कोई बाधा न मगर, हिम्मत तोड़ सकी
इरादों को कमजोर कर सकी
हर मुश्किल से लड़कर
कठिन क्षेत्र में झंडा अपना गाड़ा
हुई पराजित कभी तो
कभी स्वर्ण पदक भी पाया
न हुई निराश, न हताश
हार ने डटकर जूझना सिखाया
तो जीत ने सम्मान दिलाया
चलता रहा गिरने-उठने का दौर
एक समय ऐसा भी आया
रियो ओलिम्पिक में जब जाकर
खुद को आजमाया
हुई अनहोनी बड़ी गजब कि,
हाथों ने निर्धारित वजन न उठाया
डिड नहट फिनिश
नाम के साथ जब लिखा गया
तब अवसाद ने डराया
कैसा भी हो समय
हर बार खुद को समझाया
मनोबल को न किसी हाल गिराया
टोक्यो ओलिम्पिक २०२० में जाकर फिर
सिल्वर मैडल पर साधकर निशाना
उस पराजय का दर्द मिटाया
देश का मान बढ़ाया
मीराबाई चानू ने एक बार फिर
लड़कियां पाकर मौका
असंभव को संभव कर सकती
साबित कर दिखाया
देकर इस रुपहली जीत की ढेर सारी बधाई
हमने भी फर्ज अपना निभाया ।।

सुश्री इंदु सिंह 'इंदुश्री'
नरसिंहपुर (म.प्र.)

खेल

उस लंबे दालान के पार
जहाँ खड़ी है छोटी सी चाय की दुकान
जब आप जा रहे होंगे
गर्मियों की एक शाम
तेज कदमों से
पीने एक कप चाय
तब लगभग अचानक ही
रोक लेगी वह आपको।
शानदार चमचमाती
हरे रंग की मेज
जिसे बीच से काटती
एक बारीक सफेद लकीर
और लकीर के लंबवत
भूरी जाली का नेट
और नेट के कोने पर
दो सपाट गुदगुदे रैकेट
और उनके बीच अटकी
एक छोटी सफेद गेंद।
तब अचानक आ खड़ा होगा
आपके सामने
आपके बचपन का दोस्त नंदू
पहने
घुटनों से थोड़ा ऊपर खत्म होते
झक सफेद शहर्ट्स
और कमर से थोड़ा नीचे झूलती
हल्की नीली टी शर्ट
खुले होंगे
जिसके ऊपरी दो बटन
एक नवयुवक की
खुली सहजता के समान
और मुस्कराता होगा
जिसके सीने पर
लाल रंग से बना
सही का निशान।
देखते ही उसे
उछाल देंगे आप
एक रैकेट उसकी ओर
और कहेंगे
चल हो जायें एक दो गेम।
फिर गेम के पहले
तैयारी के रूप में
टेबल के आर पार जाते
कुछ लंबे शहट्स
और अचानक आपको चकित कर देने वाले
एग्रेसिव फोर हैंड रिटर्न
और फिर निगाहें जम जाने के बाद
गेंद को थोड़ा सा उछालकर
रैकेट के घुमाव के साथ
की गई टहप स्पिन सर्विस
और टेबल के एक कोने से
उतनी ही सफाई के साथ
भेजा गया बैक हैंड रिटर्न
नेट को बिल्कुल छूते हुये।
और इस तरह
शुरू होगा खेल
सिर्फ आप होंगे
और आपके सामने होगा नंदू
अपनी सुडौल लंबी बाहों के
कलात्मक घुमाव से
आपको छकाता हुआ
बंद हो जायेगी सारी दुनिया
दालान के उस पार
बस होगी एक छोटी सफेद गेंद
टेबल के आरपार
और एक कोशिश
कि न गिरे वह
इस बार
इस पार।
और जब इक्कीस-उन्नीस पर
खत्म होगा गेम
नंदू के पक्ष में
तो आपकहेंगे
चल हराता हूँ तुझे
दूसरे गेम में।
और इस तरह चलेगा
बेस्ट अहफ फाइव
दोनों पसीने से होंगे तरबतर
तभी दालान के आर पार
चलेगी
गर्मी की शाम की हवा
धीरे धीरे
दोनों के शरीर होंगे
एक सुखद ठंडक से भरपूर
धीरे धीरे
और इतने हल्के
कि उड़ने उड़ने को होंगे हवा में।
तभी शायद आप कहें
पकड़ कर उसका हाथ
चल, अब हो जाये
एक कप चाय।

संतोष चौबे

खेलेंगे जी जान से

कोविड-१६ की आँधी में भी डटे रहे मैदान में
ओलंपिक खेलने पहुँच गए भारत की शान में।

कोविड प्रोटोकह्ल को भी हमने रखा ध्यान में
जीत का लक्ष्य मन में रखके पहुँच गए जापान में।

महामारी के कठिन दौर में उम्मीदों का रंग लिए
कसर न रखी तैयारी में उत्साह और उमंग लिए
लहराएंगे विजय का परचम धरती-आसमान में।।

हो कोई भी मैदान खेल का,खेलेंगे जी-जान से
बैठ हौसलों की कश्ती पर टकराएँ तूफान से
फहराएंगे जीत का ध्वज हम शान से हिंदुस्तान में।।

विश्वव्यापी महामारी का कहर अभी तक है जारी
विषम परिस्थितियों में भी हमने हिम्मत ना हारी
दृढ़संकल्प विजय का लेके दिल में और अरमान में।।

ना गले मिलें,ना हाथ मिलाएँ, करें दूर से अभिवादन
मास्क और सैनिटाइजर के संग नियमों का पालन
कौशल और अभ्यास दिखाएंगे हम सकल जहान में।।

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन से हम भारत की शान बढ़ाएंगे
सब खेलों में हम ट्राफी और पदक जीतकर लाएंगे
गाएंगे मिलकर राष्ट्रगान सब भारत के सम्मान में।।

चंचल हरेंद्र वशिष्ट
आर के पुरम,
नई दिल्ली-११००२२

अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट की पूर्व कप्तान झूलन निशित गोस्वामी।

हिन्द की आन है, हिन्द की शान है
हिन्द की बेटियों पर, हिन्द को गुमान है
हिन्द की बेटियों का, विश्वभर मे गुणगान है।
क्रिकेट की सुनामी है ये, झूलन गोस्वामी है ये
शत शत नमन इन्हें , शत शत प्रणाम है।

पश्चिम बंगाल के नादिया मे जन्म लिया
पिता निशित गोस्वामी का हर्ष भी अपार था।
चकदा कस्बे की माटी हुई धन्य - धन्य जब
झूलन का देखा स्वप्न हुआ साकार था।
हिन्द की झूलन पर सबको अभिमान है
माँ झरना की पावन कोख को प्रणाम है।
क्रिकेट की सुनामी है ये, झूलन गोस्वामी है ये
शत शत नमन इन्हें ,शत शत प्रणाम है।

लंबा इनका कद है, लंबी उछाल है
टेस्ट क्रिकेट, वन डे, ट्वेंटी ट्वेंटी मे कमाल है।
हरफनमौला झूलन, शान -ए -बंगाल बनी
भारतीय महिला क्रिकेट की बनी सदा ढाल है।
राइट हैंड बल्लेबाजी, मध्यम तेज गेंदबाजी
सर्वाधिक विकेट लेने का श्रेय इनके नाम है।
क्रिकेट की सुनामी है ये, झूलन गोस्वामी है ये
शत शत नमन इन्हें, शत शत प्रणाम है।

इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, अफ्रीका, बांग्लादेश
अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट की वो तेज गेंदबाज है।
१२० किलोमीटर प्रतिघंटा से गेंद फेके
नादिया एक्स्प्रेस की बड़ी तेज रफ्तार है।
आई सी सी क्रिकेटर ऑफ दि ईयर जीता
उत्तकृष्ट खेल उनके श्रम का प्रमाण है।
क्रिकेट की सुनामी है ये, झूलन गोस्वामी है ये
शत शत नमन इन्हें ,शत शत प्रणाम है।

देश का श्रेष्ठ गौरव पद्मश्री नाम इनके
अर्जुन अवार्ड देकर दिया इन्हें मान है।
विश्व मे तेज गेंदबाजी की मिसाल बनी
महिला क्रिकेट की ये पूर्व कप्तान थी।
सर्वगुण संपन्न, अद्भुत खेल अनुपम
विश्व भी झुक झुक करता सम्मान है।
क्रिकेट की सुनामी है ये,झूलन गोस्वामी है ये
शत शत नमन इन्हें , शत शत प्रणाम है।

डॉ शिप्रा शिल्पी सक्सेना
जर्मनी

स्वीडन में खेल

मनुष्य के जीवन में खेलकूद का बहुत महत्व होता है किसी दार्शनिक ने कहा है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है जब हम इससे वाक्य की ओर ध्यान देते हैं तो शरीर के स्वास्थ्य के लिए जरूरी है कि शरीर के हर आयो क्रियाशील हो और इस क्रियाशीलता में हमें मानसिक संरचना के दृढ़ होने का पता चलता है मानव अपने जन्म से ही विभिन्न प्रकार के खेलों की ओर आकृष्ट रहा है और उसके द्वारा उसका यह प्रयास उसके जीवन में उसे सफलता की सीढ़ियां चढ़ने में मदद करता है।

विश्व में खेल एक महत्वपूर्ण क्रिया विधि के रूप में देखा जाता है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना एवं अपने समुदाय का विकास करता है खेलों में हमारी प्रतिभा गीता हमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की ओर ले जाती है जिससे हम अपना सर्वांगीण विकास करने में सक्षम होते हैं खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण पहलू है जीवन में खुशहाली एवं स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए खेलकूद का होना अति आवश्यक है जब भी कभी हम खेलों की ओर आगे बढ़ते हैं तो निश्चित रूप से हमें अपने जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों की ओर ध्यान देने का अवसर मिलता है खेल हमारी अस्मिता के परिचायक हैं इनके द्वारा हम अपने लिए नई उपलब्धियों का सृजन करते हैं।

मैं मूल रूप से भारत में जन्म लेने के उपरांत स्वीडन में अपनी कर्मभूमि बनाने एवं सर्व रूप से अपने एवं अपने कर्म भूमि के विकास हेतु तत्पर रहने वाला व्यक्ति हूं स्वीडन अपने आप में अपनी तत्परता समय बदलता एवं कार्य करने में समर्पित लोगों का देश है यहां कई तरह के खेलों का प्रचलन है जो यहां के लोग खेलते आए हैं मैं व्यक्तिगत रूप से खेलों को बहुत पसंद करता हूं खेलों को पसंद करने के दो तरीके हैं एक तो उन्हें खेल आ जाए और दूसरा उन्हें देखा जाए जब हम खेल रहे होते हैं तो उस समय हमारी प्रतिभा गीता होती है लेकिन जब हम देख रहे होते हैं तो हम प्रतिभागियों को प्रेरित करते हैं खेल के अलग-अलग नियमों और अलग-अलग विधियों को देखते हैं और सर आते हैं।

मनुष्य की जिंदगी में खेल कूद का होना बहुत जरूरी हे। खेल कूद स्वीडन की रोज की जिंदिगी का हिस्सा हे या में कहूँ की स्वीडन के बच्चे स्कूल शुरू होते ही कुछ ना कुछ खेल खेलते हे . बचो के खेल कूद में माँ बाप को बहुत बडा हाथ होता है .आज स्वीडन में मुझे ३१ वर्ष हो गए हे.स्वीडन युरोप के उत्तर में है करीब १६ मिल्यन की जनसंख्या वाले इस देश की आधी से ज़्यादा लोग किसी ना किसी रूप में खेलो से जुड़े हुए है।

जिस प्रकार भारत में क्रिकेट की पूजा की जाति हे और ये आम आदमी का खेल है उसी प्रकार फुट्बहल को भी स्वीडन को एक धर्म की तरह से देखा जाता है। फुटबॉल दुनिया के अधिकतम देशों में ठेला जाता है इसके कई क्लब देशों में प्रचलित है जिनके माध्यम से खिलाडी अपने देश की अस्मिता के लिए खेलते हैं स्वीडन में फुटबहल बहुत ही पसंद है यहां का एक नागरिक फुटबहल को बहुत अधिक पसंद करता है खास करके स्कूल बच्चे और स्कूल में फुटबहल की प्रतियोगिताएं हमेशा होती रहती हैं फुटबहल की प्रतियोगिताएं विद्यालय स्तर पर और विद्यालय स्तर के बाद अंतर विद्यालय ही असर पर अक्सर खेली जाती रहती है विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रकार के आयोजन की जाते रहते हैं। इसी प्रकार अंतर जन पति है एवं विभिन्न अकाउंट फिल्मों से खेलने का असर इन तैयारियों को मिलता है और यहां से निकलने वाला ि खलाडी उसे होता है वह देश का प्रतिनिधित्व करता है हमने पहले कहा कि यहां पर फुटबहल को पूजा और धर्म के समान माना जाता है यह यहां के लोगों के रग-रग में बसी हुई एक धारणा है।

दुनिया के कई अच्छे खिलाड़ी में कुछ खिलाड़ी स्वीडन से भी है। आज के वक्त दुनिया में स्वीडन का खिलाड़ी ज्लैटन ब्राहीमोविक (Zlatan Ibrahimovic) का बहुत बड़ा नाम है।थामस रवेली (Thomas Raveli) अपने टाइम में दुनिया के सेकंड बेस्ट गोल कीपर थे। हाँ जब फुट्बहल की बात होती हे तो मेरे दोनो बेटे और बेटी फुटबाल के अच्छे खिलाड़ी रहे हे। मेरी बेटी सोनिया भी स्कूल टाइम तक फुट्बहल खेलती रही है और एक अछी गोल कीपर रही है। विद्यार्थी जीवन में खेलों में प्रतिभाग करना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है हर बच्चा यहां निश्चित रूप से किसी न किसी खेल से जरूर झूला होता है यह खेल उसके जीवन की पहचान के रूप में उसे उतारते हैं कुछ खेलों को अपनी जिंदगी की तपस्या मान लेते हैं और उसी में आगे बढ़ते चले जाते हैं। स्वीडन में फुटबहल को बच्चे बच्चे के लिए बहुत ही उपयोगी एवं आवश्यक माना जाता है बच्चे तो बच्चे उनके शि क्षक और उनके मां-बाप भी यह चाहते हैं कि उनका बच्चा खेलों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लें और देश का मान बढ़ाएं।

स्वीडन में क्रिकेट का खेल उतना लोकप्रिय नहीं है या यह कहें कि क्रिकेट यहां पर नहीं खेला जाता इसका मुख्य कारण यह है कि यहां का वातावरण और यहां की जलवायु क्रिकेट खेलने के लिए उपयोगी नहीं है।

दूसरे खेलो में बैंडी टेनिस (bandy Tennis) sking भी यहाँ का चर्चित खेल है। टेनिस खिलाड़ी बजोन बोर्ग (ठरद्धतद ठवतह) को कौन नहीं जानता। अपने समय में पांच बार के बिंबलडन चैंपियन (wimbledon champion) रहे ब्योर्न बोर्ग (Björn Borg) दुनिया का जाना पहचाना नाम है। मेरे विचार में स्वीडन में खेल जीवन का एक हिस्सा हे

इसका एक फायदा सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है हम जानते हैं कि समाज में सर्वांगीण विकास के लिए

खेलों का होना अत्यंत आवश्यक है जिससे कि हमें जान पहचान भी मिलती है और आजीविका में आगे बढ़ने का महत्वपूर्ण रास्ता भी यहीं से बनता है। जब इंबबीम जतंपदपदह में जाते हे तो माँ बाप भी साथ में जाते है।जिससे लोगों का आपस में मिलना जुलना हो जाता है।

स्वीडन में विद्यार्थियों के लिए स्विमिंग भी अत्यंत आवश्यक है और विद्यालय में बच्चों के लिए स्विमिंग करना बहुत महत्वपूर्ण होता है विद्यालय में स्विमिंग के लिए अलग से कोच रखे जाते हैं और विद्यार्थियों को स्विमिंग सिखाया जाता है जिससे कि उनकी मांसपेशियां बलिष्ठ होती हैं और वह अपने जीवन में आने वाले समस्याओं का बहुत ही मजबूती से सामना कर पाते हैं। स्विमिंग भी स्कूल में जरूरी हे हर किसी को स्विमिंग आती है। हाँ मेंने भी स्वीडन आके स्विमिंग सीखी थी।

इस प्रकार देखते हैं हम कि स्वीडन में १० विलियन की जनसंख्या वाले इस देश के लोगों द्वारा खेलों को अच्छी प्राथमिकता दी जाती है सभी लोग अपने जीवन में स्वयं के साथ-साथ अपने बच्चों के लिए खेलों की उपयोगिता पर और आवश्यकता पर विशेष ध्यान देते हैं जिससे कि देश अपने आप को फिट रख सके विंबलडन में देश का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ी रहे हो या फुटबह्ल में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले निश्चित तौर से स्वीडन ने दुनिया को बहुत महत्वपूर्ण खिलाड़ी दिए हैं जिसका प्रभाव विद्यालय जीवन में यहां के बच्चों पर भी पड़ता है और वह आगे बढ़ते हैं।

सुरेश पांडे

दो मुक्तक

वीरों की परिपाटी याद दिला दी है।
मेवाड़ी वो माटी याद दिला दी है।
नीरज तुमने फेका राणा सा भाला,
फिर से हल्दीघाटी याद दिला दी है।
२
तुम्हारे खेल ने नीरज, सभी का दिल चुराया है।
दिला दी याद राणा की,कि यों भाला घुमाया है।
दिलाकर स्वर्ण भारत को,बढ़ाया मान दुनिया में,
तिरंगा शान से लहरा,नया इक जोश आया है।

बलराम निगम
झालावाड़, राजस्थान,भारत

बदलाव की गति...उन्नति अथवा अवनति

पिछले छह-सात दशकों में आये बदलाव आश्चर्यचकित कर जाते हैं जब हम सिंहावलोकन करते हैं जनजीवन को खेल-शिक्षा-परिवार और समाज की दृष्टि से। सीमित संसाधनों में बीता बचपन, सत्तर का दशक आँखों के आगे चलचित्र सा घूम जाता है। एक कमरा और एक रसोई का छोटा-सा हिस्सा ! जिसमें हम पाँच बच्चे, मम्मी-पापा, अम्मा-बाबा जो चौक वाले बड़े घर में किराए पर रहते थे। चौक के दूसरी ओर भी लगभग इतना ही बड़ा परिवार और ऊपर की मंजिल में मकान-मालिक का परिवार। अरे हाँ! हमारे पोर्शन के साथ ही के कमरे में मकान-मालिक के छोटे बेटे का परिवार। तो लगभग सभी की वस्तुस्थिति यही थी कि घर में जगह कम और बाशिंदे ज़्यादा। मनोरंजन के नाम पर पड़ोस में रहने वाले बच्चों के साथ घर से बाहर गली में रस्सा-कूदी, छिपन-छिपाई, दौड़, पिठ्ठू, खो-खो और भागने वाले सभी खेल। मतलब ये कि हम बच्चे स्वयं और बड़े भी, यही चाहते थे कि कब खाना खा कर, पढाई का कार्य समाप्त कर घर से बाहर निकलें और सहेलों-सहेलियों के साथ खेलें। शरीर की वर्जिश तो खुद-ब-खुद हो जाती थी। फिर दौड़े आते थे घर को, कुछ खाने-पीने। घर के भीतर खेलने वाले तो कुछ ही खेल थे जैसे कैरम, चौस(शतरंज), गिट्टे और लूडो का देसी-वर्जन जो इमली की गिटकों और बटनों की गोटियाँ बना कर खेलते थे। घर में ले-दे के एक रेडियो और एक छोटा-सा ट्रांजिस्टर हुआ करता था जो मनोरंजन और बाहरी संसार की जानकारियों का साधन हुआ करता था और पापा यही कहते थे कि हिन्दी-अंग्रेजी दोनों अखबार पढ़ो, साथ में रेडियो पर भी दोनों भाषाओं की खबरें सुनो। इसी चक्कर में कभी-कभी पंजाबी और उर्दू के समाचार भी सुन लेते थे हम। पूरी बात का लब्बो-लबाब यह कि घर के बाहर के खेल बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखते थे बच्चों की दिनचर्या में। इसके साथ ही घर में टेलीविजन का न होना भी खेल-कूद और कहानियाँ-उपन्यास पढ़ने का एक विशेष कारण था।

आज के जमाने के बच्चे और कुछ बड़े भी उस समय के खेलों का अंदाजा नहीं लगा सकते और आँखें बड़ी करके व्हाट्सअप पर फह्र्वर्डेड विडियो इत्यादि में वो खेल और बच्चों की उन्मुक्त हँसी देखते हैं। दरअसल, पिछले कुछ दशकों में विकास या कहें बदलाव की गति बहुत तेज रही है विशेषकर तकनीकी के लिहाज से।

मुझे याद आ रही है एक फीचर फिल्म 'दर्द का रिश्ता' जिसमे पहली बार 'लैंडलाइन टेलीफोन से हटकर 'पेजर' का प्रयोग दर्शाया गया था जो कुछ खास लोगों जैसे कि डॉक्टर्स, पुलिस, आर्मूड फोर्सेज इत्यादि के प्रयोग के लिए होते थे।

देखते-देखते ही पेजर की जगह मोबाइल फोन्स ने ले ली और ऐसे कि आज एक छोटी धनराशि में स्मार्ट फोन हर एक के हाथों में आसानी से उपलब्ध है चाहे वह रिक्शा चलाने वाला हो या कोई घरों में बर्तन-सफाई आदि का काम करने वाली मेड।

आम विद्यालयों में बच्चों के लिए इनका प्रयोग यद्यपि वर्जित है किन्तु फिर भी बच्चे छुप-छुपाकर इनका प्रयोग करते हुए देखे जा सकते हैं। मुद्दे की बात यह है कि तकनीक का विकास और संयुक्त परिवारों का टूटकर एकल परिवारों में बंट कर बिखर जाना कारण बना है बच्चों का घर में कैद हो जाने काद्य बच्चे सारा समय टेलीविजन या कंप्यूटर या मोबाइल से चिपककर सारा समय शारीरिक व्यायाम वाले खेलों से दूर हो गए हैं, और दूर होते जा रहे हैंद्य कुछ गिने-चुने बच्चे ही घर के आराम से बाहर निकल कर क्रिकेट, फुटबहल, टेनिस इत्यादि स्पोर्ट्स के लिए तन-मन से मेहनत करते हैं। एकल परिवारों में दोनों अभिभावक यानी मम्मी-पापा ही अधिकांशतः कामकाजी होते हैं इसलिए अपने बच्चों के सन्दर्भ अधिक सुरक्षा चाहते हैं, घर से बाहर निकलने नहीं देते, ओवर प्रोटेक्टिव रहते हुए अन्य बच्चों से मिलने-जुलने (मिक्स-अप) नहीं देते। इसी के चलते अपने बच्चों को इंडोर-घर में खेले जाने वाले खेलों में व्यस्त देखना चाहते हैं। इस तरह यह सिमट कर एक हथेली में समा जाने वाले मोबाइल तक सीमित हो कर रह गया है। छोटी-बड़ी आँखों पर बड़े-बड़े नंबर वाले चश्मे और उंगलियाँ एक मशीन की तरह मोबाइल या टेबलेट कंप्यूटर पर चलती हुईं। दिमागी भाग-दौड़ शारीरिक व्यायाम का स्थान चुरा लेने में कामयाब हो गयी है । खेलों में खेल रह ही नहीं गए केवल मार-धाड़ और रेस वो भी केवल उँगलियों और दिमाग की ।यह शोचनीय और चिंतनीय स्थिति है हमारी भावी पीढ़ी के लिए ।

सोने पे सुहागा पान्डेमिक कोविड ने कर दिया। लॉकडाउन में बिजनस और ऑफिस वगेरेह घर में आ गए तो आभासी दुनिया बच्चों के लिए अनिवार्य आवश्यकता हो गयी। खेल तो खेल पढाई का जरिया भी मोबाइल हो गए हैं। जरूरत -बेजरूरत मोबाइल जिन्दगी का , जींवन शैली का अंग बन गए हैं। ऐसे में खेल !!!!!!!!!!!! खेल के लिए बच्चों का बाहर निकलना, पास-पड़ोस के अन्य बच्चों से मिलना, मिलकर समूह में खेलना , खेल-भाव को सीखना, आत्मसात करना हमारी सोच, व्यवहार और प्रयासों में शामिल होना चाहिए । मानसिक संतुलन को स-शक्त करने लिए भी खेल विशेषकर सामूहिक खेल आवश्यक हैं।

उन्नत समाज में परम्पराओं की जगह कायम रहनी उतनी ही आवश्यक है जितनी नवीन आविष्कारों और खोजों की। मजबूत जड़ें भरे-पूरे वृक्ष की बुनियाद होती हैं। अतः उन्नति के सकारात्माक पक्ष को अपनाते हुए अवनति से बचा जा सकता है। शिक्षा और खेल दोनों ही पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बने रहने चाहिए क्यूंकि वे नैतिक मूल्यों और संस्कारों को पोषित करते हैं। परिवार, समाज, देश और विश्व का मजबूत आधार बनते हैं।

पूनम माटिया,
दिल्ली, भारत

खेल : जीवन का उत्तम शिक्षक

''शरीरामायं खलु साधनाम'' कालिदास जी का यह कथन जीवन की पहली आवश्यकता स्वस्थ शरीर है पूर्णतया सत्य है। स्वस्थ शरीर तन को स्फूर्ति दायक और मन को आनंदित र खने में सहायक होता है हम स्वस्थ शरीर स्वास्थ्यप्रद मानसिक एवं शारीरिक गतिविधियों के फलस्वरुप ही प्राप्त कर सकते हैं।

पुरातन काल से स्वस्थ जीवन शैली के लिए खेल ही सबसे रोचक गतिविधि माना गया है। शारीरिक और मानसिक दो प्रकार के खेल होते हैं और हर एक प्रकार का खेल जीवन को अनुशासित करता है खेल शारीरिक , सांवेगिक और बौद्धिक विकास में अहम भूमिका निभाते हैं । नियमित रूप से खेलना हमारे शारीरिक और मानसिक कोशलता में निरंतर सुधार लाता है। हमारे अंदर प्रेरणा साहस और त्वरित निर्णय क्षमता जैसे गुणों का निर्माण खेल बखूबी करते हैं ।खेल द्वारा शारीरिक परिवर्तन भले ही हम व्यक्ति में आसानी से देख सकते हैं परंतु मानसिक परिवर्तन सिर्फ वही व्यक्ति महसूस करता है जो खेलता है । किसी भी सामान्य व्यक्ति से एक खिलाड़ी का मानसिक स्वास्थ्य उत्तम दे खा गया है ।

हार और सबक का अटूट साथ

खेल का यह मनोवैज्ञानिक पहलू समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। खेल ही व्यक्ति में निहित आत्मबल को नियंत्रित करता है । जीवन के जो सबक विद्यालय ,शिक्षक, किताबें, अभिभावक नहीं सिखा पाते वह हम खेल द्वारा स्वतः ही सीख जाते हैं । जीवन में यदि किसी व्यक्ति का मनोबल टूट जाए तो उस व्यक्ति को पुनः सामान्य करना बहुत कठिन कार्य है घर ,कार्य क्षेत्र कहीं भी एक बार मनोबल टूटने के पश्चात पुनः सबल होकर खड़े होने में बहुत समय लगता है वही हार के बाद अपने नजरिए को टीम सदस्य , आलोचकों ,मित्रों के समक्ष कैसे व्यवहार करना है खेल में हारने के बाद हम स्वतः ही सीख जाते हैं खेल ही ऐसी गतिविधि है जिससे व्यक्ति पूर्णतया दबाव की स्थिति में उचित निर्णय लेना और उसका सही दिशा में क्रियान्वयन कैसे करना है खेल के दौरान सीखता है । खेल के दौरान लिए निर्णय को चाहे वह गलत हो, सहर्ष स्वीकार करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य है ।खेल में मिली हार व्यक्ति को बहुत कुछ सिखा जाती है वह त्रुटियां जो वह स्वयं के कार्यान्वयन मूं ढूंढता है ना कि दूसरों की ओर उंगली उठाता है अपने आत्म बल और शारीरिक बल को त्रुटि अनुसार सुधारने का पूर्ण यत्न करने लगता है।

समायोजन में सहायक खेलः

मानव जीवन में समायोजन का महत्वपूर्ण स्थान है हर क्षेत्र हर उम्र में समायोजन यदि उत्तम होगा तो व्यक्ति निरंतर प्रगतिशील ता की ओर अग्रसर रहेगा । जो बच्चे खेलों में निरंतर भाग लेते हैं वह अन्य सामान्य बच्चों की अपेक्षा संवेगात्मक

टोक्यो ओलंपिक एवं पैरालंपिक खेल-2021

दृष्टिकोण से अधिक स्थिर और मूल्यवान होते हैं सभी भेदभाव (रंग, जाति, क्षेत्र)को भूलकर मैत्री ,सद्भावना ,सहयोग जैसे मूल्यों का विकास उनमें आसानी से देखा जा सकता है।

किसी भी खिलाड़ी का आत्म नियंत्रण बहुत ही अच्छा होता है । क्योंकि जहां जीत की खुशी उसका आत्मबल बढ़ाती है तो वही हार के बाद का हौसला उसे जीवन पर्यंत तराशते रहते हैं।

संबल का एकमात्र विकल्पः

खेल ही ऐसी गतिविधि है एकमात्र जो कि व्यक्ति को हारने के बाद भी बार- बार साहस से खड़ा होने का मौका देती है जबकि जीवन के कोई कार्य क्षेत्र हो वहां हार के बाद व्यक्ति को सदैव नीचे निगाह करके खड़ा होना पड़ता है परंतु खेल मे हारने के बाद भी व्यक्ति को अपने अंदर की कमियों को सुधारने का हर बार मौका देता है ।

खेल एक चिकित्सा विज्ञान :

विज्ञान की दृष्टि से जब खेल को देखा जाता है तो पैरालंपिक खेल का जिक्र आना स्वाभाविक है। इन खेलों की शुरुआत ही चिकित्सा के रूप में हुई थी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्पाइनल चोट के शिकार सैनिकों को ठीक करने के लिए इस खेल की शुरुआत हुई थी ।१९४८ मैं एक न्यूरोलहजिस्ट सर गुट्टमान ने घायल सैनिकों के पुनर्वास के लिए खेल को चुना उन्होंने कई अस्पतालों के मरीजों को इन खेलों में प्रतिभागी बनाया फल स्वरुप उनका प्रयोग सफल रहा और यहीं से पैरालंपिक खेलों की शुरुआत हुई ।

सोनिका कुलश्रेष्ठ
शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश)

भारत के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन...

कोरोना महामारी की चुनौतियों के बावजूद जापान की राजधानी टोक्यो में दुनिया के सबसे बड़े माने जाने वाले खेल ३२वें ओलंपिक का सफल आयोजन हुआ। इस ओलंपिक के ३३९ स्पर्धाओं में ११हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया और पूरे विश्व को एकजुटता का संदेश दिया।

यद्यपि यह टोक्यो ओलंपिक वर्ष २०२० में आयोजित किए जाने थे पर पूरे विश्व में अचानक आए कोरोना महामारी के चलते न हो सके। इसे इस वर्ष २०२१ में आयोजित किया गया। जो २३ जुलाई से ०७ अगस्त तक चला।

इस ओलंपिक से भारत को भी खूब उम्मीदें थी। भारतीय खिलाड़ियों ने अपना शौर्य दिखाया और एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक के साथ सात पदक अपने नाम किए। भारतीय खिलाड़ियों ने कमाल का प्रदर्शन कर इतिहास में नाम दर्ज कराया। भारत ओलंपिक खेलों में वर्ष १९०० से भाग ले रहा है। पहली बार भारतीयों ने एक ओलंपिक में इतने पदक जीते हैं। इसके पूर्व वर्ष २०१२ के लंदन ओलंपिक में ६ पदक हासिल किए थे।

१२१ वर्ष बाद एथलेटिक्स में पदक मिला-

भारतीय ओलंपिक में १२१ वर्ष बाद जैवलिन थ्रो में पानीपत (हरियाणा) के २३ वर्षीय नीरज चोपड़ा ने ८७.५८ मीटर का भाला फेंककर स्वर्ण पदक जीता।

कुश्ती में दो पदक मिले-

भारत ने ८ साल बाद कुश्ती में दो पदक जीते हैं। भारत की ओर से रवि कुमार दहिया ने रजत और बजरंग पूनिया ने कांस्य पदक जीता।

हॉकी में ४१ वर्ष बाद पदक मिला-

भारत ने ४१ वर्ष बाद ओलंपिक हहकी में कांस्य पदक प्राप्त किया है। इसके पहले भारत ने वर्ष १९८० में स्वर्ण पदक जीता था। भारतीय हॉकी महिला टीम ने भी शानदार खेल दिखाया और सेमीफाइनल में जगह बनाई पर पर टीम कोई पदक न पा सकी। लेकिन पहली बार भारतीय महिला टीम चौथे स्थान पर रही।

नीरज चोपड़ा के जैवलिन थ्रो में मिले पदक के साथ ही भारत अब तक ओलंपिक इतिहास में १० गोल्ड मेडल जीत चुका है। आठ गोल्ड मेडल हहकी खेल में, जैवलिन में नीरज चोपड़ा व निश. ानेबाजी में अभिनव बिंद्रा गोल्ड मेडल दिला चुका हैं।

भारत ने टोक्यो ओलंपिक में एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य सहित कुल सात पदक जीते हैं। नीरज ने भाला फेंक में स्वर्ण, मीराबाई चानू ने भारोत्तोलन में रजत, रवि दहिया ने कुश्ती में रजत, लवलीना ने मुक्केबाजी में कांस्य, पीवी सिंधू ने बैडमिंटन में कांस्य, बजरंग पूनिया ने कुश्ती में कांस्य और भारतीय हहकी टीम ने कांस्य पदक जीता है। भारत पदक तालिका में ४७वें स्थान पर है।

भारत के लिए यह ओलंपिक इस मायने में भी महत्वपूर्ण

है कि कुल सात पदकों में से तीन पदक बेटियों ने दिलाया है। साथ ही पुरुष हहकी टीम ने कांस्य पदक जीत कर गौरवशाली अतीत को दुहराने की उम्मीद जगाई है। ओलंपिक में आठ बार स्वर्ण पदक हासिल कर चुके भारत को ४१वर्ष बाद कांस्य पदक मिला है। मि. हला हॉकी टीम ने भी शानदार खेल का प्रदर्शन किया और पहली बार सेमीफाइनल मुकाबले तक पहुँची।

टोक्यो ओलंपिक में १७ दिन के हुए खेल में १७ नए विश्व रिकहर्ड बने।

अमेरिका पदक तालिका में सर्वोच्च रहा-

अमेरिका ३९ स्वर्ण, ४१रजत, ३३ कांस्य कुल (११३) पदक जीतकर सर्वोच्च स्थान पर रहा। चीन ३८ स्वर्ण, ३२ रजत व १८ कांस्य कुल (८८) पदक जीतकर दूसरे स्थान पर और जापान २७ स्वर्ण, १४ रजत व १७ कांस्य कुल (५८) पदक जीतकर तीसरे स्थान पर रहा। भारत पदक तालिका में ४७वें स्थान पर रहा।

ओलंपिक के बाद पैरालंपिक खेल-

ओलंपिक के बाद पैरालंपिक खेल २४ अगस्त से ०५ सितंबर तक हुए भारत ने भी इस खेलों में अपनी भागीदारी की। भारत का ५४ सदस्यीय दल ने इन खेलों में अपने प्रतिभा का प्रदर्शन कर इतिहास रच दिया। ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए इस बार भारतीय खिलाड़ियों ने ५ स्वर्ण, ८ रजत और ६ कांस्य पदक झटके। कुल १९ पदक हासिल कर पदक तालिका में २४वां स्थान प्राप्त किया।

जैसे कि उम्मीद जताई जा रही थी कि ओलंपिक की तरह भारतीय खिलाड़ी पैरालंपिक खेलों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। सच में वैसा ही हुआ। एथलेटिक्स में सबसे अधिक ८, शूटिंग में ५, बैडमिंटन में ४, टेबल टेनिस और तीरंदाजी में एक-एक पदक भारत को मिला।

पहली बार ऐसा हुआ कि भारत के पदकों की संख्या दोहरे अंकों में पहुँची। इसके पहले २०१६ रियो पैरालंपिक में २ स्वर्ण पदक सहित ४ कुल पदक प्राप्त किए थे।

खिलाड़ी जिन्होंने पदक हासिल किए-

भाविना पटेल- पैरालंपिक खेल- २०२१ में सबसे पहला पदक भाविना पटेल ने टेबल टेनिस के क्लास ४ वर्ग में रजत पदक प्राप्त किया।

निषाद कुमार- पुरुषों के टी ४७ हाई जंप में रजत पदक प्राप्त किया।

अवनि लखेरा- अवनि लखेरा ने पहला स्वर्ण पदक महिलाओं की २१० मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एस एच १ में हासिल किया। पैरालंपिक जीतने वाली पहली महिला खिलाड़ी भी अवनि बनी।

योगेथ कथुनिमा- पुरुषों के डिस्कस थ्रो ५६ में सिल्वर मेडल जीता।

सुमित अंतिल- जैवलिन थ्रोअर एफ ६४ वर्ग में स्वर्ण पदक जीता।

देवेंद्र झाझरिया- पैरालंपिक में दो बार के गोल्ड मेडलिस्ट देवेंद्र झाझरिया ने जैवलिन थ्रो एफ ४६ वर्ग में रजत पदक हासिल किया।

सुंदर सिंह गुर्जर- जैवलिन थ्रो के एफ-४६ में कांस्य पदक प्राप्त किया।

सिंह राज- शूटर सिंह राज ने पुरुषों के १० मीटर एयर पिस्टल एस एच १ में कांस्य पदक हासिल किया।

मारियप्पन थंगावेलु- मारियप्पन ने ऊंची कूद टी ६३ में सिल्वर मेडल जीता।

शरद कुमार- शरद कुमार ने ऊंची कूद टी ६३ में कांस्य पदक जीता।

मनीष नरवल- मनीष ने शूटिंग के ५० मीटर पिस्टल एस एच में गोल्ड मेडल हासिल किया।

प्रवीण कुमार- प्रवीण कुमार ने ऊंची कूद टी ६४ में सिल्वर पदक जीत लिया।

हरविंदर सिंह- हरविंदर ने तीरंदाजी में कांस्य पदक हासिल किया।

प्रमोद भगत- प्रमोद भगत ने गजब का खेल दिखाते हुए बैडमिंटन के पुरूष सिंगल्स एस एल ३ में स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

मनोज सरकार- मनोज सरकार ने भी बैडमिंटन खेल में कांस्य पदक जीत लिया।

सुहास यथिराज- गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) के जिलाधिकारी सुहास यथिराज ने बैडमिंटन के एस एल ४ में सिल्वर मेडल हासिल किया।

भारतीय खिलाड़ियों द्वारा टोक्यो ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों में शानदार प्रदर्शन से भविष्य में और अधिक आशा बलवती हो रही है के आगे अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में भारत श्रेष्ठ प्रदर्शन करेगा।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल ७३५५३०९४२८

स्टेडियम का ड्रेसिंग रूम

चल रहा है श्रृंखला का फाइनल क्रिकेट मैच
खेल लयगतिबद्ध.
बल्ले के घुमाव की कलात्मकता
और तीर-सी निकली
उछलती गेंद को लपकती
देहयष्टि की शक्तिसम्पन्न भंगिमा
कितनी सुरम्य!
छः गेंदों की आवृति के
किसी विशिष्ट दादरा ताल पर
मैदान में खास रण-कौशल से डटे
खिलाड़ियों की जीत की
अदम्य कामना की त्वरा की चौंध से
जगमग प्रभामंडल में
उद्भूत स्टेडियम भर का एक विश्व
कैसा मनचीता!

खचाखच भरा स्टेडियम
उत्साह और तनाव का धारासार जनरव
दर्शक दीर्घा भी कम नहीं मनोरंजक
स्कोर बोर्ड पर बढ़ते हुए अंक
किसी के लिए खुशी, तो किसी के लिए
उदासी का सबब

प्रतिद्वंद्वी दोनों पक्ष
अपना कौशल प्रदर्शित करते
एक-दूसरे को पछाड़ने में व्यस्त

ड्रेसिंग रूम में अपनी बारी के लिए
तैयार बैठे हैं खिलाड़ी
किसी के चेहरे पर व्यग्रता है अनछुपी
कोई नाखून कुतर रहा दाँतों से
कोई गंभीर है बहुत

वापस पेवेलियन लौट आया बल्लेबाज
अपनी नाखुशी तोलता
गलतियों पर कुढ़ता मन-ही-मन
कल्पना में डूबा है
यदि आउट नहीं होता उस गेंद पर तो
अबतक छक्कों-चौकों की बरसात कर
जीत लेता दर्शक मन
बना लेता रिकॉर्ड

कोई अन्य, जो है अनन्य
अनुभवी आँखों में जिम्मेदारी की रोशनी धारे
रणनीति विचार रहा
प्रतिद्वंद्वी सशक्त है बहुत
लेकिन हौसला रखना होगा बुलंद.

आज दिखा देगा वह दुनिया को
कितना है प्रतिभावान
इसी मैच से आरम्भ होगा उसका असल कैरियर
माता-पिता-गुरु-ईश्वर सभी को गोहराता
खिलाड़ी सबसे छोटा, ताजा

खेल अंत की ओर अग्रसर
जीत या हार की संभावना बराबर
बस बाल भर का अन्तर...

बस बाल भर के अन्तर से
पलट जाती है दुनिया
पलट जाता है जीवन.

अगर जीत गए, देश होगा गर्वित
करोड़ों लोगों के मन की मुराद
हो जाएगी पूरी

ड्रेसिंग रूम में बेचैन, एकाग्र
पिच और स्कोर पर काक दृष्टि जमाए
खिलाड़ी, कोच और कमेंट्रीबाज

जीत के अंतिम रन की व्यग्र प्रतीक्षा
और फिर...
दिलों का बल्लियों उछलना
आँखों का छलछला आना
करोड़ों दर्शकों की भी भीग आई पलकें
जीत के सिवा कुछ भी तो नहीं चाहिए।

सुमीता

सर्व सेवा संघ परिसर
राजघाट, वाराणसी
उत्तर प्रदेश, भारत

खेल

ऐसा कोई नहीं जिसको खेल ना आये पसंद
बच्चे, बूढे और जवान सबको खेल है आते पसंद ।
जब देखें क्रिकेट के वो चोंके और छक्के,
मैदान में हो जाते सब कैसे हक्के बक्के।
फुटबाल का एक एक गोल
भर जाता सबके मन में जोश
टेनिस और बैडमिंटन का मैदान में होता बहुत शोरगुल,
हर दर्शक को कर रोमांचित देता मन में हलचल ।
देख कर खेल कबड्डी,
दंग रह जाते बड़े बड़े फिसड्डी ।
शतरंज में चलते जब हाथी, घोड़े की वो चाल हैं,
बड़े बड़े दिग्गज के मस्तिष्क में आ जाता भूचाल है।
ऐसे कई अनेकों खेल हैं जिनका अपना ही होता अलग मजा है।
सोचे जब बिन खेलकूद के तो जीवन लगती एक सजा है।
खेल ही करता हरदम तन को तंदुरुस्त है,
रहता मन सदा खुश, दिमाग भी रहता चुस्त दुरुस्त है।
इसमें ना कोई जीत ना ही कोई हार है,
ये तो केवल देता जीवन को नित नया संचार है।

इन्दु बरौत
यूनाइटेड किंगडम

स्वर्णिमा – हिमा

हिमा, अपने लक्ष्य को छूने की लगन लिए
जब तुम दौड़ती हो,
और दौड़ते दौड़ते
निकल जाती हो आगे
सबसे आगे ,
हमारे देश की मिट्टी का चंदन,
तुम्हारे चमकते माथे पर खूब सजता है !

रेस की अंतिम रेखा को
सबसे पहले लांघ ,
पसीने से तरबतर ,
जब तिरंगा ओढ़ लेती हो
सुरखाब के पंखों सा ,
सच कहूँ ,
बहुत सुंदर लगती हो तुम !

और मुझे लगता है
मैं स्वप्न में देख रही हूँ
माँ भारती की
एक गुमनाम बेटी का स्वप्न
जो उसने देखने की हिम्मत की.....

यकीन ही नहीं होता
इस दृश्य पर !
तुम्हारी ओर तो कभी हमारा
ध्यान ही नहीं गया
‘ चियर अप ‘ करना तो दूर
तुम्हारी लगन को कभी सराहा ही नहीं
और तुम
पहुँच गई
सबसे ऊंचे शिखर पर
सबसे कठिन रास्ते को पार कर !

देश भर को समझा दिया,
‘ मंजिल पाने के लिए ,
रास्ता बनाना
और दौड़ना
सिर्फ इन?दोनों की जरूरत हैय
पाँव में जूता है या नहीं ,
कोई फर्क नहीं पड़ता!‘

“वाह स्वर्णिमा, वाह !”

नीलम वर्मा

खो खो खो

जंगल में सभी जानवर खूब खेलते, मौज-मस्ती, त्यौहार , पार्टी, पिकनिक भी किया करते । एक बार होर्सी घोड़ा, कैंडी कुत्ता, ब्लैकी भालू , मोंटी चूहा , पूसी बिल्ली , फ्लफी खरगोश , ब्राउनी तेंदुआ, जंपी बन्दर और डम्पी हाथी सभी की छुट्टी थी । उन सबने मिलकर एक पिकनिक की योजना बनाई । सभी नन्हे- मुन्ने जानवरों की माँ ने बढ़िया-बढ़िया खाने की चीजें तैयार की । डम्पी के पिता बिगी हाथी की पीठ पर सवार होकर सभी पिकनिक के लिए नदी के किनारे पहुँच गये द्य ठंडी हवा सरर - सरर कर चल रही थी, पेड़ों की शाखायें झूम झूम कर सभी का स्वागत कर रही थी । छोटे-छोटे पौधों में सुन्दर, रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे।

सुहावना मौसम और मन मे मस्ती, डम्पी बोला क्यों न हम खो-खो खेलें ।

“हाँ-हाँ आज तो हम खो-खो खेलेंगे । चलो सब उकडू बन कर जमीन पर बैठ जाओ” ब्राउनी स्वयं उकडू बन बैठ गया ।

“एक के बाद एक सब एक-दूसरे की विपरीत दिशा में मुँह कर बैठ जाओ” होर्सी हिनहिनाया । जंपी बन्दर अपनी आदत से मजबूर कभी इधर कूदता तो कभी उधर ।

“जंपी तुम अपनी जगह तय करो और उसी जगह बैठो” पूसी ने कहा ।

“अब मैं तुम्हें खेल के नियम बता देता हूँ” ब्लैकी बोला । हम सारे जानवर एक कतार में एक दूसरे की विपरीत दिशा में मुँह करके बैठे हैं । अब जिसको दाम देना है वह कतार के एक कोने में खड़ा हो जाए और दौड़कर पूरी कतार के चक्कर लगाए । दो- तीन या उससे ज्यादा चक्कर के बीच में वह बैठे हुए किसी भी जानवर की पीठ पर जा कर थपकी देकर “खा” बोलेगा । जिसकी पीठ पर थपकी लगी वह जानवर वहाँ से उठकर दौड़ेगा और दाम देगा । पहले वाला उसके स्थान पर बैठ जाएगा । अब यही प्रक्रिया दूसरा दाम देने वाला जारी रखेगा ।

“बोलो समझे?”

“हाँ- हाँ समझ गए” सभी जानवर एक साथ बोले ।

अब खेल शुरू हुआ । सबसे पहले होर्सी ने दाम दिया । उसने दौड़ते हुए तीन -चार चक्कर के बाद पूसी की पीठ पर अपने मुँह से थपकाया और बोला “खो” । पूसी उठकर दौड़ी और होर्सी ने उसका स्थान लिया । अब पूसी कतार के चक्कर लगा रही थी । अचानक से उसने फ्लफी खरगोश की पीठ पर जाकर थपकाया और बोली “खो”

खेल मैं सभी जानवर बहुत प्रसन्न नजर आ रहे थे और साथ में तालियाँ बजाकर झूम रहे थे । पूसी ने डम्पी हाथी की पीठ पर जाकर थपथपाते हुए बोला “खो” । डम्पी उठकर मस्त चाल में अपनी सूंड हिलाता हुआ दौड़ा । जब वह जंपी बंदर के पास बैठे ब्लैकी के पास से गुजरा तो ब्लैकी उठकर भागा । अब कतार में डम्पी और ब्लैकी दोनों दौड़ रहे थे ।

सभी जानवर एक साथ बोले “डम्पी अब तुम खेल से बाहर हो, तुम ने ब्लैकी को “खो” तो किया लेकिन स्वयं उसका स्थान नहीं लिया”

“अरे ! मैं ने कब खो किया, मैं तो अभी दौड़ ही रहा हूँ । मेरा ही दम है अभी तो” डम्पी ने सफाई पेश की ।

“तुमने मुझे पीठ पर थपकी दी और खो भी बोला डम्पी” ब्लैकी ने डम्पी को घुड़का ।

नहीं मैं ने तो “खो” नहीं बोला और थपकाया भी नहीं ।

“पर मुझे तो “खो” की आवाज सुनायी दी और तुम्हारी सूंड भी मेरी पीठ पर महसूस हुई” ब्लैकी अपने बचाव में बोल रहा था ।

मैं जब चलता हूँ तो मेरी सूंड दायें-बायें हिलती रहती है । हो सकता है उस वक्त मेरी सूंड तुम्हें छू गयी हो । लेकिन मैं ने “खो” तो नहीं बोला तो फिर तुम्हें खो की आवाज कैसे सुनायी देगी ?

सभी जानवर गहन सोच की मुद्रा में थे ।बात तो तुम्हारी सही है डम्पी पर कुछ तो गलतफहमी हुई है । अब समस्या है कि खेल से बाहर किसे निकालें ?

तभी फिर से “खो” की आवाज आयी । सब ने एक-दूसरे के चेहरे पर देखा । खो-खो जंपी बन्दर खाँस रहा था ।

“जंपी तुम खेल में गड़बड़ कर रहे हो” पूसी ने उसे डांट लगायी ।

“मैं क्या करूँ मुझे खांसी आयी तो” जंपी लापरवाही से बोला ।

सभी को जोर से हँसी आयी ।

पूसी बोली “जंपी तुम बहुत ही शैतान हो, कुछ न कुछ गड़बड़ करते रहते हो”

चलो खेल को आगे बढाओ, डम्पी तुम अभी भी दाम दे रहे हो ।

फिर से ब्लैकी अपनी जगह सतर्क हो कर बैठ गया था ।

अब जब भी खो की आवाज आती सब पहले जंपी को देखते और फिर दौड़ते ।

तभी फ्लफी की माँ स्नोई खरगोश की आवाज सुनायी दी “सभी बच्चे दौड़ कर आओ, हम सब खाना खायेंगे”

गर्म पकौड़े, जलेबी, सैंडविच का नाम और खुशबू से सभी के मुँह में पानी आ गया । वे सब खेल छोड़ कर खाने के लिए दौड़ पड़े ।

मगर जंपी तो उछलते- कूदते हुए “खो-खो” कर ही रहा था ।

रोचिका अरुण शर्मा
चेन्नई

सिक्किम की जैविक खेती

हमारे देश में खेती हमारी प्रमुख आजीविका है। हमारे देश के बहुत सारे लोग खेती के द्वारा ही अपनी भूमिका को सुनिश्चित करते हैं। जब खेती की बात आती है तो उसके साथ कई चीजें और जुड़ जाती है जैसे जमीन, फसलें, बीज, सिंचाई, निराई, गुड़ाई, जुताई तथा उन फसलों से प्राप्त अनाज का रखरखाव। इन सबके अलावा खेती में एक और महत्वपूर्ण इसका अंग है खाद। हम जानते हैं की खाद की दो किस्में हमारे देश मे प्रयोग की जाती हैं, एक देशी खाद तथा दूसरी रासायनिक खाद। जब हम रासायनिक खाद की बात करते हैं तो इसमें अलग-अलग तरह के उर्वरक आते हैं, जिनके माध्यम से हम अधिकाधिक उपज ले पाते हैं ।

उपज बढ़ाने के लिए खेतों में हम उर्वरकों का तो प्रयोग करते ही हैं, इसके साथ ही साथ फसलों को कीड़ों से बचाने के लिए कीटनाशकों का भी प्रयोग करते हैं । हमारे द्वारा खेती में उर्वरक और कीटनाशक का प्रयोग अनाज को और इसके असर को कमजोर कर देता है। यह अनाज कई तरह से हमारे लिए कठिनाई उत्पन्न करने वाला भी हो जाता है। ऐसे समय में यह चर्चा जोर पकड़ने लगी की भारत में सन १९६० में हरित क्रांति की शुरुआत से पहले खेती में किन-किन चीजों का प्रयोग किया जाता था। बढ़ती हुई जनसंख्या के उदरभरण एवम पोषण के लिए अनाज की अधिकाधिक उपज लेने हेतु हमारे देश में १९६० में हरित क्रांति शुरू की गई। हरित क्रांति की आवश्यकता के लिए उस समय की सरकार ने देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के आधार पर आवश्यकता अनुसार अनाज की जरूरतों पर ध्यान दिया। देश में परती पड़ी जमीन का शोधन करने के साथ-साथ उपज योग्य बनाने और हरियाली फैलाने पर काम किया गया। फल सब्जियों और अनाज की उपयोगिता ,उपज और खपत को देखते हुए हरित क्रांति को आगे बढ़ाने का काम किया गया ।इसी क्रम में पौधारोपण भी आता है । धरती की हरियाली हमेशा दुनिया में स्मृति लाती है। यह समृति मानव जाति के साथ-साथ संपूर्ण प्रकृति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सिक्किम प्रदेश में हरित क्रांति की शुरुआत के साथ उर्वरकों का और कीटनाशकों का क्रमशः प्रयोग किया जाने लगा। जिससे हम उपज तो ज्यादा ले पाए , हमारी धरती की उर्वरक क्षमता या उपज की क्षमता भी बढ़ी लेकिन वह अपने साथ बहुत सारी कठिनाइयों को और परेशानियों को भी लेकर आई। आज अनेक तरह की विसंगतियों और विषमताओं को देखते हुए खेत में देसी गोबर की और गोबर से बने अन्य कंपोस्ट खादो के प्रयोग पर जोर देते हुए कीटनाशक और उर्वरक के प्रयोग के बगैर उगाई गई सब्जियां,अनाज और फल की मांग धीरे-धीरे बढ़ने लगी। फल सब्जियां और अनाज की बढ़ती हुई मांगने वहां के किसानों को पूरी तरह आश्वस्त कर दिया कि उनकी मेहनत बेकार नहीं जाएगी और जैविक खेती के रूप में उनके द्वारा किया गया कार्य उन्हें समृद्ध बनाता जाएगा।

जब हम किसी फसल और सब्जी में उर्वरक और कीटनाशक का प्रयोग नहीं करते और उसे देसी गोबर की खाद या अन्य कंपोस्ट खादो से अनाज का उपज लेना प्रारंभ करते हैं तो खेती के इस स्वरूप को जैविक खेती के नाम से जाना जाता है। जैविक खेती आज के युग की मांग बनती जा रही है । हमारे देश में अलग अलग तरीके से सब्जियों, फलों और अनाजों के उत्पादन में बिना कीटनाशक और उर्वरक का प्रयोग किए उनके जैविक रूप से उत्पादन लेने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। बड़े ही खुशी की बात है कि सिक्किम हमारे देश भारत का प्रथम ऐसा प्रदेश है जिसे वर्ष २०१६ में पूरे तौर से जैविक खेती वाला प्रदेश घोषित किया गया । सिक्किम की प्रदेश सरकार ने जैविक खेती के अभियान की सफलता को निश्चित करने हेतु उसी समय सिक्किम में बाहर से किसी भी तरह के गैरजैविक खाद्य पदार्थों को लाने लेजाने पर भी पूरी तरह पा. बंदी लगा दी थे।

अनाज की जरूरत हमारी सबसे महत्वपूर्ण जरूरतों में शामिल है। १९६० ईशवी में हमारे देश भारत में हुई हरित क्रान्ति के माध्यम से हमारे देश ने अपने उपयोग के लिए पर्याप्त अनाज भंडार जमा कर लिया । लेकिन इसी भंडारण के साथ हमारे देश भारत में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का भी प्रयोग आम हो चुका था। हरित क्रांति के आगमन से हमारे देश में फल,सब्जियों एवम अनाज का उत्पादन तो बढ़ गया था लेकिन इससे हमारी खेती योग्य जमीन के साथ भूजल, वायु समेत सारे पर्यावरण पर असर पड़ना भी प्रारंभ हो गया था। हमारे देश में हुए इस परिवर्तन के दौर में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाना अति आवश्यक हो गया। हमारे देश भारत का हिमालयी प्रदेश सिक्किम प्रदेश विश्व का ऐसा पहला प्रदेश बन गया है जहां पूर्ण रूप से जैविक खेती होती है। यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि हमारे देश का एक प्रदेश पूरी तरह से जैविक खेती को अपनाने वाला बन गया और इसी के साथ साथ वह अपने यहां की मांग को पूरा करने के साथ-साथ विश्व की जरूरतों को पूरा करने वाला एक प्रमुख भारतीय प्रदेश बन कर उभरा।

आज सिक्किम प्रदेश पूरे संसार के लिए जैविक खेती के क्षेत्र में एक अनुकरणीय क्षेत्र बन गया है। खेती के परंपरागत तरीकों को अपनाने के इस अपार सफलता के लिए सिक्किम प्रदेश को इसकी सर्वश्रेष्ठ नीतियों और उनके क्रियान्वयन के लिए अहस्कर पुरस्कार से भी विभूषित किया जा चुका है। प्राप्त सूचना के अनुसार भारत का पूर्वोत्तर हिमलयी प्रदेश सिक्किम विश्व खेती के तुलना में लगभग ७५ ००० हेक्टेयर भूमि पर गैर रासायनिक खेती अर्थात जैविक खेती को अपनाकर अपने देश भारत और संसार का प्रथम पूर्ण जैविक प्रदेश बनने का गौरव प्राप्त किया है।इस महत्वपूर्ण गौरव को हासिल करने के बदले इस भारतीय प्रदेश सिक्किम को १५ अक्टूबर २०१८ को संयुक्त राष्ट्र की ख्यातिलब्ध एजेंसी खाद्य और कृषि संगठन ने भारतीय प्रदेश सिक्किम को उसकी सर्वश्रेष्ठ नीतियों और उनके अनुपालन के लिए अहस्कर पुरस्कार फ्यूचर पह्लिसी अवार्ड (थ्च्) दिया गया है।

यह पुरस्कार कृषि तंत्र और निरंतर खाद्य प्रणालियों को उत्साहित करने के लिए प्रदान गया है। सिक्किम प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। इस महत्वपूर्ण पुरस्कार को हासिल करने के लिए दुनिया के ५१ देशों में को उनके भूभागों के आधार पर विभिन्न प्रदेशोंध राज्यों-शहरों को नामांकित किया गया था। सिक्किम प्रदेश

के अनुभवो से जानकारी मिलती है कि शत प्रतिशत जैविक खेती को साकार करना एक सपना नहीं है बल्कि यह वास्तविकता की धरातल पर उतरा सकता है। सन २००३ में सिक्किम को जैविक प्रदेश घोषित करने के संकल्प के १५ साल बाद सन २०१६ में देश का पहला जैविक प्रदेश बनने का गौरव हासिल हो पाया था।

सिक्किम की राजधानियों हुए गंगटोक समिट में तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा इसकी विधिवत औपचारिक घोषणा की गई थी। इस घोषणा से लगभग ६६ ००० से ज्यादा किसानों को फायदा पहुंचा है। इसके साथ ही साथ शत प्रतिशत जैविक राज्य बनने से सिक्किम प्रदेश के पर्यटन क्षेत्र को भी काफी लाभ पहुंचा है। यहां वर्ष २०१४ से वर्ष २०१५ के मध्य सैलानियों की संख्या में पचास प्रतिशत से ज्यादा की बढ़ोत्तरी अंकित की गई है। वास्तव में सिक्किम प्रदेश नें भारत देश के दूसरे कृषि प्रधान प्रदेशों और विश्व के अनेक देशों के लिए एक मिसाल प्रस्तुत की है। विश्व की शीर्ष संस्था संयुक्त राष्ट्र की महत्वपूर्ण एजेंसी ने इसके इस कदम को भूख और निर्धनता से लड़ने वाले कदम के रूप में चिह्नित किया है। सिक्किम प्रदेश ने काफी लंबे समय तक खेती योग्य जमीन की उर्वरता बनाए रखने, पर्यावरण और पारिस्थितिकीय व्यवस्था के संरक्षण, सुरक्षा, स्वस्थ जीवन और हृदय संबंधी बीमारियों के बढ़ते खतरे को कम से कम करने के लिए इस उद्देश्य को प्राप्त करने का संकल्प लिया था। इस तरह की घोषणा से पूर्व सिक्किम प्रदेश के किसान रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग करते थे।

इस संबंध में पहले चरण के रूप में बनावटी उरवरकों और कीटनाशकों पर रोक लगाया गया। खेती के क्षेत्र में इनके प्रयोग पर पूरी प्रतिबंध का कानून बनाया और लागू किया गया। इस कानून के न मानने पर १ लाख रुपये तक के अर्थ दंड और ३ महीने तक की कैद अथवा दोनों का ही प्रावधान किया गया था। सिक्किम की राज्य सरकार ने राज्य में जैविक राज्य बोर्ड का गठन किया और देश विदेश की अनेक कृषि विकास और शोध से जुड़ी संस्थाओं के साथ अपनी साझेदारियां की। इसमें विश्व की प्रमुख स्विटजरलैंड की जैविक अनुसंधान संस्थान फिबिल भी शामिल है।

सिक्किम राज्य ने आर्गेनिक मिशन बनाने के साथ साथ क्रमशः आर्गेनिक फार्म स्कूल भी बनाए। प्रदेश सरकार के द्वारा ध ार-घर केंचुआ खाद इकाई, पोषण प्रबंधन और ईएम तकनीकि, एकीकृत कीट प्रबंधन तथा मृदा परीक्षण की प्रयोगशालाओं की शुरुआत की गई। इस कदम के साथ ही साथ अम्लीय भूमि उपचार, जैविक पैकिंग से लेकर प्रमाणीकरण तक की सभी वस्तुओं की उपलब्धता और इनके बारे में जागरुकता संबंधी कार्यक्रम बड़े पैमाने पर चलाए गए। आज सिक्किम प्रदेश दुनिया का पहला जैविक प्रदेश है। यह सिक्किम के साथ-साथ भारत के लिए भी गर्व की बात है। सिक्किम प्रदेश ने अपने प्रदेश के निवासियों के साथ साथ भारतवर्ष के कृषि मानचित्र में स्वयं के लिए एक गौरवपूर्ण स्थान हासिल किया।सिक्किम प्रदेश की उपज में प्रमुख रूप से बड़ी इलायची, हल्दी, अदरक, ऑफ–सीजन सब्जियां,फूल, सिक्किम नारंगी,किवी फल, कूटू, ाान, मक्का और जौ का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है। चूंकि सिक्किम प्रदेश के किसान कभी भी रसायनों पर आवश्यकता से अधिक निर्भर नहीं रहे इसलिए उनके द्वारा जैविक कृषि अपनाने से होने वाले उपज में किसी तरह की कोई बड़ी कमी नहीं आई। वैसे भी सिक्किम में पूर्व में रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों का उपयोग ८ से १२ किलो प्रति हैक्टेयर ही था। जैविक उत्पादों की दुनिया भर में काफी मांग है। बाजार में जैविक उत्पादों का अच्छा मूल्य मिलता है। स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जागरूक लोगों द्वारा जैविक उत्पादों को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। बीमारियों से बचाव के साथ-साथ एक स्वस्थ जीवन पद्धति के विकास के लिए पूर्वक युक्त खेती से बचते हुए जैविक खेती का प्रयोग और जैविक उत्पादों को अपने जीवन में अपन. ाने के लिए मानव जाति ने समग्र प्रयास किया जिसका ज्वलंत उदाहरण सिक्किम प्रदेश में देखा जा सकता है।

देश में कुल जैविक कृषि उत्पादन १२.४० लाख टन की तुलना में सिक्किम प्रदेश में लगभग ८० हजार टन कृषि उत्पादों का उत्पादन होता है। है। आज देश में करीब ३५ लाख हैक्टेयर जमीन में जैविक खेती हो रही है। आज भारत, दुनिया में जैविक खेती के क्षेत्र में एक नई ताकत बनकर उभर रहा है। जैविक खेती के माध्यम से देश में पर्यावरण संरक्षण होने के साथ-साथ जैव विविधता संरक्षण को भी बढ़ावा मिलता देखा जाता रहा है। जैविक खेती से न केवल भूमि की उर्वरता बढ़ती है बल्कि सूखे की समस्या से भी छुटकारा मिल जाती है। जैविक खेती से मित्र कीट भी संरक्षित रहते हैं। घटते हुए भू-जलस्तर के लिए जैविक खेती एक वरदान के समान है। इतना ही नही जैविक खेती अपनाकर किसान कृषि में आने वाली लागत को काफी हद तक कम कर सकता है।

भारत परंपरागत रूप से दुनिया का सबसे बड़ा जैविक खेती करने वाले देश के रूप में जाना जाता है। वास्तव में भारत की पहचान इसकी परंपरागत खेती ही बहुत दिनों तक बनी रही। हम बचपन से ही देखते आ रहे हैं कि हर जगह भारत को कृषि प्रधान देश के रूप में मान्यता मिलती रही है। दुनिया के अन्य देशों की तुलना में हमने उर्वरकों का प्रयोग बहुत देर से शुरू किया। हमारे देश के प्राकृतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आधार जैविक खेती के लिए पूरी तरह से अनुकूल हैं। जन जागरूकता, सही नीतियों के निर्माण और उनके उचित अनुपालन के द्वारा ही जैविक खेती के क्षेत्र में भारत काफी प्रगति कर सकता है तथा विकसित देशों की मांगो को आवश्यकतानुरूप पूरा करके काफी फायदा भी कमा सकता है। इसके अलावा इससे सिक्किम प्रदेश में पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा आशानुरूप बढ़ावा मिलेगा। राज्य में ऐसे रिसहर्ट्स बनाए गए हैं, जहां पर्यटक उनके किचन गार्डन से ताजा जैविक साग-सब्जियां आदि तोड़कर, पकाकर ताजा खाना खा सकते हैं। और इस तरह सिक्किम राज्य के लोग अपने स्वास्थ्य के साथ-साथ मनुष्य के जीवन को सुरि क्षत रखने में अपना योगदान दे सकते हैं। भारत देश के लिए यह अत्यंत गौरव की बात है।

प्रज्ञा शुक्ला
६५ डी डीडीए फ्लैट्स
मानसरोवर पार्क /शाहदरा दिल्ली ११००३२

अनजान राहे

आज कुछ अनजान रहो पर चलती जा रही हूं।
जहां भी देखू खुद को अकेला पा रही हूं ।
जानती हूं सब साथ में मेरे
फिर भी ना जाने सब को खुद से दूर पा रही हूं ।
लग रहा डर इन राहों पर ,
कहीं खो ना जाऊं मैं,
कोई तो मिलेगा आगे ,
इस आस में बस चलती जा रही हूं।
हालातों को मात देते देते थक चुकी हूं ।
फिर भी अपनों के लिए जीती जा रही हूं ।
जानती हूं कोई साथ ना देगा
इसलिए खुद को खुद के साथ जुड़ती जा रही हूँ।
बढ़ते कदम रुकते नहीं ,चलते चलते थकते नहीं,
पहुंची किसी मंजिल पर जल्दी,
यह खुद को समझा रही हूँ ,
अपनों से दूर और
खुद के करीब होती जा रही हूँ।
माना कि मुश्किल है यह सफर पर क्या हुआ
एक दिन सब ठीक होगा
इस बात को समझ कर आगे चलते जा रही हूं।
अंदर बहुत शोर है दुखों का
फिर भी मुस्कुराते जीती जा रही हूं।
इस अनजान राहों पर अकेली मैं बस चलती जा रही हूं ।
बस चलती जा रही हूँ।

ध्रुवि भट्ट
अहमदाबाद

औरत हूँ

भावों से भर लाई
मन की गगरिया को
हौले से रख जाती
अपने ही आँगन में,
सजी-धजी
अच्छी ही लगती हो
तीज-त्योहारों में
चहक-चहक उठती हो
आँखों में काजल डाल
होंठों में रंग भरे
हाथों में मेंहदी की
खुशबू संग गाती हो
सावन के झूले में
हवा संग बहती हो
मस्तानी-अलबेली
शान शौक रखती हो
भीड़-भाड़ मेले में
संग साथ रहती हो
मन की जब बात आई
मिट्टी के बर्तन-सी
नाजुक नजाकत
का पानी यूँ
झलकाती
इतना कह जाती हो -
"मन की गगरिया है
भरी-पूरी रखती हूँ
छलकने न पाए कभी
इल्म यहीं रखती हूँ
औरत हूँ इतने को
सागर को गागर में
भरपूर रखती हूँ द्य

लहरों सा जीवन है
गिरती हूँ बढ़ती हूँ
औरत हूँ मैं "

- **डॉ गीता पांडे**

गजल

मुँह दिखला कर छिप जाता है
सूरज कितना शरमाता है

वो पंछी ही पंछी कैसा
उड़ने से जो कतराता है

गम तो गम है जिसका भी हो
पर अपनों को तड़पाता है

सच आँखों में दिख जाए है
झूठ हमेशा हकलाता है

मर कर ही तो जन्मा है तू
मौत से नाहक घबराता है

नेकी करने वालों का दिल
खुद खुशियों से भर जाता है

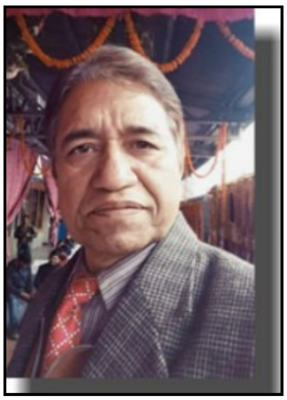

- **सुरेंद्र शर्मा**
गाजियाबाद

विद्युत और उपयोग

फैराडे ने फेंक दिया जब कुण्डल चुम्बक पार ,
बिजली के झटके जैसा था उसका आविष्कार ।

चमत्कार को नमस्कार कर, दुनिया बदली रूप ,
रातें जगमग रंग बिरंगी,अँधेरे में धूप ।
लाया भू चाँद-सितारे ,तारे गिनना भूल ,
था आकस्मिक मानव जीवन ,परिवर्तन आमूल ।

अब तो इसके ही गिरफ्त में है सारा संसार ,
बिजली के झटके जैसा था उसका आविष्कार ।

गीले हो तो कभी न छेड़ो बिजली के सामान
चालक है पानी विद्युत का सदा रहे यह ध्यान
जीवन पर भी बन आती है तनिक न लगती देर
मीठे फल सी काँटों वाली ज्यों बेरी के बेर

थोड़ी सी असावधानी से पतझड़ बने बहार ,
बिजली के झटके जैसा था उसका आविष्कार ।

कटे-छिलें तारों से होता धारा का फैलाव
अगर जुड़ें हों अर्थिंग से तो होता सहज बचाव
टीवी ,फ्रिज ,कूलर ,ऐसी या हीटर,गीजर,प्रेस
वाशिंग या मिक्सी ,जूसर सब ,बिना अर्थ के क्लेश

धाती तो विद्युत चुम्बक ही है अकूत भंडार ,
बिजली के झटके जैसा था उसका आविष्कार ।

मुहर लगा कुछ ठग असली का बेचें नकली प्यार
कुछ ही दिन में जो हो जाते ,जल-भुनकर बेकार
हाल बुरा है बाजारों का नकली का व्यापार
बिजली का सामान खरीदें ,करके सोच विचार

ध्यान रहे बिजली असली है ,असली इसकी मार ,
बिजली के झटके जैसा था उसका आविष्कार ।

जो धरती से जोड़ न पाए ,अपने दिल के तार
वे ही झटके खाते रहते, जीवन में हर बार
टाइट नहीं कनेक्शन जिसका खिटपिट बारम्बार
आग लगा देता है घर में यारों ढीला तार

बिजली हमें सिखाती जीवन ,जीने का भी सार,
बिजली के झटके जैसा था उसका आविष्कार ।

बिन बिजली के जीवन सूना रुक जाती रफ्तार
बिजली से जीवन की बगिया हरी-भरी गुलजार
बहु उपयोगी मानवता को विद्युत का विज्ञान
आओ नमन करें हम उनको जिनका यह वरदान

मिलकर खोजें इस ऊर्जा के कुछ नवीन अवतार
बिजली के झटके जैसा था उसका
आविष्कार ।

- **मोहन द्विवेदी**
(गाजियाबाद)

मेरे आराध्य श्रीराम जी

हैं सृष्टि के रचयिता , नियती को मानते हैं ।
उनके ही नाम से हम , दुनियाँ को जानते हैं ।
चलकरके नग्न पाँवों
वन -वन में खाक छानी ।
होती है भाग्य रेखा
विद्वत जनों की मानी ।
घट -घट में रम रहे हैं
धड़कन में बस रहे हैं ।

नकली हिरन के पीछे, वही राम भागते हैं ।
उनके ही नाम से हम , दुनियाँ को जानते हैं ॥

जिसके हैं कर्म जैसे
जीवन में वैसा होगा ।
रावण से वीर ने भी
अपने फलों को भोगा ।
इक अवधपुर के राजा
बालक से बैन हारे ।

सरवन के तेज आगे , माफी वो माँगते हैं ।
उनके ही नाम से हम , दुनियाँ को जानते हैं ॥

उस सुवर्ण के मुकुट का
कितना था बोझ भारी ।
सीता ने जंगलों में
काटी थी उम्र सारी ।
जनता की वेदना पर
कर स्वयं को निछावर

देवों के देव होकर , सेवक ही मानते हैं ।
उनके ही नाम से हम , दुनियाँ को जानते हैं ॥

डॉक्टर जयप्रकाश मिश्र
चिरंजीव विहार
गाजियावाद

मेरी माँ महान है

मैं भारत माँ की बेटी हूँ
मेरी माँ महान हैं
भारत माँ महान हैं

वंदेमातरम ,वंदेमातरम
वंदेमातरम, वंदेमातरम

हिमगिरि मुकुट सजाता माँ का ,
सागर चरण पखारे ।
सस्यश्यामला वसुंधरा का,
माँ परिधान है धारे ।।
अरुणोदय की ललित लालिमा ,
तिलक भाल पर सारे ।
अक्षय ज्योति से सूर्य-चन्द्र ,
माँ की आरती उतारे।।

विविध पंथ पैगम्बर करते,
बिरुदावली बखान हैं।।

मेरी माँ महान हैं
भारत माँ महान हैं

वंदेमातरम, वंदेमातरम
वंदेमातरम, वंदेमातरम

पूरब,पश्चिम, उत्तर, दक्षिण,
स्वर्ग ,रसातल सारे।
दसों दिशा,सातों लोकों में,
ज्ञान ज्योति विस्तारे।।
ममता,दया, धर्म की सरिता,
मनुजों में विस्तारे।
श्वासों में है वेद और
मुख से गीता उच्चारे ।।
विविध पन्थ पैगम्बर
जिससे पाते जीवन दान हैं

मेरी माँ महान हैं
भारत माँ महान हैं

वंदेमातरम, वंदेमातरम
वंदेमातरम, वंदेमातरम

अन्नपूर्णा बन मेरी माँ,
पाल रही जग सारा ।
गायत्री बन ऊषाकाल में,
जगा रही जग सारा ।।

रौद्री के प्रताप से मंडित,
है नभमंडल सारा।
सांयकाल में सरस्वती बन
लोरी गान उचारा ।।

माँ की महिमा से ही मंडित ,
भास्कर भानु महान हैं ।।

मेरी माँ महान हैं
भारत माँ महान हैं

वंदेमातरम, वंदेमातरम
वंदेमातरम, वंदेमातरम

• **कामना मिश्रा**
दिल्ली

यादों की अनमोल पिटारी

कभी-कभी इन आँखों में जब
बीते दृश्य उभर आते हैं ।

जिनके आने से यह जीवन,
सरस राग मय हो जाता है ।
घुल जाते हैं सप्त रंग रस,
इंद्रधनुष सा बन जाता है ।
खिल जाता माधुमास हृदय में,
स्वप्न सुरभि सी बिखराते हैं ।

स्मृतियों की आहट सुनकर,
मन में उथल पुथल होती है ।
जग जातीं अनगिन इच्छाएं,
आंखों से झरते मोती हैं ।
एक चुभन मीठी सी मन को,
यादों के क्षण दे जाते हैं ।

मन के इस आँगन में यादों
की खुलती अनमोल पिटारी ।
खिड़की, द्वार, झरोखे, छज्जे,
बालकनी, छत और अटारी ।
आंखों में सजीव हो उठते,
विगत कथाएं दुहराते हैं ।
कभी-कभी इन आँखों में जब,
बीते दृश्य उभर आतें हैं ।।

● **श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'**
व्याख्याता-हिन्दी
अशोक उ०मा०वद्यालय, लहार
जिला-भिण्ड, (म०प्र०)

सुनील छेत्री

अंतरराष्ट्रीय पटल पर चमका , भारतीय फुटबॉल का सितारा।
नेपाली फुटबॉलर माँ और दो बहनों की, आँख का वह तारा।
3 अगस्त 1984 का वह दिन, भारत में बड़ा ही मंगलकारी।
आंध्रप्रदेश के सिकंदराबाद में जन्मे,सुनील विश्वरिकॉर्डधारी।
भारतीय सेना के गोर्खा जवान, और फुटबॉलर माता का पूत।
बचपन से ही जिसकी रगों में, पनप रहा फुटबॉल का जुनून।
किशोरावस्था में दिल्ली शहर से, फुटबॉल जीवन शुरू किया।
मोहन बागान ने देख प्रतिभा,पेशेवर खिलाड़ी को जन्म दिया।
आत्मविश्वास और सफलता,उसके जीवन की अमिट कहानी
कभी न देखा पीछे मुड़कर ,सारी दुनिया प्रतिभा को जानी।
फुटबॉल के पोस्टर बॉय वे,भारतीय फुटबॉल की पहचान।
राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय कीर्तिमानों से अटा, व्यक्तित्व उनका महान।
सर्वाधिक अंतरराष्ट्रीय मैच खेले,दागे गोल सबसे अधिक।
भारतीय इतिहास में नाम अमर किया, फुटबॉलर वो प्रसिद्ध।
अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ में,' प्लेयर ऑफ द वीक'
छह बार रहे।
मैदान में जब भी रखा कदम, कामयाबी उसकी शान कहे।
पुरस्कारों की गिनती ही नहीं, छूटा न कोई उनसे सम्मान।
प्रतिभावान, ऊर्जावान खिलाड़ियों की प्रेरणा ,सुनील छेत्री का नाम।
विंगर या स्ट्राइकर बन खेले, मौजूदगी ही बनी जीत का खुमार।
विविध भाषाओं का ज्ञान उनको,है अपनी संस्कृति से अटूट प्यार।
भारतीय गोल मशीन कहलाया, रहा सदैव वह शीर्ष पर।
एशियाई आइकन रहा, कैप्टन फैंटास्टिक वो काल दीर्घ तक।
अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों में सर्वाधिक गोल कर, दूसरा स्थान पाया।
भारतीय फुटबॉल का लोकप्रिय कैप्टन, देश को सदैव सम्मान दिलाया।

डॉ0 निर्मला शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर(हिंदी विभाग)
जैसवाल कोठी के पीछे,
पी जी कॉलेज के पास
आगरा रोड दौसा, राजस्थान
पिन कोड–303303

हिन्दी की गूँज

खेल का महत्व

खेल.... साहस,एकाग्रता , अनुशासन और धैर्य का पर्याय है, ये मानना,अनुचित न होगा।एक व्यक्ति के मानसिक कौशल का विकास और मनोवैज्ञानिक कौशल,खेल के द्वारा ही होता है,ऐसा मेरा मानना है।हमारे जीवन में, खेल का व्यक्तिगत और सामाजिक , दोनों ही रूप , बड़ा महत्व है।

भिन्न भिन्न,खेलों के निरंतर अभ्यास से,व्यक्ति के शारीरिक विकास के साथ,संवेगनात्मक विकास ,सामाजिक विकास, और नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है, मैं मानती हूं।वर्तमान समय में, खेलों के प्रति ,हमारे समाज में, राष्ट्र में,अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, क्रांतिकारी परिवर्तन आया है।

आज ,आम नागरिक ही नहीं,सरकार भी,खेल को अंतरराष्ट्रीय स्तर का पैमाना मानती है।खेल, न केवल स्वास्थ लाभ का सहायक है,अपितु, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, विभिन्न देशों के संबंधों को मजबूत और सौहार्द्यपूर्ण बनाने में भी,खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

आजकल,विश्व में कई प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है,एशियन गेम्स,ओलंपिक गेम्स, कह्मनवेल्थ गेम्स आदि।इन प्रतियोगिताओं में,सभी देशों के अव्वल खिलाड़ी भाग लेते हैं और अपने देश के नाम स्वर्ण, रजत या कांस्य पदक जीत कर ,अपना और अपने देश का नाम रोशन करते हैं।

हमारे भारत में भी,कितने ही महान खिलाड़ी हुए हैं,जैसे क्रिकेट में,सुनील गावस्कर,कपिल देव,सचिन तेंदुलकर आदि।सायना मिर्जा,मेरीकह्म, सिंधु,जैसी महिला खिलाड़ियों ने भी ,भारत को,विश्व पटल पर सम्मान दिलाया।शतरंज में,विश्व आनंद ने, टेनिस में लिएंडर पेस, भूपति,अनेक खिलाड़ियों ने भारत माता को अनेक पदकों से विभूषित किया है।

एक बात और कहना चाहूंगी कि खेल प्रतियोगिताएं, न केवल प्रसिद्धि का माध्यम हैं, वरन धनोपार्जन का भी बहुत बड़ा,स्त्रोत बन गई हैं।

खेलों का रूप,समय के साथ बदलता रहा,ये बात और है,किंतु हमारे जीवन में, खेलों के महत्व को ठुकराया नहीं ,जा सकता।

खेलों में हुनर दिखाना है,
खिलौना ,बन कर नहीं,
रह जाना है,
भारत मां के लाल हैं,
विश्व को ये, दिखलाना है।

- **सुनीता अग्रवाल**

अनुवाद के बहाने

मैं एक शौकिया अनुवादक हूँ, कहानियों के अतिरिक्त अधिकतर बच्चों की पुस्तकों का अनुवाद किया है, आर्ट्स कौंसिल ऑफ इंग्लैंड द्वारा प्रायोजित कुछ पुस्तकों का सम्पादन के साथ साथ अनुवाद भी किया क्योंकि पेशेवर अनुवादक मिल नहीं रहे थे और जो मिले, वे मोटी रकम मांग रहे थे जो मेरे बूते के बाहर थी। लंदन में ३५ वर्षों के रहने के बावजूद मेरी अंग्रेजी इतनी प्रखर नहीं है कि मैं एक पेशेवर अनुवादक का मुकाबला कर सकूं, इसलिए मुझे एक अनुभवी शुद्धि कारक अथवा प्रूफरीडर की आवश्यकता पड़ी, जो जोन डीश के रूप में प्रकट हुई और उसने कलेवर पर जो अपना जादू दिखाया, जिसको कहते हैं न - घर घर आनंद भयो।

खैर, हम अनुवाद के विषय में बात कर रहे थे। करीब तीन साल हुए जब मेरी बेटी शैली ने, जिसने मेरी कई कहानियों का अनुवाद किया है, एक विचार मजेदार योजना मेरे सामने रखी कि मेरी एक कविता का वह अंग्रेजी अनुवाद करेगी और फिर उस अनुवाद का अनुवाद बारी बारी से अन्य कई भाषाओं में करवाएगी। जब वह कविता कई भाषाओं में अनुवाद होने बाद अंग्रेजी और फिर मूल भाषा हिंदी में वापिस पहुंचेगी जैसे कि मुहावरा है न, Chinese Whispers* के माध्यम से, तो उसका कलेवर, ढांचा और अर्थ कैसा होगा।

इस देश में साउथ एशियन साहित्यपेशेवर अनुवादकों की भारी कमी की वजह से भाषाओं के मध्य मौन है, वार्तालाप नदारद है, इस कमी की पूर्ति के लिए २००३ में मैंने वातायन संस्था की स्थापना की किन्तु धन के अभाव में हम अपने उद्देश्य में इतना सफल न हो पाए जैसी कि हमने परिकल्पना की थी। थोड़े बहुत अनुवाद के माध्यम से हम विभिन्न भाषाओं में लिखने वाले कवियों को एक मंच पर तो ले आए, किन्तु धन के अभाव में यह योजना विफल रही क्योंकि कवि कविता लिखें या अनुवाद करें, प्रूफ रीडिंग, सम्पादन इत्यादि सब मुझ पर आ पड़ा, क्योंकि विदेश में किसी से मुफ्त में काम लेना असम्भव है। सब लेखक चाहते हैं कि उनकी रचनाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद हो पर इसके लिये वे कोई नहीं करना चाहते और न ही वे वित्तीय सहायता करने को तैयार हैं।

अनुवाद जैसे गलीचे का निचला हिस्सा है जैसे कि किसी ने कहा है कि अल्फास के पेचों में उलझते नहीं दाना गव्वाज को मतलब है सदफ (सीपी) से के गुहर (मोती) से इब्ने इंशा के 'मीर-जुमले' का अनुवाद कोइ भी न कर सका किन्तु मास्टर अनुवादक, डेविड मैथ्यू ने आनन् फानन में जिसे ^capital sentence^ कहा।

जैसा कि आप जानते ही होंगे कि अरब लोग गैर-अरबों से विवाह नहीं रचाते लेकिन एक प्रसिद्द विद्वान अपनी बेटी की शादी महान अरबी कोशकार, कुमस, से करने को तैयार हो गया। कुमस मूलतः ईरान से था। सुहागरात को, उसने अपनी पत्नी से लाइट बुझाने का आग्रह यह कह कर किया, ^kill the lamp^ बजाय कहने के कि ^put the lamp off^ जैसे कि हिंदी में हम कहते हैं दिया या बढ़ा दो, बुझा दो कहना अपशकुन माना जाता है, अब तो यह बात शायद किसी को पता भी न हो। खैर, Kill the lamp एक पर्शियन मुहावरा है। भयातुर पत्नी ने पूछा, या अल्लाह, तुम अरबी नहीं हो, मुझे तुमसे अभी के अभी तलाक चाहिए।इतना तो नहीं हुआ किन्तु पांच संग्रहों का अनुवाद करते वक्त मुझे कुछ अजीबो गरीब अनुभव हुए, लेखक अपनी रचना के अनुवाद से प्रायः संतुष्ट नहीं होते, कई सामने कुछ नहीं कहते लेकिन पीठ पीछे आलोचना करते हैं तो कुछ अपनी नाराजगी सीधे सीधे प्रकट कर देते हैं।

- **दिव्या माथुर**

प्रकृति के यौवन की ऋतु : वसंत ऋतु

मित्रों ! संभवतः भारत विश्व का एक मात्र देश है जहाँ प्रकृति का एक-एक अंश पूजा जाता है क्योंकि हम मानते हैं कण कण में नारायण है । यही कारण है कि हमारे देश में नन्हीं चींटी से लेकर हाथी, नदी, पर्वत, कुएं आदि सभी को आस्था की दृष्टि से देखते हुए पूज्य माना गया है क्योंकि ये सभी मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं और पर्यावरण का मानव जीवन में कितना महत्व है हम सभी जानते हैं । हमारे पर्यावरण विदों ने प्रकृति और मानव को परस्पर एक दूसरे का पूरक माना है । कारण जब भी प्रकृति में कोई परिवर्तन होता है हम इन्सान उससे अछूते नहीं रह सकते । वैसे भी हमारी संस्कृति में पृथ्वी को माता के रूप में देखा गया है । स्वाभाविक है जब माता खुशहाल होगी तभी तो संतानें समृध्द होंगी ।
धरती माता को खुशहाली देती ऋतु है वसंत ।

हमारे देश में छः ऋतुएं हैं प्रत्येक का अपना महत्व है । इन्हीं में एक ऋतु है वसंत ऋतु , यह ऋतु काल फरवरी, से लेकर अप्रेल माह तक रहता है ,यह वह समय होता है जब पृथ्वी को शीत के प्रकोप से मुक्ति मिलती है , तापमान सामान्य होने लगता है । पर्वतीय क्षेत्रों से बर्फ पिघलने से वनस्पतियाँ पुनः हरियाली से सुसज्जित हो जाती हैं ।

समस्त प्राणी जगत राहत महसूस करता है । वन में टेसू के फूल आग के अंगारे की तरह लहक उठते हैं, खेतों में सरसों के पीले-पीले फूल , धरती माता की पीली साड़ी- सदृश दिखाई देते हैं। बागों में बौर, गुलाब और मालती आदि के फूल खिलने लगते हैं। आम्र -मंजरी और फूलों पर भौंरे गुनगुन करने लगते हैं और कोयल की कुहू-कुहू की आवाज प्राणों को उद्वेलित करने लगती है। जौ और गेहूँ में बालियां आने लगती हैं और वन -वृक्षों की हरीतिमा मन को अपनी ओर आकर्षित करती है। पक्षियों के कलरव, पुष्पों पर भौरों का गुंजार तथा कोयल की मीठी तान मिलकर एक मादकता से युक्त वातावरण निर्मित करते हैं। इसीलिए इस ऋतू को 'ऋतुराज' यानि ऋतुओं का राजा माना गया है ।

सोचिये ! जब इतना सुहावना मौसम होगा तो मन कैसे प्रफुल्लित न होगा । सर्वत्र प्रेम स्फुटित होगा ।कवियों ने तो वसंत पर कई प्रेम भरी रचनाएँ रची हैं । फिर चाहे वह नायिका हो जो अपने प्रियतम को मनाती हुई कह उठती है ,

"अबकी जो आया वसंत /मैं जोगी को मना लूंगी / महुआ बन बिछ जाऊंगी / मेहंदी के पत्तों से हथेली रचाऊंगी / माथे सिंदूरी चुनर सजाऊंगी / अबकी जो आया बसंत/ मैं जोगी को मना लूंगी।"

वहीं अपनी प्रेयसी के लिए प्रियतम की मान मनुहार भी कम नहीं है, नीरज जी की पंक्तियाँ हैं

"आज वसंत की रात / शयन की बात न करना / बोराई अमवा की डाली / गदराई गेहूं की बाली / सरसों खड़ी बजाये ताली / झूम रहे जल पात / शयन की बात न करना ।"

जिस प्रकार वसंत अच्छी भावनाएं अच्छा स्वास्थ्य और पौधों को नया जीवन देता है हमें चाहिए हम भी अपनी भावनाओं को स्वस्थ रखें , सद्भाव और सौहार्द्र्य का वातावरण बनाएं ।

पौराणिक कथा के अनुसार वसंत को कामदेव का पुत्र माना गया है । अतः इस पर कवि 'देव' ने बहुत सुंदर कल्पना की है ,कामदेव के घर पुत्र की प्राप्ति का समाचार पाकर प्रकृति झूम उठी है, पेड़ों में नव पल्लवों ने अपना पालना डाला है, खिलते फूल उसे वस्त्र पहना रहे हैं, मंद - मंद पवन हिंडोला झूला रही है, कोयल उसे लोरी सुना रही है द्य वाह ! कितनी खूबसूरत कल्पना है ।कंचन पांडे जी ने जिसे शब्दों में पिरोया है ,

"आ गया वसंत है, छा गया वसंत है /खेल रही गौरैया सरसों की बाली से /मदमाती गंद उठी / अमवा की डाल से अमृत रस घोल रही /झुरमुट से बोल रही / आ गया वसंत है छा गया वसंत है -"

वसंत के अवसर पर वसंत पंचमी, शिवरात्रि, और होली का उत्सव मनाया जाता है । वसंत पंचमी का उत्सव, माघ शुक्ल की पंचमी के दिन ज्ञान ,विद्या और बुद्धि की देवी माँ सरस्वती का सर्वत्र पूजन करते हैं । इसके पीछे भी एक कथा कही जाती है कि ब्रह्मा जो इस दृष्टि के जनक माने जाते हैं जब वे इस सृष्टि की रचना कर चुके तो देखा रचना तो अच्छी हुई है किन्तु कहीं कुछ कमी रह गई है । इस सृष्टि में एकदम सन्नाटा है कोई ध्वनि नहीं तब उन्होंने अपने कमंडल से जल लिया उसे मंत्रोचारित कर पृथ्वी पर छिड़का तो एक नारी शक्ति उत्पन्न हुई जिसकी चार भुजाएं थीं जिनमे एक में वीणा दूसरा वर देने की मुद्रा में तीसरे हाथ में पुस्तक और चौथे हाथ में माला थी । ब्रह्मा ने शक्ति से अनुरोध किया कि इस सृष्टि में सुर के रंग बिखेर दो । अतः उनके प्रभाव से जीव जंतु को वाणी प्राप्त हुई । सर्वत्र सुर के मुक्ता मणि बिखर गये अतः नाम दिया सुर के देवी सरस्वती । यही सरस्वती संसार को विद्या और बुध्दि की प्रदाता कहलाई ।

माँ सरस्वती 8 शक्तियों की पूरक मानी जाती है । ज्ञान, विज्ञान, विद्या , कला, बुध्दि, मेघा, धारणा एवं तर्क शक्ति की दाता हैं । स्कन्द पुराण के अनुसार सफेद पुष्प, चन्दन से माँ सरस्वती जी का पूजन किया जाता है । चूँकि माँ सरस्वती शिक्षा की देवी हैं अतः बच्चों की शिक्षा का श्रीगणेश भी इसी दिन होता है । आंध्रप्रदेश में 'पद्माक्षरी' अर्थात अध्ययन का पहला अक्षर इसी दिन सिखाया जाता है । इसे विद्यारंभ पर्व भी कहते हैं । जिसका आयोजन बड़े श्रद्धा के साथ शिक्षण संस्थाओं में किया जाता है । कवि / लेखक गण , गायक , वादक आदि सभी इस अवसर पर अपने उप. ादानों का पूजन करते हैं । सूर्य उत्तरायण की ओर गति करता है जिससे पृथ्वी पर तिल तिल प्रकाश बढ़ता जिससे इसे प्रकाश का पर्व भी कहा जाता है, इस अवसर पर तीर्थों में स्नान करने का भी विशेष महत्व है । मंद-मंद पवन चलने से पतंगें भी उड़ाई जाती हैं । यह दिन बहुत शुभ मन जाता है , बिना पंचांग का मुहूर्त मान इस दिन हर शुभ कार्य किया जाता है ।

इसे मदनोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण इस उत्सव के अधिदेवता हैं। इस अवसर पर ब्रजभूमि में भगवान् श्रीकृष्ण और राधा के आनंद-विनोद का उत्सव मुख्य रूप से मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ पीले वस्त्र एवं पुरुष पीली पगड़ी बांधते हैं । हिंदू परंपरा में पीले रंग को शुभ माना जाता है । यह रंग सौम्यता ,उष्मा, ऊर्जा और स्मृति का प्रतीक होता है इसे बसंती या वासंती रंग भी कहा जाता है हम कैसे भूल सकते हैं ,शहीद भगत सिंह ने भारत माँ से प्रार्थना करते हुए गीत भी गाया है,

''आजादी को चली ब्याहने दीवानों की टोलियाँ/ खून से अपने लिख देंगे इन्कलाब की बोलियाँ / हम वापस लौटेंगे लेकर आजादी का चौला / माई ! रंग दे बसंती चोला मेरा रंग दे बसंती चोला ।''

जी हाँ ! वसंत का एक यह रूप भी है ,आज भी हमारे देश के फौजी सरहद पर रहकर अपना वसंत मनाते हैं । अपनी प्रियतमा से दूर , शून्य से भी कम तामपान में , उनके लिए यह वसंतोत्सव किस तरह व्यतीत होता होगा इसकी बहुत ही मार्मिक अभिव्यक्ति प्रसिध्द कवियत्री एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रही सुभद्रा कुमारी चौहान ने इन शब्दों में दी है -

गलबाँहें हों या हो कृपाण / चलचितवन हो या धनुषबाण
हो रसविलास या दलितत्राण / अब यही समस्या है दुरंत-
वीरों का कैसा हो वसंत ।

अर्थात एक और युध्द की कृपाण धारण की है तो दूसरी ओर अपनी प्रियतमा की गलबहियों के हार हैं , वे कहती हैं इन दोनों में वीर किसे चुने..? एक गम्भीर समस्या है । एक ओर शत्रु पर नजरें साधे हैं दूसरी ओर प्रेयसी के नयन बाण से स्वयं को साधे हैं । वे प्रेम का आलिंगन स्वीकारें अथवा भारत की असंख्य निरीह जनता के अधिकारों की रक्षार्थ युध्द की चुनौती को स्वीकार करें । सुख- दुःख के बीच झूलते इन वीरों का आखिर क्या है वसंत ...? वाकई , यह पीड़ा हमें समझनी चाहिए ।मैं जब जम्मू गई थी तो हमारे फौजी भाइयों से मिली भी हूँ उनसे चर्चा भी की । हम सुख से सो सकें इसलिए वो रातों को सरहद पर जागते हैं । अपना वसंत अकेले हमारे रक्षार्थ गंवाते हैं । ऐसे वीरों को हमारा नमन है । और जब ये वीर चुनौती भरा रास्ता अपना लेते हैं ,तो दुश्मनों की आँखों की किरकिरी बन जाते हैं और हमारे समक्ष होता है जलियावाला बाग हत्याकांड जैसा वीभत्स दृश्य । जिसे कवियत्री ने कहा है ।

परिमल-हीन पराग दाग सा बना पड़ा है,
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज! किन्तु धीरे से आना,
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।

साथियों ! जैसा कि मैंने कहा यह परिवर्तन का मौसम है, तापमान में अचानक बदलाव आने से गर्मी व्याप्त हो जाती है । संवेदनशील मौसम होने से कई रोगों की संभावनाएं बढ़ जाती हैं जैसे चेचक, जुखाम, खसरा आदि अतः इस मौसम में सभी अपना ध्यान रखें ।सभी के जीवन में वसंत रहे , विद्या और समृध्दी हो । सभी को वसंतोत्सव की हार्दिक शुभकामनायें ।

डॉ लता अग्रवाल 'तुलजा'
३० एमआईजी, अप्सरा कोम्प्लेक्स । सेक्टर
इंद्रपुरी ,भोपाल -४६२०२२

बच्चों में अच्छे संस्कार कैसे डालें

''मैं मैं बड़ी बलाई है, सके निकल तो निकले भाग ।
कहे कबीर कब लग रहे, रुई लपेटी आग।।''

प्रतिस्पर्धा के इस युग में जहाँ विलुप्त होते मानवीय मूल्य अपने अस्तित्व की पुष्टि के लिए छटपटा रहे हैं ,उनका दम घुट रहा है वहीं संत कवि कबीरदास के अनुसार मानव का अहंकार रुई में लिपटी आग की तरह है जिसको रोक पाना असंभव प्रतीत हो रहा है। हमारे जीवन मूल्यों में हो रही मिलावट और गिरावट हमारी भावी पीढ़ी के भविष्य के लिए चिंता का विषय है। हम अनजाने में अपने बच्चों को जल्दी और आसानी से सफल होने के शार्ट कट सिखाते हुए संस्कारों से समझौता करना सिखा रहे हैं।

''जो रहीम ओछो बढै, तौ अती ही इतराय
प्यादे सौं फरजी भयो, टेढो टेढो जाय।।''

अर्थात रहीमदास जी ने कहा है ओछे लोग जब प्रगति करते हैं तो बहुत ही इतराते हैं। वैसे ही जैसे शतरंज के खेल में जब प्यादा फरजी बन जाता है तो वह टेढ़ी चाल चलने लगता है। वैसे ही आज अहंकारी मानव यह समझ बैठा है कि वह सर्वशक्तिमान है , यही कारण है कि मानव सोचने लगा है कि वह धन के बल पर सब जीत लेगा,खरीद लेगा । जब तक उसे अपनी भूल का ज्ञान होगा तब तक बहुत देर हो जाएगी ।

''जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय,
बारे उजियारो लगै, बढै अंधेरो होय।।''

अर्थात दीपक के चरित्र जैसा ही कुपुत्र का भी चरित्र होता है। दोनों ही पहले तो उजाला करते हैं पर बढ़ने के साथ-साथ अंधेरा होता जाता है। रहीमदास ने यह बात कुपुत्र के संदर्भ में कही है किन्तु कुपुत्र या सुपुत्र होना क्या वास्तव में केवल बच्चे का दोष है ? अथवा माता- पिता व परिवार द्वारा संस्कारों का अभाव ?आज हम बच्चों को समानाधिकार की बात सिखाते हैं और ऐसे में हम उन्हें छोटे बड़े का लिहाज सिखाना भी भूल जाते हैं । परिणाम स्वरूप जब बचपन में बच्चा कहता है ''ममी आपको कुछ नहीं पता'' तो हम खुश होते हैं कि बच्चा समझदार हो रहा है पर कुछ बड़े होने पर उसके यही वाक्य हमें चुभने लगते हैं तब हमें अहसास होता है कि हमने बच्चे में माता पिता का आदर करने और बुजुर्गो का सम्मान करने का संस्कार तो डाला ही नहीं पर तब तक बहुत देर हो जाती है। माता पिता और बुजुर्गों का आशीर्वाद ही बच्चों के लिए सुरक्षा कवच का काम करता है।हमें बच्चों को दूसरों की मदद करने के लिए तत्पर रहना,कर्तव्यों का पालन करना,सभी से प्रेमप. ूर्वक व्यवहार रखना,देश के प्रति सम्मान करना ,सहनशील बनना और स्त्रियों का आदर करना जैसे संस्कार भरने चाहिए। इसके लिए हमें अपनी समृद्ध भारतीय संस्कृति

से उनकी पहचान करवानी चाहिए और बालक ध्रुव,श्रवण कुमार, वीर शिवाजी, चंद्रशेखर आजाद आदि पौराणिक व ऐतिहासिक संदर्भों व बाल पात्रों के गुणों व जीवन साधना से परिचित करवाते हुए उनके जैसे संस्कार भरने चाहिए।

"गुरू कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।"

अर्थात कबीरदास ने कहा है गुरु ही शिष्य के चरित्र का निर्माण करता है, गुरु के अभाव में शिष्य एक माटी का अनगढ़ टुकड़ा ही होता है जिसे गुरु एक घड़े को आकार देते हैं, उसके चरित्र का निर्माण करते हैं। जैसे कुम्भकार घड़ा बनाते वक्त बाहर से तो चोट मारता है और अंदर से हलके हाथ से उसे सहारा भी देता हैं कि कहीं घड़ा टूट ना जाए, इसी भांति गुरु भी उसके अवगुण को तो दूर करते हैं, उसके अवगुणों पर चोट करते हैं, लेकिन अंदर से उसे सहारा भी देते हैं, जिससे कहीं वह टूट ना जाएं।बच्चे भी उस चिकनी मिट्टी की तरह होते हैं जिसे कुम्हार जैसा चाहे आकार दे देता है। इस प्रक्रिया में वह उसे चाक पर चढ़ाता है,कोमल उंगलियों से सहलाता है, आवश्यकता पड़ने पर कड़े हाथों से थपथपाता भी है और फिर अग्नि में तपाता भी है। यही तो जीवन है ,बच्चे जब जन्म लेते हैं तो उसी चिकनी मिट्टी जैसे होते हैं,उनके माता पिता वह कुम्हार हैं जो उन्हें जीवन के संघर्षों के लिए समय समय पर कभी प्यार से,कभी डाँट से तो कभी जीवन की कठिन राह पर खुद गिरकर सम्भलने के लिए तैयार करते हैं। बच्चे वह नन्हें पौधे हैं जिनकी जड़ों को सींचना आवश्यक होता है तभी वह हरा-भरा फलदार वृक्ष बनते हैं। जब पौधा छोटा होता है उसकी देखभाल बहुत ही आवश्यक होती है क्योंकि शुरू में मिली देखभाल उसे जब ताकत देती है तो वह हर आँधी, तूफान और वर्षा में भी अडिग खड़ा रहता है। उसी तरह जब बच्चे छोटे होते हैं तब उनमें जो संस्कार डाले जाते हैं वह उसे जीवन के संघर्षों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं ।एक मनोवैज्ञानिक आधार यह कहता है कि बच्चा पाँच साल की आयु तक सभी संस्कार ग्रहण कर लेता है । अर्थात संस्कार उसे मूलतः घर व परिवार से ही मिलते हैं।किसी कवि ने कहा भी है-

"बोली बता देती है व्यवहार कैसा है
संस्कार बता देते हैं परिवार कैसा है।"

एक विद्वान के अनुसार "एक बालक के मन पर बड़ों द्वारा किये प्रत्येक कर्म व बात का गहरा असर होता हैं. बालक जो कुछ देखता, सुनता हैं उसे शिक्षा मिलती है वे ही उसके संस्कार बन जाते हैं. जीवन के आरम्भिक दिनों में जिन संस्कारों की नीव डाली जाती है उसका जीवन उसी के अनुरूप ढल जाता है।"

भारत में विद्यार्थी जो देश का भविष्य हैं उन्हें अक्सर प्रतिस्पर्धा, तुलनात्मक मानसिकता, सामाजिक भेदभाव ,बाह्य आकर्षण और अनुशासनहीनता के भंवर में जूझते देखा गया है। इसका कारण पाश्चात्य संस्कृति, विद्यालय या समाज ही नहीं, बल्कि संस्कारों के प्रति हमारी उदासीनता है। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है तो माता-पिता प्रथम शिक्षक।संस्कार ही वह नींव है जिसपर जीवन की इमारत टिकी होती है, नींव ही कमजोर होगी तो संघर्षों में इमारत का गिरना निश्चित है।

"कबीर लहरि समंदर की, मोती बिखरे भाई।
बगुला भेद न जानई, हँसी चुनी चुनी खाई।।"

कबीर कहते हैं कि समुद्र की लहर में मोती आकर बिखर गए. बगुला उनका भेद नहीं जानता, परन्तु हंस उन्हें चुन-चुन कर खा रहा है. इसका अर्थ यह है कि किसी भी वस्तु का महत्व जानकार ही जानता है।बच्चे तो कोरी स्लेट होते हैं उस पर जो लिख दो वह अमिट होता है। अक्सर घर में फोन पर पिता को झूठ बोलते देखने वाला रोहन जब एक दिन पिता से झूठ बोलता है तो पिता को अपनी गलती का अहसास होता है। हम अनजाने में अपने बच्चों में ऐसे संस्कारों को बो देते हैं जिसके बबूल की कड़वाहट हमारे बच्चे ही नहीं हमारे जीवन में ही कटुता भर देती है। पड़ोस के बाग से आम चुरा कर लाने पर हम बच्चे की पीठ थपथपाते हैं और जब स्कूल में उसे चोरी के इल्जाम पर निकाला जाता है तो उसे कोसते हैं , पर अपना गिरेबां नहीं झाँकते। जब बच्चा देखता है कि चालीस हजार कमाने वाला उसका पिता फहर्चूयूनर में घूमता है,आई फोन जेब में रखता है तो वह भी बचपन में ही रिश्वत देना सीख जाता है।

अक्सर देखा गया है कि लोग अपने छोटे छोटे बच्चों के साथ धार्मिक स्थलों पर जाते हैं और रिश्वत देकर या सिफारिश के बल पर लाइन में बिना लगे दर्शन कर आते हैं । उस पर अपने सम्पर्क की चर्चा घर वालों को बढ़ा चढ़ा कर सुनाते हैं। फिर यह आशा करते हैं कि बच्चा धर्म के मार्ग पर चले ,क्या आपका धर्म यही सिखाता है ? महात्मा गाँधी ने धर्म को सदाचरण और शुद्धाचरण से ही जोड़ा है। हमें अपने बच्चों में सदा सत्य बोलने और ईमानदारी के रास्ते पर चलने के संस्कार अवश्य डालने चाहिए यही उसे धर्म के मार्ग पर आगे ले जाएंगे, यही उसे स्वाभिमान के साथ जीवन की चुनौतियों का सामना करना सिखाएंगे। हमें अपने बच्चों में ईश्वर के प्रति विश्वास जगाना बहुत आवश्यक है । जिससे जब जब जीवन के संघर्षों में उसका मनोबल डगमगाए तो वह ईश्वर को अपने निकट ही पाएं ।ईश्वर की सत्ता में विश्वास करना कोई पिछड़ापन नहीं है अपितु मनोबल को बढ़ावा देने का साधन है ।ऐसा होने पर हमारे बच्चे वह चट्टान बन सकेंगे जिनसे टकरा कर जीवन की प्रत्येक बड़ी से बड़ी बाधा व प्रत्येक संकट सिर धुनता दिखाई देगा। किसी कवि ने कहा भी है-

"आजाद रहिए विचारों से लेकिन
बंधे रहिए संस्कारों से।"

- **तरुणा पुण्डीर 'तरुनिल'**

शिक्षिका व लेखिका
नई दिल्ली।

बौद्ध कालीन भाषिक परिवेश एवं भाषागत विविधताएं

शोध सारांशिका - भाषा किसी भी कालखंड में किसी भी समाज के द्वारा विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त साधन है। जब हम अपनी अभिव्यक्तियों को समृद्ध करते हुए अनुभूति को उसमें समाहित करके जनसामान्य तक अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं, तो उसके लिए भाषा अत्यंत प्रभावशाली माध्यम माना जाता है। हमारे द्वारा अपनाए गए शब्द हमारा परिचय और हमारी पहचान देते हैं। हम यह मानते हैं कि भाषा के द्वारा ही किसी भी कालखंड की परंपराओं को, रीति-रिवाज को, मान्यताओं को जाना जा सकता है, पहचाना जा सकता है। बौद्ध धर्म में स्वयं गौतम बुद्ध के द्वारा अपनी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उस समय प्रचलित भाषा का साधन के रूप में इस्तेमाल किया गया। भाषिक परिवेश और भाषा की विशेषताएं किसी भी कालखंड में चलने वाली समस्त क्रियाकलाप को सुनिश्चित करते हैं। इस आलेख में हम इसी विवेचन को लेकर अपना पक्ष रखेंगे।

प्रमुख शब्द - सांस्कृतिक-विविधताएं, संरचना, दृष्टिकोण, परंपरा, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, विचार -विनिमय ,प्रयोगवादी, उपादान, जागरूकता, पिटक , महावग्ग, जातक कथाएं।

सामान्यतया बौद्ध काल छठी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर के परवर्ती काल में शंकराचार्य के उदय तक माना जाता है। वास्तव में वह कालखंड भारतीय सांस्कृतिक विविधताओं एवं संरचना की दृष्टि से विल क्षण कहा जा सकता है। भाषा, भाव, विचार, संस्कृति एवं सभ्यता के दृ ष्टिकोण से बौद्ध काल भारत के समृद्धतम कालखंडों में से एक माना जा सकता है। ''उस समय की प्रचलित भाषाओं में पाली , प्राकृत एवं अपभ्रंस प्रमुख थी, जिनको गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश की भाषा के रूप में अपना कर जन सामान्य से जुड़ने के लिए एक आधार भूमि के रूप में प्रस्तुत किया।''१

जब हम यह देखते हैं कि किसी भी विचार विनिमय और विचार प्रसार के लिए कोई भी संस्था अथवा व्यक्ति जन भाषा को अपने प्रयोग में लाती है तो विचार न केवल दीर्घकाल तक जीवित रहते हैं बल्कि कार्य व्यवहार में बहुत लंबे समय तक प्रयोग में लाए जा रहे होते हैं। बौद्ध काल का यह प्रयोगवादी कार्य भाषा के आधार पर उस काल खंड के विचार भावनाओं को संग्रहित करने का एक महत्वपूर्ण उपादान भी माना जा सकता है जिसे अपनी विशिष्टताओं के साथ हम देखते हैं। मानव सदा से ही मानव जाति की बेहतरी के लिए काम करना चाहता है। लोग इस तरह का कार्य कर युग में अमर हो जाते हैं। यह अमरता हमारे यस हमारे ख्याति हमारे प्रतिष्ठा को निश्चित आकार देते हैं। इसके माध्यम से हम समाज में सच्चाई की ध्वजा पताका को निरंतर आगे बढ़ा सकते हैं।

गौतम बुद्ध अपने जन्म स्थान के भाषा और विचार को लेकर उस के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाने के साथ स्वयं से जुड़ने की कवायद देखी जा सकती है। वह अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथ पाली भाषा में है। तीनों पिटक हमें पाली भाषा में ही मिलते हैं। मृत्त पिटक, विनय पिटक एवं अभिध म्म पिटक इसके प्रमुख उदाहरण माने जा सकते हैं। पिटक ग्रंथों, जातक कहानियों या महावग्गों की भाषाओं में, विचारों में हम उस काल खंड की स्थितियों का आकलन एवं प्रस्तुतीकरण पाते हैं। इन ग्रंथों में किस तरह की वैचारिक और सांस्कृतिक सामग्री है इससे बढ़कर हम यह भी देखते हैं कि ग्रंथों के माध्यम से उस समय के भाषाई परिवेश को, भाषाई संरचना को जोड़ने का काम किया गया।

''बहुत सारे शब्द जो आज प्रचलन में है अथवा नहीं है लेकिन उनके लिए वह कालखंड और उस कालखंड में रची गई साहित्य महाकोष की तरह हमारे सामने आते हैं। बौद्ध कालीन भाषा एवं संस्कृति पर विचार करने के पूर्व हमें भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उस कालखंड की सीमाओं के बारे में एक राय होना होगा।''२ वास्तव में किसी भी भूभाग के भौगोलिक कारक उस भू-भाग में प्रचलित संस्कृति के लिए बहुत हद तक उत्तरदाई होते हैं। सांस्कृतिक विविधता में उसका पालन करने वाले लोगों के निष्ठा का होना अत्यंत आवश्यक होता है। जब निष्ठावान लोग अपने समर्पण के साथ किसी कार्य को करते हैं तो वहाँ देर कल तक अपनी उपस्थिति को रेखांकित करता है। बौद्ध ध र्म की भाषिक पृष्ठभूमि में यह बात बड़े महत्व की है कि हम भाषा के द्वारा ही अपनी परंपराओं को अक्षुण्य रह सकते हैं।

'' वास्तव में भूगोल ही व्यक्ति को, उसके उच्चारण को, उसके द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले शब्दावली को आकार देता है। हम देखते हैं कि पूर्व में व को ''भ'' कहना ''श'' को ''स'' कहना जैसे उच्चारण गत विशेषताएं या लैंगिक विषमता शब्दों के प्रयोग में हमारे लिए यह मानक से इतर हो सकती है। लेकिन यह उस कालखंड की और वहां के लोगों की प्रमुख विशेषता मानी जा सकती है।''३ हम इसको तिरस्कृत और तिरोहित नहीं कर सकते क्योंकि पश्चिम में भी ''न'' को ''ण'' कहा जाता है।

बहुत सारे लोगों को बहुत सारे अक्षरों को बोलने में उनका लोप सामान्यतया देखने में आता है। यह एक ऐसी परंपरा है जो अपने समय के परिवेश एवं धाराओं को सुनिश्चित करता है। पूर्व की भाषिक अवधारणा और पश्चिम की भाषिक अवधारणा में जमीन आसमान का फर्क रहा है। ''प्रचलन में आने वाले शब्दों में हम यह देखते हैं वहां की उपलब्धियां, वहां के ऐश्वर्य, वहां का स्थापत्य, भवन निर्माण, खानपान, रीति- रिवाज जौर रहन-सहन के तौर तरीके उनके मूल्य ,मान्यता ,आदर्श और विश्वास में सहज ध्वनित होते हैं। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। जब हम परिवेश और उसकी संरचना पर बात करते हैं तो सहज ही यह बोधगम्य होता है।''४

हमारे द्वारा आज प्रयोग में लाए जाने वाले बहुत से शब्द हो सकता है आने वाले दिनों में अपना अस्तित्व खो बैठे। लेकिन आज के लिखे गए साहित्य में वह हमेशा जीवित रहेंगे , प्रयोग में हमेशा जीवित रहेंगे। ''इसी तरह से लौकिक या धार्मिक साहित्य के अंतर्गत बहुत सारे भाषिक विविधता और विशेषता के दर्शन होते हैं ,जो उस कालखंड की प्रवृत्तियों को हमारे सामने लाते हैं। परिवेश इस तरह से विनिर्मित होता है।''५ यह परिवेश भाषा का भी होता है , धर्म का भी होता है , संस्कृति का भी होता है तथा सभ्यता का भी होता है। परवेश सदैव शहरी और गांव से भी अलग-अलग विभाजित होता है जिसकी हम विवेचन अथवा व्याख्या कर रहे हैं।

''मानवीय संचेतना में भाषा उसके व्यवहार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हमारी भाषा ही यह बताती है कि हमारे संस्कार किस तरह के हैं। हम किस तरह के परिवार से आते हैं। किस तरह के समाज में हमारा पालन-पोषण हुआ है। किस तरह के लोगों में हमारा उठना बैठना है। भाषा ही एक व्यक्ति को उसका सम्मान दिलवाता है।''६ भाषा ही एक व्यक्ति का तिरस्कार, सम्मान एवं दोनों करवाती है। अब यह हम पर निर्भर है कि हम भाषा के द्वारा अपने आपको सम्मान के उच्च शिखर पर बैठा हुआ पाते हैं अथवा तिरस्कृत और तिरोहित हो कर समाज में अपमान के भागीदार होते हैं।

वास्तव में सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने जब बुद्धत्व को प्राप्त किया तो उसके बाद उन्होंने सबसे पहले आलार कालाम को जो उनके गुरु थे , उन्हें ढूंढा और उन्होंने उनको उस सत्य के दर्शन करवाए। उसके बारे में विवेचन किया, उस सत्य पर उनसे बातचीत की और यह कहा कि जिसे आप तक तक आपने नहीं ढूंढा वह यह है उस सत्य का मैंने अनुभव किया है। सत्य हमेशा समय सापेक्ष होता है सत्य को शब्दों से नहीं बल्कि उसकी सत्य धर्मिता के आवरण के अनुसार जाना जाता है। सत्य एकमात्र वह स्थिति है। जिसको पाने के लिए हर व्यक्ति जीवन पर्यंत प्रयास करता रहता है। हमारा प्रयास हमें हमारे सत्य से अवगत कराता है। यह सत्य ही आत्मसाक्षात्कार है, यह सत्य ही जीने का मकसद है।। और इस मकसद को प्राप्त करने के लिए बौद्ध धर्म और इसके भाषाई पृष्ठभूमि को जानना अत्यंत आवश्यक है।

''गौतम बुध के मन में आया कि मैं सारी दुनिया को सत्य बताना चाहता हूं। फिर आलार कालाम के साथ पूर्व में मिले चार ब्राह्मणों के पास गए और उन्हें उस सत्य को बताया। इस तरह से यह काफिला चल निकला। अपनी धार्मिक विवेचना शुरू की तो उनके सामने वैदिक संस्कृत संस्थान पहले से स्थापित थे। बुद्ध ने यह समझ लिया कि यदि उन्हें आमजन के बीच में अपनी पैठ बनानी है। अपने धर्म की विशेषताओं को बताना है। धर्म के आचारों का प्रसार करना है और लोगों में अपने आप को स्थापित करना है। तो जरूरी है कि वह लोगों की भाषाओं में अपने विचार विनिमय और अपने भाव प्रकट करें।''७ उनकी समस्याओं को सुन सके उनके सवालों को सुनकर उनका जवाब दे सके। बौद्ध धर्म इस मामले में अपने पूर्ववर्ती धर्मों से अलग है कि वहां पर संवाद की प्रचुर संभावनाएं सदैव बनी रहती हैं। यह संभावनाएं अपनी पारंपरिक सत्यता को सिद्ध करने का एक माध्यम बनती है। जिनके द्वारा मनुष्य पूर्व में मिले अर्जित ज्ञान को कुछ नया मिलाकर आने वाली पीढ़ियों हेतु तैयार करके सौंपता है।

''संवाद की यह स्वस्थ और स्वतंत्र प्रक्रिया गौतम बुद्ध ने उस समय की प्रचलित भाषा पाली में शुरू की। यही कारण है कि वह जन आंदोलन बनकर खड़ा हुआ। उस समय का जन आंदोलन आज के वैश्विक परिवेश में अपने आप को आज भी अर्थ वान बनाए हुए हैं।''८ मानव जाति की बेहतरी के लिए जो कार्य होते हैं वह दीघ्र्काल तक अपनी उपस्थिति को जन सामान्य और जन विशिष्ट में बनाए रखते हैं। बौद्ध धर्म इसी रूप में देखा, समझा और जाना जाता है। इसके माध्यम से आज भी विश्व को एक सूत्र में जोड़ कर उस की परिकल्पना की जा सकती है। हम जानते हैं कि व्यक्ति का प्रथम उद्देश्य आत्म कल्याण होता है। लेकिन यह तब तक संभव नहीं है जब तक कि वह जिस भूभाग में रह रहा है उसकी सीमाएं सुरक्षित ना हो। उसके भौतिक संसाधन उसके लिए उपलब्ध ना हो तो, ऐसी स्थिति में यह परिकल्पना ही पूरी तरह से आधारहीन है। उसके उदर पूर्ति से लेकर उसके रहने की व्यवस्था का प्रबंध हो जाने के बाद ही आत्म कल्याण जैसी परिकल्पना को साकार रूप देना संभव हो पाता है।

दुनिया में डेढ़ सौ से अधिक देश ऐसे हैं जहां बहुतायत बौद्ध धर्म के लोग पाए जाते हैं। यह इस धर्म की ताकत है। इसने वैश्विक परिवेश में अपनी स्वीकार्यता को अब तक बनाए रखा है। यह हम भारतवंशियों के लिए बहुत विशिष्ट बात है कि हमारे मध्य से प्रचलन में आया एक धर्म दुनिया के बड़े देशों के ज्यादातर निवासियों का धर्म बना हुआ है। जापान, कोरिया और चीन जैसे देशों में वहां का मुख्य धर्म बौद्ध धर्म ही है। धर्म देशकाल वातावरण को एक आधार प्रदान करता है। इसकी शिक्षाएं हमें निरंतर आगे बढ़ने को प्रेरित करती हैं। जब कभी भी हम आशंका के गहरे कुएं में डूबते हुए से होते हैं तो ऐसे समय में वह धर्म ही है। जो हमें वहां से निकाल कर के सत्य से हमारा परिचय कराता है। सत्य से हमारा परिचय प्रक्रियाओं के अधीन होता है। और वह प्रक्रिया है धर्म की मूल्यों को लेकर के हमारी मदद करती हैं।

इसी तरह सिंगापुर, इंडोनेशिया, थाईलैंड जैसे देशों में भी बौद्ध धर्म अपनी पकड़ को काफी गहरे तक बनाए हुए हैं। भारत इस रूप में बौद्ध धर्म की जन्मस्थली के रूप में माना जा सकता है। गौतम बुद्ध ने अपने जीवन में जिस ध र्म की परिकल्पना की थी आज वह साकार रूप से हमारे सामने उपस्थित है। यह हम सब की एक पूंजी है, जिसके माध्यम से हम अपने अस्तित्व अपने अहमियत को सारे विश्व के सामने रख सकते हैं। मनुष्य हमेशा से सत्य का अनुगामी होता है। सच्चाई उसे उसके उद्देश्य के करीब ले जाती है। उद्देश्य प्राप्ति हमारे जीवन का परम लक्ष्य होता है। मानव का अपने जीवन के प्रति उसका राग उसे निस प्रति कुछ न कुछ नया सकारात्मक करते रहने को प्रेरित, निर्देशित करता रहता है। मानव अपनी इस तरह की प्रवृत्तियों में स्वयं के विकास तथा समाज की प्रगति को अपना मुख्य लक्ष्य मानता है। मनुष्य के इस कार्य में उसके सहयोगी कुछ आचार-व्यवहार होते हैंय जिनके माध्यम से व्यक्ति नवीन आधार का सृजन कर पुरातन के जीर्ण-शीर्ण प्रवृत्तियों का तिरोभव कर पाता है। बुद्धचर्या इस तरह के कार्यों में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता रहता है। नियमों का यह संकलन एक दीर्घकालिक प्रवृत्तियों को हमारे लिए निर्मित करती है, जिसके सहयोग से हम अपनी जिज्ञासा का समाधान करते हुए नवीनता से भरे प्रभात का सृजन कर पाते है। मानव-मानव के मध्य सहयोग समन्बय में बुद्धचर्या मजबूत कड़ी साबित होती है।

सन्दर्भ सूची

१. बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ ३ /३७।
२. बुद्ध कालीन समाज एवं धर्म, डॉक्टर मदन मोहन सिंह, पटना, १६७४ पृष्ठ ५ /३५।
३. बौद्ध संस्कृति का इतिहास, भाग चंद्र जैन, पृष्ठ २०१।
४. बुद्ध कालीन समाज एवं धर्म, डॉक्टर मदन मोहन सिंह, पटना, १६७४, पृष्ठ २/६०।
५. बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ ३ /२५।
६. बौद्ध संस्कृति, राहुल सांकृत्यायन, कोलकाता, १६५२, पृष्ठ- ७/ १४।
७. बुद्धचर्या, राहुल सांकृत्यायन, पृष्ठ ३ /२६।
८. भारतीय संस्कृति व उसका इतिहास, सत्यकेतु विद्यालंकार, पृष्ठ ६/११।

डॉ० जय शंकर शुक्ल
टी. जी. टी. (हिन्दी),
सदस्य, कोर एकेडेमिक यूनिट
परीक्षा शाखा, शिक्षा निदेशालय
पुराना सचिवालय, सिविल लाइन्स
दिल्ली -११००५४
jayashankarshukla@gmail-com

बन्धन से आजाद

कभी कभी आइना भी हमारे अंदर की जिज्ञासा को पंख प्रदान कर देता है।चेहरे की लालिमा, निखरा हुआ रूप, कुछ लटकटी हुई लटें और अधरों की मुस्कराहट चट्टानों के सीने में हलचल पैदा करने के लिये पर्याप्त होते हैं।पैरों की पाजेब में तो तपस्वियों के ईमान भंग करने की क्षमता भला फिर आम आदमी की क्या औकात।
ऐसे ही रूप लावण्य की स्वामिनी अनुभूति आईने के सम्मुख खड़ी अपने अतीत में चली जाती है और वह पृष्ठ पढ़ने लगती है जो उसके शोध कार्य के समय का है।

प्रोफेसर डॉ व्यथित अपनी लेखनी के लिए जग मशहूर थे अपना ईमान डिगने से नहीं रोक पा रहे थे जब उनकी ऑफिस में एक सुंदरी अर्थात शोध की छात्रा ने उनके कमरे में आने की अन.ुमति माँगी।
''अरे तुमसे हजार बार कहा है कि मेरे आफिस में आने के लिए अनुमति की आवश्यकता नहीं है तुम मेरी प्रिय विद्यार्थियों में से एक हो।''
डॉ व्यथित ने अनुभूति के रूप लावण्य को एकटक निहारते हुए कहा।

यद्यपि इस प्रकार की टिप्पणी अनुभूति के लिए पहली बार थी फिर भी इसका बुरा नहीं माना गुरुदेव का आशीर्वाद समझकर खुश हो ली।
जब कोई लड़की पहली बार किसी की टिप्पणी सहन करले तो निश्चित रूप से सामने वाले की हिम्मत बढ़ जाती है।
''जी गुरुदेव जैसी आज्ञा आपकी।'' इतना कहकर अंदर दाखिल हो गयी उनके घर के आवास में बने उनके ऑफिस में।
''अरे अरे खड़ी क्यों हों बैठो न।''
''जी।'' कहते हुए कुर्सी खींचकर बैठ गयी ।
अपने शोध पर किये गए कार्य की फाइल आगे बढाते हुए-
''सर सारा काम पूरा ही चुका है एक बार आप देख लीजिए कुछ कमी हो तो बता दीजिए नहीं तो टाइप करा के सबमिट करने के लिये तैयार करा लूँ।''
''अरे तुमने किया है अच्छा ही किया होगा तुम प्रतिभाशाली हो सर्वगुण सम्पन्न हो। तुम्हारे कार्य से हम हमेशा खुश रहते हैं।''
इस प्रकार का अतिरिक्त स्नेह आज गुरुदेव क्यों उड़ेल रहे थे। समझ से परे था अनुभूति के।
अपनी कुर्सी से उठते हुए उसके निकट आकर उसके कंधो पर दोनों हाथ रखते हुए-
''आज अपनी फाइल को यहीं छोड़ दो कल आकर ले जाना कुछ होगा तो मैं करेक्शन कर दूँगा।''
इतना ही कह पाये थे डॉ व्यथित ,अनुभूति अपनी कुर्सी से खड़ी हो गयी उसे अपने कंधों पर रखे हाथ और उनकी हरकत कुछ अजीब सी लगी। लेकिन अपने अंदर के भय को छिपाती हुए
''सर आज मैं चलती हूँ। कल आकर फाइल ले लूँगी।''
हाथ नीचे सरकते हुए कमर तक आ गए थे। अनुभूति एक दम अलग हो गयी । उसे अटपटा से लगा।
गुरुदेव की आज्ञा लेकर अपने घर को चल दी।
विस्तर पर निमग्न पड़ी सोच रही थी जिन्हें मैं अपना आदर्श गुरुदेव मानती है आखिर वो ऐसी हरकत कैसे कर सकते हैं। रात भर आँखों से नींद गायब रही।
शहर में किराए पर एक कमरा ले रखा था केवल पी एच डी की पढ़ाई करने के लिये।
कुछ महीनों पहले उसका पति राहुल अपनी दोनों बेटियों को भी छोड़ गया था यह कहकर अब इन्हें अपने पास ही रखो मुझे आज से तुम्हारा हमसे कोई वास्ता नहीं। तुम्हारी पी एच डी तुम्हें मुबारक। और ये रहे तलाक नामे के कागज । अब तुम बन्धन से मुक्त हो जो चाहे सो करो।''

अनुभूति ने कुछ नहीं कहा था यह सोचकर कि कुछ दिनों में थीसिस सबमिट हो जाएगी तब मना लेगी। राहुल को और उसके परिवार को। यद्यपि यह बहुत कठिन भी था क्योंकि उनका पूरा घर उसकी पी एच डी करने के खिलाफ जो था। लेकिन अनुभूति का जुनून ही था आगे पढ़ाई करने का ।
उसके अपने सपने थे उन्हें पूरा करने की जिद थी तभी अपना गाँव छोड़कर शहर में आकर पी एच डी कर रही थी।

डॉ व्यथित का इकलौता बेटा प्रबोध बहुत होशियार था उसकी भी एम बी ए कम्प्लीट हो चुकी थी । नोयडा में किसी विदेशी कम्पनी में अच्छी जॉब भी कर रहा था। आज रविवार होने के कारण घर पर ही था। अपने पिता की आँखों का तारा था। वह बहुत आज्ञाकारी था। माँ कुछ अस्वस्थ रहती थीं इसलिए घर के कार्य अक्सर छुट्टी वाले दिन संभाल लिया करता था।
डॉ व्यथित अपने कमरे में चहल कदमी कर रहे थे, अपने नाम के अनुरूप कुछ व्यथित भी थे। कभी हाथों को रगड़ते कभी सिर खुजलाते।
बाहर से आवाज आई
''क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ।''
यह चिर परिचित आवाज थी जिसका जिसकी प्रतीक्षा में कमरे में चहल कदमी हो रही थी।
''अरे अनुभूति तुम! तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था। तुम्हारे बिना आज मन नहीं लग रहा था। आ गयी, आओ बैठो आज हमारे पास बैठो।''
उसकी कुर्सी को अपनी तरफ खीचते हुए।

अनुभूति को समझते हुए देर नहीं लगी आखिर गुरुदेव के मन में क्या चल रहा है। उसने सुन रखा था अक्सर गाइड शोषण करते हैं। लेकिन डॉ व्यथित के बारे में बहुत जानकारी ली थी। सभी ने अच्छे चरित्र के बारे में ही बताया था। आज ये भी ऐसे ही निकले।
थोड़ी सावधान हो गयी किसी आभासी खतरे के लिये।
डॉ व्यथित आज बड़े रसिक मिजाज हो रहे थे

''देखो अनुभूति तुम बहुत सुंदर हो तुम्हारा रूप लावण्य किसी को भी डिगा सकता है आखिर हम तो इंसान ही ठहरे। आज क्यों न गुरुदक्षिणा में भ्रमर बनकर तुम जैसी कली का रास्वादन कर लिया जाए।''
''गुरुदेव मैं आपका बहुत आदर करती हूँ। आपके लिये मेरे मन मे श्रद्धा है। उसे मत डिगने दीजिये।''

गुरुदेव पर तो आज कुछ अलग ही भूत सवार था।जबरदस्ती हाथ पकड़ते हुए ''क्या बचपना है, समझ से काम लो तुम्हें थीसिस सबमिट नहीं करनी है क्या?''

गुरूदेव ने अपना ब्रह्मास्त्र फेंक दिया।
हाथ झटकते हुए अनुभूति ने कहा
''गुरुदेव मैं भूल जाऊंगी आप मेरे गाइड हैं। अपनी पी एच डी छोड़ सकती हूँ पर ये कभी नहीं।'' कहते हुए कमरे से बाहर निकली। कमरे के बाहर प्रबोध ट्रे में चाय लेकर खड़ा था इसलिए आज सन्डे में पापा से कोई मिलने आया है। तो चाय पिला दी जाये।लेकिन अंदर के वा. र्तालाप ने उसे हिलाकर रख दिया जिसे अपने पापा पर बहुत गर्व था आज उनकी सारी बातें सुनकर उसका भी सिर शर्म से झुक गया था।
गेट से बाहर निकलते हुए अनुभूति की नजरें एक बार प्रबोध से टकरायीं और यह जानकर इसने सब सुना है इसी शर्म में बिना कुछ कहे सिर नीचा किये हुए अपने कमरे पर चलती बनी। यद्यपि कई बार मिल चुकी थी उससे अच्छी दोस्ती भी हो चुकी थी लेकिन आज बिना कुछ कहे निकल चुकी थी।
इधर प्रबोध को कुछ हमदर्दी होने लगी अनुभूति से।
वह अपना स्कूटर लेकर चल दिया उसके ऑटो का पीछा करते हुए। अनुभूति अनभिज्ञ थी। जब वह अपने कमरे पर पहुँची तो अंदर कमरा बन्द करके चरपाई पर लेट गई और सुबकने लगी।
बाहर से कमरा खटखटाया प्रबोध ने ।
अपने आँसू पौंछते हुए। कमरा खोला तो द्वार पर खड़े प्रबोध को दे खकर
''बाप घर पर किसी लड़की के साथ जबरदस्ती करता है उसका बेटा उसके घर तक पीछा करे यही है चरित्र तुम दोनों का।''
गुस्से में आग बबूला होते हुए और भी भड़ास निकाल ली प्रबोध पर।
प्रबोध ने बिल्कुल बुरा नहीं माना क्योंकि उससे मित्रता जो थी।
''क्या अंदर आने को नहीं बोलेगी आज?नाराज अपने गुरुदेव से हो मुझसे तो नहीं।''
आओ आओ अन्दर बैठने का संकेत करते हुए कुर्सी की तरफ
''बताओ क्या कहना चाहते हो प्रबोध? पिताजी के बारे में कुछ सफाई देने की आवश्यकता नही है।''
''नहीं उनकी तरफ से कोई सफाई नहीं दूँगा उसे देखकर तो मैं भी हैरान हूँ मेरा मन भी विचलित हो रहा है और शर्मिन्दा हूँ उनके कृत्य पर।''
'' फिर क्या कहना चाहते हो?''
पिछले तीन साल से हम एक दूसरे को जानते हैं । एक दूसरे को समझते भी हैं। क्यों न इस समझदारी को आगे बढ़ाया जाए।''
''क्या मतलब मैं समझी नहीं ?''
''देखो अन्नू मैं बहुत दिन से एक बात कहना चाह रहा था आज हिम्मत जुटा कर कह रहा हूँ। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ और तुमसे शादी करना चाहता हूँ।'' हिम्मत बटोरकर कह ही दी आखिर अपने दिल की बात। कुछ दिनों में अपने पापा से ये बात करने वाला था लेकिन परिस्थितियों ने आज कहने को मजबूर कर दिया।
अनुभूति निशब्द थी। वह भी उसे बहुत चाहती थी लेकिन कुछ सामाजिक बेड़ियाँ उसके पांवों में पड़ीं थी इसलिए इतना ही उत्तर दे पायी।
''देखो प्रबोध पागल मत बनो तुम्हें कोई न कोई न लड़की मिल जाएगी। मैं नहीं कर सकती मेरी भी कुछ मजबूरियां है। मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ।'' कहकर शांत हो गयी।
''आखिर ऐसी कौन सी मजबूरियां हैं मैं भी तो सुनूँ?'' प्रबोध ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।
अनुभूति ने लाख समझाया लेकिन प्रबोध मानने को तैयार नहीं था। थककर इतना ही कहा चलो अपनी आँखों से देख लो मेरी मजबूरी उसका हाथ पकड़ते हुए उसे अंदर कमरे में ले गयी। चारपाई पर सोते हुए दोनों बेटियों की तरफ इशारा करते हुए
''मैं दो बच्चों की माँ हूँ।मेरी यह मजबूरी है और उनके प्रति जिम्मेदारी भी। इसलिए मैं यह शादी नहीं कर सकती।''
सुनकर बिल्कुल भी कोई अंतर नहीं पड़ा।
''तो क्या हुआ अब भी मैं तुम्हें उतना ही प्यार करता हूँ जितना पहले करता था। रही बात इन बच्चों की तो यह मुझे पहले से ही मालूम है पिछले सप्ताह तुम्हारी डायरी में सब पढ़ लिया था। मैंने तुम्हारी आत्मा से प्यार किया है।''
''इन बच्चों को अपना सकोगे?''
''जी बिल्कुल आज से इन्हें मैं अपना नाम दूँगा। और भविष्य में कोई दूसरा बच्चा भी पैदा नहीं करूँगा ये मेरी प्रतिज्ञा है।''
दोनों एक दूसरे के गले लग गए जैसे कई जन्मों के बिछुड़े अब मिले हो।
एक दूसरे से अलग होते हुए। अनुभूति ने अलमारी में रखे कुछ पेपर निकाले और उन पर हस्ताक्षर करने लगी।
''यह क्या है अन्नू?''
यह हमारा बन्धन है जो मेरे पैरों को जकड़े हैं।''
''मतलब।'' आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।
अपनी तलाकनामे पर हस्ताक्षर ! जो पिछले महीने मेरा आदमी मुझे सौप गया था और हो जाती हूँ बन्धन से आजाद।

डॉ राजीव पाण्डेय
गाजियाबाद(उत्तर प्रदेश)
भारत
मोबाइल-९९९०६५०५७०

अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका

एक स्वतंत्रता सेनानी की व्यथा कथा का वर्णन

समा पाये तुम न थे
अब तलक मन ध्यान में।
सोचती थी उर लगूँगी
दिवस के अवसान मे।।
हाथ से मेंहदी न सूखी,
अरु महावर पाँव से।
चेतना मारी गई जब
तुम आये तिरंगे परिधान में।।१।।

देखते थे तुम पलट कर
द्वार पर हूँ मैं खड़ी।
अनकही सी अनमनी सी
वेदना सिसकी बड़ी।
साथ इतना ही लिखा था।
प्रभु के इस विधान में
चेतना मारी गई जब,
तुम आये तिरंगे परिधान में।।२।।

काश होती यदि उदर में
प्यार की अनुपम निशानी
काट लेती चैन सें मैं,
इकली ही सारी जवानी
किन्तु बोलो जी सकूंगी
कैसे जगत व्यवधान में।
चेतना मारी गई जब तुम
आये तिरंगे परिधान में।।३।।

आगे चलना पीछे तकना,
नैन में छाया हुआ है।
अनछुई सी छुअन से मन
आज बौराया हुआ है।
काश पाती बाँध नैनों को,
किसी संधान में ।
चेतना मारी गई जब,
तुम आये तिरंगे परिधान में।।४।।

कैसे कह दूँ तुम नहीं हो
मेरे अंतस्थल पड़े हो।
माँग पौंछूँगी नहीं मैं
सामने प्रिय तुम खड़े हो।
चंद सांसों का सफर था
देह के दालान में।
चेतना मारी गई जब
तुम आये तिरंगे परिधान में।।५।।

आँख से आँसू न टपके
आह भी निकली नहीं।
प्राण मन बोलो हमारे
बात क्यों सुनते नहीं।
ऐसा दिन भी देखेंगे
था नहीं संज्ञान में।
चेतना मारी गई जब
तुम आये तिरंगे परिधान में।।६।।

• **डॉ वीणा मित्तल**
कवयित्री एवं चिकित्सक
गाजियाबाद
मो.--९८११०७६२५४

गजल

लगता नहीं है दिल कहीं तेरे जहान में।
तुझको पुकारूं रात दिन अपनी अजान में।।

बेबस हुआ है बाप ,बुढ़ापा बिगड़ गया,
बहुएँ लड़ें हैं घर में , तो बेटे दुकान में।

जख़्मी हुई है जिंदगी हर सांस पर यहाँ,
तूने चढ़ाये तीर थे कितने कमान में।

चाँदी सभी ने बाँट ली,सोना बँटा सभी
तस्वीर छोड़ी बाप की उजड़े मकान में।

चहरा बुझा-बुझा हुआ, आँखे उदास हैं,
क्या जिंदगी ये आ गई अपनी ढलान में।

हमने बुलाया जो उन्हें पढ़ने कलाम इक,
आधी घड़ी गुजार दी खुद के बखान में।

कैसे छुआ था आसमां ‘‘आशा‘‘ बता जरा,
काटे गये थे पर तेरे पहली उड़ान में।

• **आशा पाण्डेय ओझा**

बिटिया पूछे एक सवाल

मासूम सा चेहरा आंखों में सपनों की उड़ान,
पापा का हाथो में लिए हाथ बिटिया पूछे एक सवाल
पापा आज क्यों सुरक्षित नहीं है बेटियां,
क्यों कोई बेटी किसी पर पूर्ण विश्वास नहीं कर पाती है,
क्यों वो अपने ही चाचा,मामा, फूफा, अंकल भाई के हाथों धोखा खाती है ,
एक छोटी सी कली खिलनें से पहले ही इनके द्वारा मसली जाती है।
क्या ऐसा करते वक्त इनकी मति हर ली जाती है,
और एक पल भी अपनी बहन, बेटी, और माँ के बारे में सोच क्या लाज इन्हें नही आती है?
क्या कसूर है उन बच्चियों का जिन्होंने अभी तक ठीक से बचपन भी नहीं देखा है,
जैसे तैसे तो माता पिता की बदौलत रूढिवादिता के बंधन तोड़ वो धरती पर आती है
अपनी प्यारी सी अठखलियों से सब के दिलों में जगह बनाती है।जैसे तैसे तो अभी अभी गिर गिर कर उसने चलना सीखा है,
अपनी हिम्मत से धीरे धीरे जीवन की राह में आगे बढ़ना सीखा है।
फिर अचानक कहां से अलग- अलग रूप में ये हैवान दानव आ जाते है
और अपने दुष्कर्मो से सारी मानव जाति को शर्मसार कर जाते है।
एक छोटी सी कली खिलने से पहले ही मुरझा जाती है,
माँ बाप की सोनचिडिया जीवन जीने से पहले ही उड़ जाती है। परिवार की खिलती फुलवारी एक पल में ही वीरान हो जाती है।
पापा कब खत्म होगा ये बच्चियों पर होता अत्याचार,
कब वो अपनी पूर्ण सुरक्षा और आजादी से जी पायेंगी,
कब वो अपने सपनों की उड़ान पूर्ण कर पायेंगी।
काश ऐसा हो जाये सब अपनी जिम्मेदारियो और कर्तृतव्यों को समझ जाए,
और इस समाज मे सबकी बेटियाँ पूर्ण सुरक्षा और सामान पा जाए। तब ये जहां जहां नहीं रह जायेगा, एक सुंदर सी जन्नत तब ये बन जाएगी।

बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ।

- **डॉ. सुमन अग्रवाल**

प्रधानाध्यापिका शिवा प्राथमिक पाठशाला,
नगर क्षेत्र ,हापुड़।
महामंत्री उत्तर प्रदेश महिला शिक्षक संघ।

अनुकूल संदेश

कल शाम को अपनी छत पर बिटिया ध्रुवी एवं हिलोर के साथ टहल रहा था कि यकायक चारों ओर तूफान आना शुरू हुआ और जोरदार बारिश आनी शुरू हुई।

बारिश में एक घटना घटी. पेड पर एक घोंसला तेज हवाओं से अचानक गिर गया. वे दोनों पंछी निशब्द होकर चुपचाप कोने में दुबककर बैठे रहे और आपस में दोनों कुछ बात करने लगे। थोड़ी देर बाद-

'चिडा' - " अब सुबह बात करेंगे."

'चिडी' - " ठीक है."

रात खत्म होने की राह देखते हुए दोनों बैठे रहे।

सुबह हुई सूरज का प्रकाश निकला।

चिडा उत्साह से बोला, "चल निकलते है अब !!!! फिरसे नई काडियां लाकर नया घोंसला बनाते है।"

चिड़िया की आंख में आंसू आ गए तो चिडा बोला

- "अरे पगली, 'गिराना' उसके हाथ में है, तो 'बांधना' हमारे हाथ में है. और मदद की राह देखते रहने के लिए अपन 'इंसान' थोडी ना है !!!!

चल अब निकलते है।"

और दोनों ने पंखों को फड़फड़ाते हुए उंचे आकाश की ओर लंबी उडान भर ली...

शायद इसीका नाम है-जिंदगी

"एक दूसरे को जोड़ने का तरीका प्यार है।
एक दूसरे को तोड़ने का तरीका खार है।
भले ही आप मेरे विचारों से सहमत ना हो ।
पर मेरा अनुभव एक शुद्ध विचार है।।

- **विपिन कुमार भट्ट**

प्रतीक्षा

बहुत बार हम एक ही परिस्थिति से बार-बार गुजरने पर भी हम उसके अभ्यिस्त नहीं हैं। प्रतीक्षा करना एक आदत सी बन जाती है जो कहीं ना कहीं एक समस्या भी बन जाती है। एक और समस्या तो दूसरी और उसकी आदत जिसमें वह निरंतर प्रतीक्षा करना और यह प्रती क्षा कहीं न कहीं मन में तनाव पैदा करती है जहां हर एक फोन की घंटी बजने पर लगता है कि ये वही फोन है जिसका हमें बेसब्री से प्रतीक्षा थी। जब समय बीतता जाता है फोन और मैसेज नहीं आते तो बेबस होकर बिस्तर पर जाकर अपना मुंह छुपा कर लेट जाती है ऐसे प्रतीत होता है जैसे स्वयं से अपने को छुपा रही हैं कोई भी काम किया जाए लेकिन मन तो उसका फोन की घंटी पर ही लगा रहता है।

जब नीता का मन ठीक नहीं होता और वह अकेली होती है तो अपनी सहेली नीलम से कहती है कि तुम कहीं भी जाओ देखो जल्दी आना मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूंगी। नीलम अपने दोस्त के साथ बाहर चली जाती है और नीता उसे स्तब्ध देखती है उसे व उसके दोस्त अरुण को जाते हुए।

अरुण ने हाथ हिलाकर नीता से बाय कहा और नीलम व अरुण साथ-साथ चल दिए तभी नीता उन्हें मुग्धर भाव से देखती रही और खुले दरवाजे को खटके से बंद किया।

अरुण कुछ दिनों के लिए कलकत्ता आया हुआ था अपने काम से नीलम और अरुण की पहचान बहुत पुरानी थी जब भी अरुण कलकत्ता आता नीलम से आकर जरूर मिलता उनके जाते ही नीता अपने विचारों में गुम हो जाती और उसकी प्रतीक्षा शुरू हो जाती है।

उसे ऐसे लगने लगता है जैसे यह क्रम वर्षों से चल रहा हो नीता के सामने अरुण बहुत खुल जाता नीलम के पास बैठना और उससे हंस-हंस कर बात करना लेकिन नीता को कभी पसंद नहीं भी आता तो वह कोई सवाल नहीं उठाती नीलम देर से उठती गुनगुनाते हुए तो नीता को लगने लगता है जैसे सारी फिल्म हिंदी-अंग्रेजी इसी ने देख ली हों।

नीता को अपने दिनों की याद आ गई जब वह भी किसी के साथ बहुत खुश रहती थी हंसती मुस्कुराती थी लेकिन एक दिन उसके बाबूजी को पता चल गया तो उन्होंने नरेन्द्री को बहुत अपमानित कर घर से निकाल दिया और नीता तभी से अकेले और उदास सी रहने लगी लेकिन जाते वक्त नरेंद्र ने नीता से कहा मैं तुमसे मिलने जरूर आऊंगा नीता को रोज ही उसके फोन का इंतजार रहने लगा।

नीता, नीलम और अरुण को देखती तो कहीं अवसाद बढ़ सा जाता और कहीं-कहीं अपनी असमर्थता का, हीनता का बोध भी उसके मन में घर करता है।

नीता के पिता नीता की शादी करने की जब बात करते हैं तो वह कहती है मुझे अभी अपनी पढ़ाई पूरी करनी है और वह अपनी पढ़ाई पूरी करते हुए कह्लेज में नौकरी करने लगी और उसके पिता का घर छूट गया जहां उसे रोज-रोज अपमानित होना पड़ता था। अब उसकी वह स्थिति नहीं थी वह अलग कलकत्ता में रह रही थी उसके पास उसकी सहेली नीलम थी दोनों का समय बहुत अच्छे से व्यतीत होता था नीता बड़ी थी, जिससे उसे नीलम की बहुत चिंता रहती नीलम को वह अपनी छोटी बहन, बेटी की तरह ही प्यार करने लगी। जब नीलम के पास अरुण आ जाता तो वह भी प्रसन्न हो जाती क्योंकि अरुण की शादी हो गई थी तब भी वह नीलम से मिलता, नीता के यहां काम करने वाली बाई पूछती ये आदमी कौन है? नीता कहती कौन ये उसका आदमी है उसे मनाने आया है। उसने काम करने वाली बाई से कह तो दिया ले. किन उसे डर लगा रहता हमेशा ही क्योंकि नीता और नीलम इतने बड़े-बड़े शहरों में दोनों अकेली रहती थी।

नीता बहुत ही सादगी से रहती वहीं नीलम बड़े साज श्रृंगार के साथ रहती नीलम कभी-कभी कहने लगती लिपस्टिक हल्का जूड़ा बना लिया करो जैसे वह सुनकर अनसुना कर देती। नीलम डांस करती वह उसे दे खती रहती कि उसके कितने सपने हैं उसके जीवन के लेकिन नीता परेशान होती कभी-कभी उसे अरुण की उपस्थिति असहाय लगने लगती थी।

नीता सोचती क्या नीलम और अरुण की शादी हो जाएगी? अरुण नीलम से शादी कर लेगा तब उसका क्या होगा क्योंकि वह अपना जीवन तो नीलम के साथ ही देखने लगी थी उसे कभी-कभी अरुण का आना खटकने लगता है एक दिन नीलम और नीता के बीच में कहा सुनी हो गई तो नीलम ने कहा ठीक है मैं दूसरा घर देख लूंगी नीता को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ नीलम स्वतंत्र विचार वालों थी क्योंदकि बचपन से ही वह अकेली थी उसके माता-पिता का देंहात हो गया था। तो उसे किसी का भी का प्य्राृ नही मिला तब उसके जीवन में अरूण आया और वह अरूण से प्यार तो करती लेकिन वह अपने और दोस्तों के साथ भी घूमती फिरती थी सुबह जब नीता अपने कह्लेज चली गई तो नीलम ने एक पर्ची लिखी और घर छोड़ दिया वह कहां जाकर रह रही है वहां का पता लिखकर दरवाजे के भीतर छोड़ दी की जैसे ही नीता दरवाजा खोले उसे मिल जाये। नीता ने तो इसकी कल्पना भी नहीं की थी नीता जिस अहृटो से आई थी उस अहृटो वाले को रोककर जो पता लिखा था वहां पहुंच गई दरवाजा खटखटाया दरवाजा खुला उसने नीलम का सामान अहृटो वाले से कहा अहृटो में रखो और नीलम का हाथ पकड़ा और नीलम को वापस ले आई। रास्ते भर दोनों में आपस में कोई बात नहीं की। नीता ने उस दिन घर में खाना नहीं बनाया खाना होटल से मंगा लिया उसने अपने हाथों से नीलम को खाना खिलाया तो नीलम फूट-फूट कर रोने लगी और नीता भी रोने लगी किसी तरह दोनों ने खाना खाया। नीता बच्चों की तरह नीलम को प्यार करने लगी।

नीता की तो जैसे जिंदगी ही नीलम बन गई थी दोनों ने घूमने का प्रोग्राम बनाया एक हफ्ते का अवकाश लेकर नीता और नीलम कश्मीर की सैर करने चले गए दोनों कश्मीर की वादियों में खो गये तभी नीलम नीता से पूछती है आपने किसी से प्यार नहीं किया आपको तो अरुण के बारे में मालूम है वह कहीं पर भी रहे वह हमारा प्यार है। लेकिन आपने कभी नहीं बताया कि आपने किसी से प्यार किया तो आपने शादी क्यों नहीं की?

नीता ने कहा हां जब मैं कह्लेज में पढ़ रही थी तब लेकिन मेरे पिताजी ने उसे बहुत अपमानित करके घर से निकाल दिया तो मैंने अपनी पढ़ाई पूरी करके नौकरी करने लगी और अपना ट्रांसफर यहां ले लिया उसने कहा था कि वह जरूर आएगा आज भी इतना कहकर वह चुप हो गई और खिड़कियों से बाहर देखने लगी एक स्तब्ध मौन सी जैसे वह पचास वर्ष की हो गई हो लेकिन आज भी उसे उसके आने की प्रतीक्षा हो।

• **डॉ. ऊषा अग्रवाल**
महाछतरपुर (मध्यप्रदेश)

यशोधरा में नारी जीवन

यशोधरा मैथिलीशरण गुप्त लिखित एक सुन्दर खंडकाव्य है , जिसमें एक नारी मन की गौरवपूर्ण और सहज अभिव्यक्ति हुई है। इस खंडकाव्य में यशोधरा की सदाशयता और उसकी महानता का गौरवपूर्ण वर्णन हुआ है। गौतम बुद्ध जिनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था , वे बाल्यकाल से हीं वीतराग प्रवृत्ति के थे , जिसके कारण उनके पिता राजा शुद्धोधन चिंतित रहते थे , इसलिए अतिशीघ्र हीं सिद्धार्थ के योग्य वधू की खोज प्रारम्भ हुई और देवदह की राजकुमारी यशोधरा उन्हें पसंद आगई, परन्तु यशोधरा के पिता महाराज दंडपाणि ने वर की बल - बुद्धि की परीक्षा लेनी चाही और राजकुमार सिद्धार्थ सबमें उत्तीर्ण हुए और दोनों का विवाह हो गया। परन्तु फिर भी राजकुमार सिद्धार्थ के मन में जीवन सत्य को पाने की अभिलाषा बनी रही , और एक रात सोती हुई यशोधरा और पुत्र राहुल को छोड़कर उन्होंने गृहत्याग कर दिया। यशोधरा को यहीं बात चुभ जाती है , वह कहती है ---

" सिद्धि - हेतु स्वामी गये , यह गौरव की बात ,
पर चोरी - चोरी गये , यहीं बड़ा ब्याघात ।" १

यशोधरा के मन में इसी बात की टीस रहती है , और उसे बहुत क्षोभ होता है कि वे उसे पथ की बाधा मानते रहे ------

" सखि , वे मुझसे कह कर जाते ,
कह , तो क्या मुझको वे अपनी पथ - बाधा हीं पाते ?" २

यशोधरा अपने मन की पीड़ा अपनी सखि से अभिव्यक्त करते हुए कहती है , हम नारियाँ त्याग में पुरुषों से किंचित मात्र भी कम नहीं हैं , फिर भी उन्होंने ऐसा क्यों किया ?

" स्वयं सुसज्जित करके क्षण में
प्रियतम को प्राणों के पण में ,
हमीं भेज देतीं हैं रण में -----
क्षात्र - धर्म के नाते।
सखि , वे मुझसे कहकर जाते । " ३

केवल यशोधरा हीं नहीं , सिद्धार्थ को पालने वाली उनकी मौसी महाप्रजावती के मन में भी कुछ इस तरह के भाव उठते हैं ----

" मैनें दूध पिला कर पाला।
सोती छोड़ गया पर मुझको वह मेरा मतवाला।
कहाँ न जाने वह भटकेगा ,
किस झाड़ी में जा अटकेगा।
हाय ! उसे काँटा खटकेगा ,
वह है भोला - भाला
मैनें दूध पिलाकर पाला । ४

जब यशोधरा छंदक के द्वारा यह समाचार सुनती है कि जाते समय सिद्धार्थ ने अपने केश काट दिए थे , तो वह भी अपने केश काट डालती है ---

" जाओ , मेरे सिर के बाल !
आलि , कर्तृतरी ला , मैंने क्या पाले काले ब्याल ? ५

वह सारे आभूषणों का भी त्याग कर देती है ----

" कसें न और मुझे अब आकर हेमहीर , मणिमाल ,
चार चूड़ियाँ हीं हाथों में पड़ी रहें चिरकाल । " ६

वह अपने सिंदूर से कहती है , यह मेरे भाल में इसीलिए जगा रहे ताकि उनकेपथ के सारे अंगार जला सके ----

" बस , सिंदूर - बिंदु से मेरा जगा रहे यह भाल ,
वह जलता अंगार जला दे उनका सब जंजाल। " ७

यशोधरा कहती है , नारी - शक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति होती है -----

" अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी !
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा , अब है मेरी बारी । " ८

यशोधरा एक शाश्वत प्रश्न इस खंडकाव्य में उठाती है ---

" सिद्धि - मार्ग की बाधा नारी !
फिर उसकी क्या गति है।
पर उनसे पूछूँ क्या , जिनको मुझसे आज विरति है। " ९

फिर भी यशोधरा को अपने समर्पण पर पूर्ण विश्वास है कि वे एक दिन इसी आँगन में पुनः आवेंगें ---

" उन्हें समर्पित कर दिये , यदि मैनें सब काम ,
तो आवेंगे एक दिन , निश्चय मेरे राम।
यहीं , इसी आँगन में ,
सखि , प्रियतम हैं वन में ?" १०

यशोधरा सिद्धार्थ के विरह में ब्याकुल है , परन्तु वह एक माता है , अतः उसका भी दायित्व उसे निभाना है , वह कहती है -----

" स्वामी मुझको मरने का भी दे न गये अधिकार ,
छोड़ गये मुझ पर अपने उस राहुल का सब भार ,
जिये जल - जल कर काया री !
मरण सुन्दर बन आया री !" ११

राहुल को पालने के समय उसके मन में अनेकानेक भाव उठते हैं , वह कहती है ---

" तुझको क्षीर पिला कर लूंगी ,
नयन - नीर हीं उनको दूंगी ,
पर क्या पक्षपातिनी हूँगी ?
मैंने अपने सब रस त्यागे
चुप रह , चुप रह , हाय अभागे !" १२

और नारी जीवन की इसी विवशता को देखकर उसके मुख से अनायास निकल पड़ता है ----

" अबला - जीवन , हाय ! तुम्हारी यहीं कहानी ----
आँचल में है दूध और आँखों में पानी !" १३

राहुल यशोधरा से पूछता है -- मां , पिताजी कब आयेंगें ?इस पर यशोधरा उसे धीरज धरने के लिए कहती है , *वह राहुल को बहलाने - फुसलाने की चेष्टा करती है , और कहती है ---*

" मुझे भले हीं भूल जाएँ वे तुझे क्यों न अपनायेंगे ,
कोई पिता न लाया होगा , वह पदार्थ वे लायेंगें। "१४

राहुल भी अपनी माँ की असमर्थता पर उन्हें समझाता है , और उन्हें ढाढ़स दे रहा है ---

" सुध करके सुध खो रही तू उनकी छवि आँक य
वे तेरी इस मूर्ति को देखेंगे कब झाँक ?
गाती है मेरे लिए , रोती उनके अर्थ य
हम दोनों के बीच तू पागल - सी असमर्थ ?" १५

राहुल बड़ा होने पर कई तरह के प्रश्न यशोधरा से करने लगता है , इस पर यशोधरा ब्याकुल हो जाती है , एक बार एकांत में वह सिद्धार्थ का चिंतन करते हुए उन्हें पुकारती हुई कहती है ---

" राहुल पल कर जैसे - तैसे
करने लगा प्रश्न कुछ वैसे ,
मैं अबोध , उत्तर दूँ कैसे ?
वह मेरा विश्वासी ,
आओ हो वनवासी !" १६

इस चिंता में यशोधरा को यह समाचार प्राप्त होता है कि सिद्धार्थ सिद्धि प्राप्त कर लौट आये हैं और वे कपिलवस्तु के बाहर ठहरे हुए हैं , घर के सारे लोग उनसे मिलने जाने को उत्सुक हैं , और यशोधरा से भी चलने के लिए कहते हैं , परन्तु यशोधरा कहती है कि वे मुझे सोती छोड़ कर गये थे इसलिए जब तक वे स्वयं आकर मुझे नहीं अपनाएंगें , मैं स्वयं उनसे मिलने नहीं जाऊँगी , इस पर शुद्धोधन यशोधरा की महत्ता स्थापित करते हुए कहते हैं ---

" तेरे अर्थ हीं तो मुझे उसकी अपेक्षा है
गोपा बिना गौतम भी ग्राह्य नहीं मुझको। " १७

और अंततः भगवान बुद्ध गोपा के मान की रक्षा करते हैं , और स्वयं उससे मिलने आते हैं ---

मानिनि , मान तजो लो , रही तुम्हारी बान !
दानिनि , आया स्वयं द्वार पर यह तव - तत्र भवान !" १८

वे क्षमा मांगते हुए कहते हैं ----

" माना , दुर्बल हीं था गौतम छिप कर गया निदान
किन्तु शुभे , परिणाम भला हीं हुआ , सुधा - संधान ,
क्षमा करो सिद्धार्थ शाक्य की निर्दयता प्रिय जान
मैत्री - करुणा - पूर्ण आज वह शुद्ध - बुद्ध भगवान। " १९

गौतम बुद्ध भी नारी - जीवन की महानता के आगे नतमस्तक हो जाते हैं , और यशोधरा से कहते हैं ----

" दीन न हो गोपे , सुनो , हीन नहीं नारी कभी ,
भूत - दया - मूर्ति वह मन से , शरीर से ,
क्षीण हुआ वन में क्षुधा से मैं विशेष जब
मुझको बचाया मातृजाति ने हीं खीर से। " २०

वे स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार करते हैं कि मुझे तप से डिगाने आई अप्सराओं पर विजय पाने में यशोधरा का ध्यान हीं सहायक हुआ ---

" आया जब मार मुझे मारने को बार - बार
अप्सरा - अनीकिनी सजाये हेम - हीर से।
तुम तो यहाँ थी , धीर ध्यान हीं तुम्हारा वहाँ
जुझा , मुझे पीछे कर , पंचशर वीर से। " २१

वे कहते हैं और अंत में तो एक अप्सरा हीं तुम्हारा रूप धर कर आ गई परन्तु उसकी भी एक न चली -----

" अंतिम अस्त्र तुम्हारा रूप धरे एक अप्सरा आई
किन्तु बराकी अपनी प्रवृत्ति पर आप काँप सकुचाई। "२२

गौतम बुद्ध यह कहकर साध्वी गोपा के त्याग को सार्थकता दे देते हैं। उनके यह शब्द नारी जीवन की महानता का स्पष्ट परिचायक है। गौतम बुद्ध भी यह मान लेते हैं बिना नारी के पुरुष सिद्धि भी प्राप्त नहीं कर सकता। अंत में गोपा का यह वचन उसके हृदय की विशालता और महानता को साकार कर देता है , वह कहती है -----

" तुम भिक्षुक बन कर आये थे , गोपा क्या देती स्वामी ?
था अनुरूप एक राहुल हीं , रहे सदा यह अनुगामी !
मेरे दुःख में भरा विश्वसुख , क्यों न भरूँ फिर मैं हामी !
बुद्धं शरणं गच्छामि , धर्मं शरणं गच्छामि , संघम शरणं गच्छामि । " २३

इस प्रकार यशोधरा के माध्यम से गुप्त जी ने नारी जीवन की गौरव - गरिमा को उजागर करने का प्रयास किया है। नारी अपने जीवन में केवल दाता है और देने वाला स्वयं हीं महान होता है। यशोधरा ने भी अपने जीवन में केवल दिया , स्वयं के लिए कुछ नहीं माँगा और अंत में अपनी एकमात्र सम्पत्ति पुत्र राहुल भी भगवान बुद्ध को दान देकर अपनी महानता का परिचय देती है और विश्वसुख में अपने दुःख को घुला - मिला देती है। सचमुच हीं यशोधरा के माध्यम से गुप्त जी ने एक अलौकिक नारी - पात्र का सृजन किया है , जो अपनी महानता में दैवीय , मातृत्व में अनमोल , पतिव्रत निभाने में अब्याख्येय और त्याग में अलौकिक है। ऐसी हीं नारियों से यह मातृभूमि धन्य है। इनके गुणों का चिंतन - मनन निश्चित हीं मानवजाति को युगों - युगों तक श्रेय का मार्ग दिखाती रहेगी।

सन्दर्भ - सूची :-

१. गुप्त , मैथिलीशरण , यशोधरा , प्रकाशन --- साहित्य सदन चिरगाँव ,
झाँसी , संस्करण --- तृतीय आवृत्ति , पृ० २१
२. वहीं , पृ० २१
३. वहीं , पृ० २२
४. वहीं , पृ० २७
५. वहीं , पृ० ३८
६. वहीं ,पृ० ३८
७. वहीं , प० ३८
८. वहीं , प० ४२
९. वहीं , पृ० ४४
१०. वहीं , प० ४६
११. वहीं , प० ४८
१२. वहीं , पृ० ५८
१३. वहीं , पृ० ५९
१४. वहीं , पृ० ७३
१५. वहीं , पृ०१६७
१६. वहीं , पृ० १६९
१७. वहीं , पृ० १८०
१८. वहीं , पृ० २०७
१९. वहीं , पृ० २०७
२०. वहीं , पृ० २११
२१. वहीं , पृ० २११
२२.वहीं , पृ० २११
२३. वहीं , पृ० २१३

डॉ0 अम्बे कुमारी
सहायक प्राचार्या
हिंदी विभाग
मगध विश्वविद्यालय , बोध गया।

गीत

शाम लेकर आंख में बैठा हूं तेरी आस है,
तु नही लेकिन तुम्हारी याद मेरे पास हैं ।

है निमंत्रण सुन हमारी भावना को गौर से,
यज्ञ पुरा ना हमरा आसना किसी और से ।
ऐ क्षितिज की स्वर्ण रेखा सामने इंगित रहो,
भीड़ में लाखो रहो पर बस मेरी चिन्हित रहो।

धर्म भी तब धर्म मानव कर रहा विश्वास है,
तु नही लेकिन तुम्हारी याद मेरे पास है।

खंडहर में बैठकर भी मैं महल को देखता,
कर के आलिंगन सहजता की पहल को देखता।
मूं चिढाते जगत को हो चन्द्रमा की ओज तुम,
सूर्य के तमतम को देते हो चुनौती रोज तुम ।

यह प्रबलता इस धरा पर तेरे अंदर खास है,
तु नही लेकिन तुम्हारी याद मेरे पास है।

झुरमुटो की कांट भी हमको चमेली सुझती,
प्यासा है कितना चकोरा स्वाती इसको बुझती।
भिंगता है मोर कैसे मोरनी के साथ में,
कैसे बिहवल दौड़ पड़ता है पपीहा रात में।

धाम बन जाता जहां होता परस्पर रास है,
तु नही लेकिन तुम्हारी याद मेरे पास है।

- **सन्नी भारद्वाज**
  भभुआ

इस अंक के चित्रकार

हिमांशी आर्या

आप एक उभरती हुई युवा चित्रकार है जो आप समसामयिक परिवेश और परिदृश्य को अपने मनोभावों संग गूँथ कर बड़ी सफाई से कैनवास पर चित्रित करती हैं। हिमांशी कॉलेज ऑफ आर्ट –दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा हैं। अपने चित्रकार पिता श्री हर्षवर्धन आर्य का चिन्तन और अपने गुरू श्री रूपचंद का रंग संयोजन इनकी कला में झलकता है और यही दोनों पक्ष इनकी कला को सार्थक और सशक्त बनाते हैं ।

मैं तब तक पास न हो पाया

इस प्यार-मोहब्बत का मुझको
अब तक विश्वास न हो पाया ।
तुम जब तक मेरे पास रही
मैं तब तक पास न हो पाया ।।

कहलेज का पहला ही दिन था
तुमसे नजरें टकराई थी
मैं तुम्हें देख मुस्काया था
तुम देख मुझे मुस्काई थी
फिर हुई बीमारी ऐसी कि
हम दोनों साथ टहलते थे
रातों को नींद न आती थी
फर्जी के सपने पलते थे
कक्षा में तुम पढ़ती थी पर
मै तुम्हें देखता रह जाता
प्रश्नों को बिना पढ़े उत्तर
सब इम्तिहान में लिख आता
आया रिजल्ट जब अपना तो
कहलेज में मैं था मैं छाया
तुमको नब्बे परसेंट मिला
और मैं टोटल नब्बे लाया
मै घर पर कूटा गया जिसे सुन
तुमने हँसी उड़ायी थी ।
फिर भी मैं तुमसे दूर रहूँ
इसका अभ्यास न हो पाया ।।

तुम सेकण्ड ईयर में पहुँच गयी
मै फर्स्ट ईयर में लटक गया
तेरी आँखों में भटक गया
सबकी आँखों में खटक गया
दूरी थोड़ी सी बढ़ी मगर
सम्बन्ध नहीं अपना टूटा
कक्षा में कभी नहीं पहुंचा पर
कहलेज कभी नहीं छूटा
तुम जब मिस कॉल मारती थी
मैं कहल पलटकर करता था
तुम हँस-हँस कर बतियाती थी
मैं रो-रो कर बिल भरता था
सब कुछ न्योछावर था तुम पर
जो कुछ घर से मैं पाता था
गोलगप्पे तुमको रोज खिला
घर पैदल-पैदल जाता था
जितने दे दिए गिफ्ट मैंने
जीवन भर नहीं पा सकोगी
मैं बहुत फटीचर था लेकिन
तुमको आभास न हो पाया ।।

तुम थर्ड ईयर में चली गयी
मै फर्स्ट ईयर में डटा रहा
तुम से कुछ लगन लगी ऐसी
सारी दुनिया से कटा रहा
हम दोनों देख रहे थे जब
दिन में ही सपने नए-नए
उड़ते-उड़ते अपने किस्से
तेरे भाई तक पहुँच गए
वो मुस्टंडा लेकर डंडा
रस्ते में इक दिन पकड़ लिया
मै बचकर नहीं भाग पाया
गैंडे ने मुझको जकड़ लिया
फिर ले डंडा ,ले डंडा
इतना धोया तेरे भाई ने
हिलना-डुलना भी मुश्किल
कर डाला था मेरा कसाई ने
फिर भी मैंने हिम्मत रखकर के
प्रेम पत्र भेजा तुमको ।
तुमने जबाव जो नहीं दिया तो
फिर कुछ खास न हो पाया ।।

तुम डिग्री लेकर फुर्र हुई
मै फर्स्ट ईयर से हिला नहीं
दिल में तो प्यार सलामत था
फिर भी तुमसे मै मिला नहीं
थी आस मुझे हरदम कि तुम
खुद मुझसे मिलने आओगी
और हाथ पकड़ कर मेरा
अपने पापा से मिलवाओगी
पर एक रोज कुरियर क्या
आया बची-खुची बर्बादी का
मैं प्रेमपत्र समझा खोला तो
मिला निमंत्रण शादी का
मै भी पहुँचा फिर शादी में
नाचा,गाया ,जमकर खाया
तुम धन्यवाद बोली जब मैंने
तुम्हें लिफाफा पकड़ाया
उस दिन से तुमको भूल गया
तो फर्स्ट ईयर में टहप किया ।
जितना होना था नाश हुआ
पर सत्यानाश न हो पाया ।।

तुम जब तक मेरे पास रही
मैं तब तक पास न हो पाया ।।

• **विनोद पाण्डेय**

प्रेम पुजारी

मत जी लाचारी में
श्रम के गहने रख
तन की अलमारी में

जो प्रेम पुजारी हैं
वे ही जीने के
सच्चे अधिकारी हैं

हम प्रेम पुजारी हैं
कंस सामने हो
तो कृष्ण मुरारी हैं

दिल भर-भर कर आया
वह था संग सदा
मैं देख नहीं पाया

क्या करना उस धन का
चौन चुरा ले जो
कुंदन जैसे मन का

हम जितना रूठेंगे
उतने मीठे पल
हाथों से छूटेंगे

आओ बच्चे हो लें
इसी बहाने से
कुछ पल सच्चे हो लें

तैरे हैं सागर में
डूब गए लेकिन
नयनों की गागर में

• **डॉ विजेंद्र पाल शर्मा**
न्यू गोपाल नगर
नुमाइश कैंप सहारनपुर

तुम मुझ से बात करते रहना

तुम मुझ से बात करते रहना , मेरे दोस्त!
क्योंकि जब तुम मुझ से बात करते हो ,
मेरा शहर मुझ से बात करता है।
वो रास्ते जिन पर मैंने
साइकिल से लेकर
मोटरकार तक चलाई है ,
जिन पर सुनहरी सुबहों को दौड़ा हूँ ,
और सुहानी शामों को चला हूँ ,
अचानक मेरे सामने बाँहें फैलाए खडे हो जाते हैं और पुछते हैं कि
इतने बरसों बाद
तुम ने इधर से गुजरना
बंद क्यों कर दिया यकायक ?
अब कब महसूस करेंगे हम तुम्हारे पैरों की छुअन ?
कब सुनाई देगी
वह पहचानी हुई पदचाप ?
मोहल्ले का नुक्कड़
जहां दोस्तों के ठहाके लगते थे
बेसब्री से
गले से लिपट जाता है
और पूछता है
क्या मेरी तरह तुम्हें भी
सूना सूना लगता है आजकल ?
वो पेड़ जो मेरे बचपन में
पौधे हुआ करते थे
जिन्होंने मेरे साथ
उम्र के कई पडाव पार किये थे ,वो कह उठते हैं : देखो,
अब कैसी ठंडी हवा देते हैं हम झूम झूम कर।
कब आओगे हमारे आगोश में?
लोग कहते हैं
चाँद तो सारी दुनिया में एक सा निकलता है, फिर पता नही
मुझे मेरे शहर का चाँद ही क्यूँ पुकारता है?
झीलें गुनगुनाती हैं, फव्वारे नाच उठते हैं,
वह जमीन
जहां हमने कंचे खेले थे,
वह आकाश जहां हमने पतंगें उडाई थीं,
वह बाग जहां से अमरूद चुराये थे,
वह मैदान जहां गिर गिर कर फिर दौडे थे,
सब अचानक एक साथ बोल उठते हैं ।
इसीलिए कहता हूँ,
तुम मुझ से बात करते रहना, मेरे दोस्त!
क्योंकि जब तुम मुझ से बात करते हो,
मेरा शहर मुझ से बात करता है।

- **हरप्रीत सिंह पुरी**
चाईना

लोग सियासत के

लहरों तक कब लेकर जाते लोग सियासत के
बालू में ही नाव चलाते लोग सियासत के

थक जाओ पर ढूँढ़ न पाओ जिसको गाँव-गली
ऐसी भी खुशहाली लाते लोग सियासत के

शब्द सभी बौने हैं इनके भाषण के आगे
भाषा का जादू दिखलाते लोग सियासत के

वादों के झूले रखते हैं अपनी बातों में
जनता को हर समय झुलाते लोग सियासत के

हरियाली ही दिखती ये हैं सावन के अंधे
होली पर दीवाली गाते लोग सियासत के

अंदर - अंदर खास वही जो बाहर से दुश्मन
रखते ऐसे रिश्ते -नाते लोग सियासत के

इन पर ही आशीष लुटाये सदियों कुर्सी मैया
जाने कितने बाप बनाते लोग सियासत के

- **प्रशान्त उपाध्याय**
३६४, शम्भू नगर
शिकोहाबाद

हिन्दी की गूँज

To advertise in Japan's first Hindi language magazine, read by the diaspora across the world contact our exclusive international Advertising and Marketing representatives. Special introductory incentives available to new advertisers

जापान की पहली हिंदी भाषा की पत्रिका के विज्ञापन के लिए, दुनिया भर में प्रवासी द्वारा पढ़ी गई कृपया हमारे विशेष अंतर्राष्ट्रीय विज्ञापन और विपणन प्रतिनिधियों से संपर्क करें। विशेष परिचय नए विज्ञापनदाताओं को उपलब्ध प्रोत्साहन

ADLINK INTERNATIONAL
(1989) MEDIA GROUP
GLOBAL PRINT, BROADCAST OUTDOOR & DIGITAL ADVERTISING
SERVING YOU SINCE 1989

16 Upper Woburn Place, London WC1H 0AF, England
www.adlinkinternational.com
Email: media@adlinkinternational.com
Contact: Mr Shamlal Puri

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION
WHRO

"Freedom means the supremacy of human rights everywhere. Our support goes to those who struggle to gain those rights or keep them. Our strength is our unity of purpose. To that high concept there can be no end save victory."

WORLD HUMAN RIGHTS ORGANIZATION

अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका